मेरा परमप्रिय

यीशु मसीह

ऐड्रिन ईबेन्स

My Beloved - Hindi

मेरा परमप्रिय

(यीशु मसीह)

द्वारा

ऐड्रिन ईबेन्स

My Beloved

(Hindi)

Draft
March 15, 2012

मेरा परमप्रिय

कॉपी राईट 2012 ऐड्रिन ईबेन्स
सामान्य संस्करण

इस पुस्तक को आज़ादी के साथ कॉपी किया और बाँटा
जा सकता है बशर्ते इसके वास्तविक लेख में कोई बदलाव न किया जाए.

Website: www.maranathamedia.in
Email: adrian@life-matters.org

इस पुस्तक में सभी स्थानों पर या तो किंग जेम्स वर्ज़न
बाइबल से संदर्भ लिये गये हैं या फिर यह बताया गया है कि
कोई विशेष संदर्भ कहाँ से लिया गया है.

इस पृथ्वी की
मेरी साथी और प्रियतम मित्र लॉरेल
के लिए समर्पित है

महापवित्रस्थान की ओर यात्रा

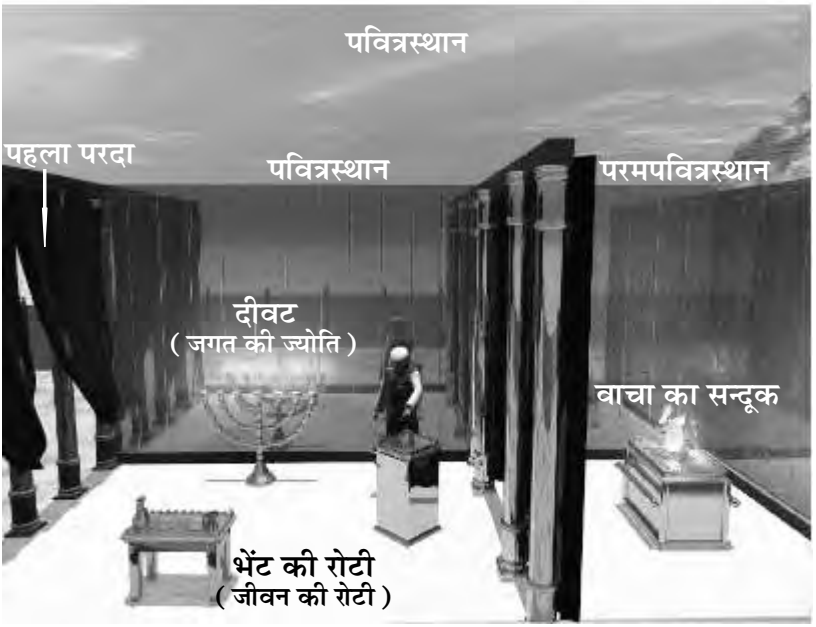

विषय सूची

प्रस्तावना i
भूमिका ix

खण्ड 1 – निमंत्रण

अध्याय 1 – दुल्हा 1
अध्याय 2 – लालच 7
अध्याय 3 – भ्रम 14
अध्याय 4 – दरवाज़ा (द्वार) 21
अध्याय 5 – वेदी 26
अन्तराल प्रथम 34
अध्याय 6 – जल की हौदी 36
अध्याय 7 – अधिक भ्रम 42

खण्ड 2 – प्रलोभन

अध्याय 8 – पहला परदा 53
अध्याय 9 – जगत की ज्योति 63
अध्याय 10 – जीवन की रोटी 69
अन्तराल द्वितीय 76

खण्ड 3 – दो विचारों के बीच में लड़खड़ाना

अध्याय 11 – शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष 78
अध्याय 12 – रूपान्तरित पहचान का नाटक 85
अध्याय 13 – दिमाग़ का खेल 90
अध्याय 14 – ताश के पत्तों का घर 98
अन्तराल तृतीय 107

खण्ड 4 – मेरे परमप्रिय द्वारा छुटकारा (उद्धार)

अध्याय 15 – एलिय्याह 109

अध्याय 16 – सब कुछ सुन्दर 117

अध्याय 17 – परिष्कृत (शुद्ध) करने की आग 125

अध्याय 18 – अपोलियन 135

अध्याय 19 – दिलासा देनेवाला 142

अन्तराल चतुर्थ 150

खण्ड 5 – महापवित्र स्थान

अध्याय 20 – अति प्राचीन के द्वारा मंगनी (सगाई) 153

अध्याय 21 – वाचा के संदूक के सामने 159

अध्याय 22 – मेरे परमप्रिय का आनन्द 166

उपसंहार 175

***

प्रस्तावना

आइये एक यात्रा का आरम्भ करें! यह पुस्तक एक यात्रा, जीवन को समझने के लिए एक यात्रा, यीशु के क़दमों के पीछे चलते हुए वाचा के पवित्र स्थान में एक भ्रमण की यात्रा है लेकिन यह यात्रा के समान्तर में एक दूसरी यात्रा भी है. यह क्रिश्चियन और उसकी धर्म यात्रा के बराबर में चलती है. इसके काँधों के ऊपर हमारे जीवन की यात्रा जिसमें हम चुनावों का सामना करते हैं, स्वीकारोक्ति की तलाश, सम्मान और प्रेम की चाहत रखते हैं, के अनुभव का बोझ भी है.

हमें हमारे प्रिय और धोख़ेबाज़ दोनों की आवाज़ें सुनाई देती हैं. ये आवाज़ें आपस में बहुत मिलती-जुलती हैं. पास्टर ईबेन्स अपने पिता और पुत्र की मधुर आवाज़ सुनते हुए उस परमप्रिय को पाने के अपने व्यक्तिगत अनुभव को वर्णन करते हैं. हम जैसे उन सब लोगों के लिए जो प्रति दिन बड़ी आसानी से इस दुनिया की झूठी शान-ओ-शौकत की ओर आकर्षित हो जाते हैं, यह आवाज़ बहुत धीमी-सी है. उसका वचन, पढ़ने से उसकी आवाज़ स्पष्ट रीति से सुनाई देती है और इस पुस्तक के वचनों में वह प्रकाश पाया जाता है जिसमें चलते हुए हम पवित्र स्थान में से होकर महापवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते हैं.

वह परमप्रिय कौन है? उसे परमप्रिय क्यों कहा जाता है? उसे किसने प्रेम किया है? इस प्रकार के महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तक में आपको मिलेंगे. वह कौन है

और वह क्या करता है वे बातें हैं जिन्हें छिपाने के लिए इस संसार के ईश्वर ने अपनी पूरी ताकत लगा दी है ताकि वह पूरे संसार को धोख़ा देने के साथ साथ यदि संभव हो तो चुने हुओं को भी धोख़ा दे सके. हमारा अनंत जीवन इस बात के ऊपर निर्भर है कि हम इन दोनों के बीच में पाये जाने वाले अन्तर को स्पष्ट रीति से पहचान सकें. आप जो कुछ पढ़नेवाले हैं इसके द्वारा यह अन्तर वास्तविक और अद्‌भुत रीति से स्पष्ट नज़र आएगा.

इसलिए, अपने परमप्रिय को खोजते हुए आनन्द, प्रेम, शान्ति की यात्रा में पहला क़दम उठाइये.

डॉ. गैरी हुलक्विस्ट
अटलाँटा, जॉर्जिया, अमेरिका

भूमिका

मैं उसके क़दमों की आहट सुनता हूँ, प्रतीक्षा में मेरे दिल की धड़कन बढ़ जाती है. मुझे उसकी आवाज़ ऐसी लगती है जैसे बहुत से जल की आवाज़ हो. उसकी आवाज़ मेरे लिए सबसे अधिक मधुर आवाज़ है. क्या उसकी आवाज़ मुझे ही पुकार रही है? ऐसी बहुमूल्य आशा को मैं अपने सीने में कैसे दबा कर रखूँ. ऐसा ख़याल मेरे दिल में कैसे पल रहा है? यह ख़याल मेरे दिल में कहाँ से आ रहा है? यह कैसे संभव हो सकता है कि पिता का प्रिय पुत्र, सामर्थी राजकुमार मेरी ओर ध्यान दे?

क्या मैं आशा करने का साहस कर सकता हूँ? क्या इससे मेरे दिमाग़ की मूर्खता प्रगट न होगी? क्या मेरे बच्चों जैसे सपनों के लिए मेरा मज़ाक नहीं उड़ाया जाएगा? यह तो सामर्थी और साहसी राजकुमार, अपने महान पिता की शक्ति और अभिमान है; यह कैसे संभव हो सकता है कि वह मुझे पुकारे?

सुनो! क्या एकान्त में आपको उसकी आवाज़ सुनाई देती है? वह मुझे फिर से पुकारता है! उसकी सबसे मधुर आवाज़, सर्दी भरी रातों की हवा को चीरती हुई, अपने प्रिय की तलाश करती है. ओह! मेरे दिल तू शंका न कर! अपने आपको उन लोगों के तीरों का शिकार मत बनाओ जो अपमान करते हैं! वह मुझे पुकार रहा है; हाँ, वह मुझे ही पुकार रहा है. मैं अपना नाम सुन सकता हूँ! निश्चय ही वह मुझे

पुकार रहा है !

ओह ! मेरा परमप्रिय, मैं यहाँ हूँ ! मेरा रोम रोम तेरे लिए रोमांचित है. मैं जो कुछ भी हूँ सब तेरा ही है. साहस के पंखों को फैला कर विश्वास ऊँचे पहाड़ों को पार करके उन घाटियों में उतरता है जो लिली के फूलों से सुगन्धित हैं.

मैं उसे देख सकता हूँ ! गूलर के पेड़ पर बने मेरे प्रेक्षा स्थल से क्या आप उसे नहीं देख सकते? मेरा परमप्रिय जो युगों युगों की चाहत है वह आता है ! ओह, अति प्राचीन, मुझे शक्ति दे; मेरा दिल आनन्द से उछल रहा है; खुशी से मैं पागल हुआ जा रहा हूँ. मेरे परमप्रिय के द्वारा मैं अपना निवेदन आप तक पहुँचाना चाहता हूँ. हे यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मेरा प्रेमी के बराबर कोई और सुन्दर नहीं है; ओह, मुझे उससे कितना अधिक प्रेम है ! यह सामर्थी राजकुमार जो कोहरे में से प्रकट होता है वह गन्धरस और लोबान की सुगन्ध से सुगन्धित है. मैं अपना सिर घुमाता हूँ और अपनी आँखों पर ज़ोर डालकर यह देखता हूँ कि क्या वास्तव में वह मुझे ही तलाश कर रहा है.

तब मैं जाग जाता हूँ. मैं कहाँ हूँ? क्या हुआ? क्या यह एक सपना था? क्या मैंने बच्चों वाले सपने देखे हैं? निश्चय ही वह मेरी ही तलाश कर रहा है ! मुझे पक्का विश्वास है. हे मेरे दिल दिलासा रख. भरोसा रख, हाँ उस पर भरोसा रख कि वह मेरी ही तलाश कर रहा है.

पहला खण्ड – निमंत्रण

1. दुल्हा

पिता अपने सिंहासन से उठता है और ज्वालामय रथ में चढ़ कर पवित्रस्थान (वाचा के तम्बू) के महापवित्र स्थान में प्रवेश करता है. सिंहासन इस स्थान में रखे जाते हैं, और अति प्राचीन सिंहासन पर विराजमान होता है. दानिय्येल नबी, इस दृश्य को दर्शन में देखते हुए यह प्रकट करता है कि उसके वस्त्र बर्फ़ के समान श्वेत हैं, और उसके बाल शुद्ध ऊन के समान हैं. सिंहासन के चारों ओर लाखों स्वर्गदूत खड़े हुए हैं; उनमें से कुछ तो कार्यवाही में शामिल हैं जबकि शेष इस शानदार दृश्य को बड़ी उत्सुक्ता से देख रहे हैं.

जब से मनुष्य के पुत्र ने पृथ्वी को छोड़ा है, तब से वह आदम के पतित बेटे और बेटियों के लिए मध्यस्थता के बहुमूल्य कार्य में संलग्न है. क्षमा, अनुग्रह, सामर्थ्य, साहस, प्रकाश, सांत्वना और प्रेरणा के लिए सन्तों की प्रार्थनाएं पिता के समक्ष पहुँचाई जाती हैं. यीशु विश्वासयोग्यता के साथ इन निवेदनों को पिता के सामने पेश करता है और इस पृथ्वी पर निवास करनेवाले अपने भाईयों/बहनों के एवज़ में बहाये गये अपने लहू की दोहाई देता है.

पिता देखता है कि उसके पुत्र का आत्मा निवेदन करनेवाले लोगों के दिलों में कार्य कर रहा है; जब वह उसके पुत्र के लिये उनके दिलों में पाये जानेवाले प्रेम और उसके पवित्र वचन के ऊपर विश्वास को देखता है कि, ''जो कोई उस पर विश्वास

करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए,'' (यूहन्ना 3:16) तब ज्योतियों का पिता करुणा करके तरस खानेवाले मसीह के आत्मा को चंगाई, अनुग्रह, प्रेम, सामर्थ्य और आनन्द के साथ उनकी सेवकाई के लिए भेज देता है.

यद्यपि छोटे सींग के शक्ति की रहस्यात्मक फिलासॉफी के कारण मसीह की पवित्र मध्यस्थता के कार्य में बाधा आई थी, फिर भी लाखों लोगों ने अपने उद्धारकर्ता और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की है. अन्धकार की सदियों के दौरान परमेश्वर के सन्त, यह जानते हुए कि परमेश्वर का पुत्र, ''उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है'' (इब्रानियों 7:25) बड़े साहस के साथ अनुग्रह से सिंहासन तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की है.

पवित्रशास्त्र के पन्नों में परमेश्वर ने अनेक ऐसे समय के प्रमाण दिये हैं जब मसीह की मध्यस्थता की सेवकाई में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है. पौलुस ने फेलिक्स को, ''आनेवाले न्याय'' के बारे में बताया (प्रेरितों के काम 24:25). यूहन्ना ने आकाश के बीच में एक संदेशवाहक को ऐसे समय के संदेश की घोषणा करते हुए देखा जिसमें कहा गया है कि, ''उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है'' (प्रकाशितवाक्य 14:6,9). उसमें स्वर्ग में परमेश्वर के मन्दिर को भी देखा जो खुला हुआ था, और उसने वाचा के संदूक को बिजली की चमक, आवाज़ों और गर्जन के बीच देखा. (प्रकाशितवाक्य 11:19)

न्याय की इस घड़ी की तैयारी के लिए, इस पृथ्वी के ऊपर स्वर्ग से एक प्रकाश चमक रहा था जो इस बात का संकेत देता था कि मसीह का आगमन निकट था. उन अनेक लोगों में जिन्होंने 1844 में पवित्रस्थान के शुद्ध होने की गणना की है, उसे बहुत स्पष्ट तरीके से समझाने वालों में विलियम मिलर का नाम प्रमुख है. दुनिया भर के मिशन केन्द्रों से इस संदेश की घोषणा की गई कि मसीह आ रहा था! मसीह तो वास्तव में आ रहा था, लेकिन अपनी दुल्हिन को लेने के लिए वह इस पृथ्वी के ऊपर नहीं आ रहा था, किन्तु वह अपने पिता के पास यह निश्चय करने के लिए आ रहा था कि दुल्हिन का हिस्सा कौन कौन लोग होने वाले हैं. विवाह का आयोजन

दूसरे आगमन के बाद नहीं होगा परन्तु उससे पहले ही होगा!

बुद्धिमान कुँवारियाँ जिन्होंने यह आवाज़, ''देखो, दुल्हा आ रहा है'' सुनी, वे इस बात को समझ गईं की दुल्हा वास्तव में कहाँ जा रहा था. और इसीलिये हम पढ़ते हैं:

> मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, **मनुष्य के संतान सा कोई आकाश के बादलों में आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा,** और उसको वे उसे समीप लाए. तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा. दानिय्येल 7:13-14.

जब यीशु को बादलों के साथ अति प्राचीन के पास पहुँचाया गया, क्रिश्चियन के लिए पवित्रीकरण की पूरी विचारधारा ही बदल गई. इस समय से पहले जो लोग मसीह के ऊपर भरोसा रखते थे, उन्हें इस बात का ज़रा भी गुमान न था कि मसीह के इस पृथ्वी पर अपनी दुल्हिन को लेने के लिए आने से पहले ही पापों की क्षमा का कार्य बन्द हो चुका होगा.

> देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु जिसे तुम ढूँढ़ते हो, **वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हाँ, वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो,** सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है. (2) **परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकेगा, और जब वह दिखाई दे तब कौन खड़ा रह सकेगा?** क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है. (3) **वह रूपे का तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा,** और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे के समान निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएँगे. (4) तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को ऐसी भाएगी, जैसी पहले के दिनों में और प्राचीनकाल में भाती थी. (5) **तब मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊँगा;** और टोन्हों, और व्यभिचारियों,

> और झूठी किरिया खानेवालों के विरुद्ध, और जो मज़दूर की मज़दूरी को दबाते, और विधवा और अनाथोंपर अन्धेर करते, और परदेशी का न्याय बिगाड़ते, और मेरा भय नहीं मानते, उन सभों के विरुद्ध मैं तुरन्त साक्षी दूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है. मलाकी 3:1–5.

जब परमेश्वर के लोगों ने भविष्यद्वाणियों का सावधानी के साथ अध्ययन किया, उन्होंने पता लगा लिया कि जो लोग उसके आगमन के दिन का सामना करेंगे उन्हें सोने और चाँदी के समान आग की भट्टी में ताया जाएगा. उन्होंने खोज लिया कि न्याय के समय परमेश्वर उनके इतना निकट आएगा कि उन्हें परमेश्वर के सामने बिना किसी मध्यस्थ के खड़ा होना पड़ेगा. (यशायाह 59:16).

महापवित्र स्थान का अनुभव परमेश्वर के लोगों को उनके उद्धारकर्ता के साथ इतने अधिक घनिष्ट संबन्ध में बाँध देगा कि उनके लिए वास्तव में ऐसा कहा जाएगा:

> हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है. 1 यूहन्ना 3:2.

जिस समय यीशु को पिता के समीप लाया गया, तो अधिकांश मसीही समाज ने पहले तो इस बात को अस्वीकार कर दिया कि मसीह आ रहा था और दूसरा यह कि न्याय प्रक्रिया के द्वारा राज्य को प्राप्त करने के लिए वह अति प्राचीन के समीप आ रहा था.

यह न्याय दुल्हे को उसकी दुल्हिन के हृदय को परखने का अवसर देता है कि वास्तव में वह उससे प्रेम करती और उसके ऊपर भरोसा करती भी है या नहीं. क्या वह उसके ऊपर इतना भरोसा रखती है कि वह उसे न्याय के सामने खड़ा करे? क्या वह उसके ऊपर इतना भरोसा करती है कि वह उसे उस दशा तक लेकर जाए जब उसे पाप के लिए बिना किसी मध्यस्थ के खड़ा होना पड़े? क्या उसकी प्रतिज्ञाएँ उसे

संभाले रहेंगी और उसे विश्रामगाह तक पहुँचाएंगी?

महापवित्र स्थान का अनुभव भावी दुल्हिन से यह अपेक्षा करता है कि वह अपने होनेवाले पति को निकटता से परखे जैसे वह उसे निकटता से परखता है. यह मनुष्य का पुत्र कौन है? वह कहाँ से आया? उसके पास कौन सी योग्यताएँ हैं? उसका अति प्राचीन अर्थात् पिता से क्या संबन्ध है? शुद्धता की ऐसी कठिन प्रक्रिया से वह उसे क्यों गुज़ारना चाहता है? क्या किसी के लिए उस व्यक्ति के साथ अति घनिष्ठता का संबन्ध बनाना संभव है जिसके उद्भव विषय में वह बहुत कम या बिल्कुल भी नहीं जानता है? क्या ऐसे व्यक्ति पर इस बात के लिए भरोसा किया जा सकता है कि वह उसे महा पवित्र स्थान के अनुभव में से होकर गुज़ारे?

ये बातों हमें इस किताब के मूल विषय तक ले कर आती हैं, जिसमें हम महा पवित्र स्थान के अनुभव के संदर्भ में मनुष्य के पुत्र के विषय में यथा संभव ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करेंगे. जबकि यह संभव है कि जीवन के इस गौरवशाली राजकुमार के विषय में पवित्रशास्त्र में पाये जानेवाले सभी संदर्भों की सूची प्रस्तुत की जा सके किन्तु महापवित्र स्थान का अनुभव हमें विवाह भोज के लिए आमंत्रित करता है और इस प्रकार एक प्रेम कहानी सुनाने के लिए मंच तैयार हो जाता है. मैं सोचता हूँ कि यदि चुनाव करने का अवसर मिले तो हम में से अधिकाँश लोग केवल तथ्यों की अपेक्षा कहानी सुनना अधिक पसन्द करेंगे.

आनेवाले अध्यायों में मैं आपके साथ अपने उस अनुभव को साझा करूँगा जो दुल्हे को जानने के द्वारा मुझे प्राप्त हुआ है और मैं उससे इतना अधिक प्रेम क्यों करता हूँ.

यीशु मसीह जीवन का मार्ग है, और हमें भजन संहिता में इस तरह से बताया गया है:

> ''तेरी गति पवित्रता (मूल में पवित्र स्थान में) की है: कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य है?'' भजन संहिता 77:13

इस प्रेम कहानी की शुरूआत पवित्रस्थान की राह से बनी होगी और द्वार से आरम्भ होकर और महापवित्र स्थान तक लेकर जाएगी. इस संदर्भ में 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस'[1] की कहानी को श्रेष्ठगीत की तर्ज के साथ मिलाकर इसकी विषयवस्तु को तैयार किया गया है.

***

[1] 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,' ..., मसीही जीवन को सही ढंग से चित्रित करता है, और इस प्रकार के आकर्षक प्रकाश में मसीह के प्रेम को प्रस्तुत करता है, कि सैकड़ों और हजारों को अपने साधन के माध्यम से परिवर्तित दिया गया है. एलेन व्हाइट, हिस्टोरिकल स्केचेज़ ऑफ फॉरेन मिशन्स ऑफ सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट, पृष्ठ 151

2. लालच

मैं स्तंभित होकर तारों भरे आकाश की ओर ताक रहा था. बादल रहित आसमान के नीचे खड़े होकर मैं आकाशगंगा गैलेक्सी की शान-ओ-शौकत को देख सकता था. मेरे सृष्टिकर्ता के विषय में सोचने के विषय में यह मेरी पहली यादों में से एक है. उस समय मैं चार वर्ष का था और वह दृश्य आज भी मेरे स्मृति पटल पर स्पष्ट रूप से अंकित है. मेरी आँखों ने कितनी अधिक सुन्दरता और महानता के दर्शन किये थे. एक बालक के रूप में मुझे सिखाया गया था कि:

> आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है. भजन संहिता 19:1
>
> आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुँह की श्वाँस से बने. भजन संहिता 33:7.

मेरी माँ मुझे यह बात बार बार याद दिलाने के लिए कोई भी अवसर खाली नहीं जाने देती थी कि यह संसार और जो कुछ इसमें है उसे परमेश्वर ने ही बनाया है. 1970 के दशक में चिंतामुक्त होकर बढ़ रहे बालक के जीवन में आनेवाली बहुत सी उत्तेजनामय गतिविधियों की बीच में ये विचार कहीं खो से गये थे. मेरे बचपन का अधिकांश भाग मैंने दोस्तों के साथ खेलने, स्कूल जाने और अपने आप में ही मस्त रहने में बिताया था. मैं अपने दिमाग़ पर ज़ोर डालकर उस क्षण को याद करने की

कोशिश करता हूँ जब मैंने अपने परमप्रिय की आवाज़ की ओर पहली बार ध्यान दिया था.

मैं ऐसी अनेक बातों की कल्पना कर सकता हूँ जो घटी होंगी, लेकिन इस प्रेम कहानी के बिन्दुओं को जोड़नेवाली कड़ियाँ तो उन्हीं बातों से बनती हैं जो मेरी याद में आज भी रची और बसी हुई हैं. कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मैं नकारात्मक अनुभवों के कारण याद करता हूँ. मुझे वह रात याद आती है जिसमें मेरे माता-पिता एक संगीत समारोह में भाग लेने के लिए गये इसलिए मुझे और मेरी बहन को अपने एक मित्र की देख-रेख में छोड़ गये. मुझे भली प्रकार से याद है कि अपने बिस्तर में पड़े हुए मैं कितना अधिक चिंतित था और अपने कान उस आवाज़ को सुनने के लिए लगाये हुए था जो मेरे माता-पिता की कार के आने से होती थी.

यद्यपि मैं यह बात उस समय नहीं समझ पाया था, लेकिन आज मैं भली प्रकार से समझ सकता हूँ कि मेरे माता-पिता ने मेरे परमप्रिय के प्रेम को दर्शाया था. मुझे भली प्रकार से याद है कि मैं अपने पिता की ताकत, विशेषरूप से जब वे मुझे अपनी बाहों में भर लेते थे तो मैं अपने आपको कितना अधिक सुरक्षित महसूस करता था. मेरी नज़र में मेरे पिता हवा की तरह दौड़ सकते, भारी बोझ उठा सकते, बड़ी शान और शक्ति से कुल्हाड़ी घुमा सकते और सब कुछ बना सकते थे. मेरा अनुभव इस सच्चाई को सही ठहराता है कि:

> बूढ़ों की शोभा उनके नाती-पोते होते हैं; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं. नीतिवचन 17:6.

मेरा परमप्रिय अपनी शक्ति, अनुग्रह और योग्यता को प्रगट करते हुए मेरे पिता को मेरे जीवन में इसलिए लाया ताकि उनकी शक्ति, कृपा और योग्यता अपने बालकों को प्रेम और सुरक्षा प्रदान कर सकें. दूसरी बात जो मुझे याद है वह मेरी माता के द्वारा हमारे लिये प्रोत्साहन, हमदर्दी और पालन-पोषण करनेवाली बातें हैं. वे हमारे लिए विशेष व्यंजन बनातीं, हमारे ज़ख़्मों पर मरहम पट्टी करतीं, जब कभी हमारे घर के

ऊपर से भंयकर तूफान गुज़रता था तो उस समय हमारे डर को दूर करने के लिए भजन संहिता के पदों को दोहराती हुई उनकी मधुर आवाज़ जैसी भली बातें मुझे आज भी याद हैं. एक बार पुन: मैं अपने परमप्रिय की आवाज़ को अपनी माता के लाड़-प्यार में भी सुन सकता था.

एक बार चीते के समान तेज़ दौड़नेवाले साँप का सामना और चमत्कारिक रूप से एक कार दुर्घटना में बच निकलना ऐसी घटनाएं थीं जिनके द्वारा मेरे परमप्रिय द्वारा मुझे सुरक्षा प्रदान करने के विषय में मैं समझ पाया. मेरी माता का बाइबल से सबसे प्रिय वचन आज भी मेरे अन्त:करण में अंकित है:

> यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किये हुए उनको बचाता है. भजन संहिता 34:7.

बाइबल की कहानियों की एक विशेष तस्वीर मुझे आज भी भली प्रकार से याद है जो मेरी माँ अक्सर मुझे सुनाया करती थी. इस तस्वीर में एक बालक को लाल रंग की एक बोझा ढोनेवाली खिलौना कार में दिखाया गया था जिसकी तरफ एक एक बड़ी कार तेज़ गति से आ रही थी और एक स्वर्गदूत अपने पंखों को फैलाकर उसकी सुरक्षा कर रहा था. मेरे परमप्रिय के द्वारा यह प्रगट करने के लिए कि वह मेरी कितनी परवाह करता है और हमारी सुरक्षा के लिए अपने स्वर्गदूत को भेजता है यह मेरे लिए सांत्वना भरा एक संदेश था.

मेरे पिता का परमेश्वर में विश्वास सादगी भरा और व्यवहारिक था. उनके मुँह से निकलेवाले दो विषय मुझे याद आ रहे हैं: परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करो और अपने पड़ोसी से प्रेम करो. दो वचन जिनके ऊपर वे विशेष बल दिया करते थे:

> सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं को का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है. सभोपदेशक 12:13.

> इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो: क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है. मत्ती 7:12.

सही काम करने और ईमानदार बनने के ऊपर उनके द्वारा दिये गये बल ने मेरे अन्दर एक कोमल विवेक का निर्माण किया. मुझे याद है जब अनेक बार मैंने व्यवस्था का उल्लंघन किया और इससे मेरे विवेक में मुझे ग्लानि का अनुभव हुआ. मुझे याद है एक बार जब मैं मात्र 6 वर्ष का था मैंने परमेश्वर के सामने प्रार्थना में आँसू बहाकर पश्चाताप किया था.आज ग्लानि को एक भयानक तकलीफ के रूप में देखा जाता है. फिर भी मेरे लिए, मैं इस कोमल विवेक के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ. इसी के द्वारा मैंने अपने परमप्रिय की प्रेम भरी, मार्गदर्शन करनेवाली और चेतावनी देनेवाली आवाज़ को सुना है.

मेरे माता-पिता ने हमारे लिये दस किताबोंवाली ''द बाईबल स्टोरी'' का एक सेट खरीदा. इनमें से कुछ कहानियों का रिकॉर्ड हमारे पास विनाइल के ऊपर भी दर्ज हैं. मुझे याद है कि मैंने मूसा और लाल समुद्र, यहोशू और यरीहो, दाऊद और गोलियत, एलिय्याह और एलीशा की कहानियाँ सुनीं थीं. आज भी हमारे घर में दस किताबों का वह सेट है और उनकी अनेक तस्वीरें हमारे बचपन की यादों को ताज़ा करती हैं. ये कहानियाँ हमारे माता-पिता की सुरक्षात्मक देखभाल के आधार पर मुझे मेरे परमप्रिय के प्रेम के विषय में बहुत कुछ सिखाती हैं. इन कहानियों के द्वारा उसने मुझे इस संसार की कहानी को समझाया, कि इसकी रचना किस प्रकार हुई, पाप इस संसार में किस तरह से आया, अच्छाई और बुराई के बीच में संघर्ष किस प्रकार से शुरू हुआ, पाप का उपचार क्या है, इस संसार का अन्त किस प्रकार से होगा और सब्बत का पालन करने के साथ साथ जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते और उनकी आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें क्या प्रतिफल मिलेगा.

मुझे याद है कि मैं सब्बत स्कूल और चर्च में भाग लेता था और चर्च के प्राथमिक

विद्यालय में अध्ययन करता था. मेरे जीवन के पहले बारह वर्ष तक के समय की ऐसी बहुत ही कम घटनाएं मुझे याद हैं जिन्होंने मेरे आत्मिक जीवन को प्रभावित किया हो. मुझे याद है कि मैं तस्वीरों में रंग भरता था, गीत गाता था, खेल खेलता था, परन्तु ऐसी कोई बात मुझे याद नहीं जिसने आत्मिक रूप से मुझे प्रभावित किया हो. जिस बात से मुझे आश्चर्य होता है वह यह है कि यद्यपि मैंने बारह वर्ष की उम्र तक यीशु के बारे में अनेक कहानियाँ सुनीं थीं लेकिन मुझे उनमें से कोई एक भी कहानी पूरी तरह से याद नहीं है. मुझे एक या दो बार की वे बातें याद हैं जब उन लोगों को उपदेश के बाद चर्च में आगे बुलाया जाता था जो अपना जीवन यीशु को समर्पित करना चाहते थे और मैं इस बात को महसूस करता था कि मुझे अनेक आँखें घूर रहीं होती थीं क्योंकि जो आगे जाते थे वे भले समझे जाते थे और जो आगे नहीं जाते थे वे बुरे लोग समझे जाते थे.

हमारी कलीसिया में युवाओं का एक संगठन होता था जिसे पाथफाइन्डर्स कहते हैं जिसमें युवा और युवतियाँ अनेक कार्यों और गतिविधियों के द्वारा अनेक स्तरों तक तरक्की करते हैं. बारह वर्ष में उम्र में मुझसे अपेक्षा की गई कि मैं अपना कोर्स पूरा करने के लिए बाईबल को पढ़ूँ. यह पहली घटना थी जब बाईबल से मेरा आमना सामना हुआ था. उत्पत्ति और गिनती की किताबों की कहानियों की अनेक यादें मेरे दिमाग़ में थीं! मुझे सुसमाचार और पुराने नियम की कुछ दूसरी कहानियाँ भी याद थीं. यद्यपि मेरा लक्ष्य तो यही था कि किसी तरह से उस कार्य को पूरा करूँ जो मुझे पाथफाइन्डर्स में दिया गया था, फिर भी एक रुचि सी थी जिसके कारण कुछ कहानियों के विषय में उत्सुक्तावश मेरे दिल में अनेक प्रश्न उठने लगे. यहाँ पर मैंने पहली बार परमेश्वर के वचन का स्वाद चखा था. मुझे दिये गये कार्य में यह भी शामिल था कि मैं भजन संहिता तेइस और मत्ती पाँच अध्याय में पाये जानेवाले धन्य वचनों को भी याद करूँ. इन वचनों ने मेरे जीवन को प्रभावित किया:

> **यहोवा** मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी. (2) वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; (3) वह मेरे जी में जी ले आता है. धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के

> निमित्त मेरी अगुवाई करता है. (4) चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तौभी हानि से डरूँगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है. (5) तू मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिए मेज़ बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मलता है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है. (6) निश्चिय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ बनी रहेंगी; और मैं **यहोवा** के धाम में सर्वदा वास करूँगा. भजन संहिता 23:1-6.

यही वह पहला पद्यांश है जिसके द्वारा मेरे परमप्रिय ने मुझे पहली बार इस बात के लिए लालायित किया कि मैं उसके विषय में चिंतन और मनन करूँ. जब मैं इन शब्दों को पढ़ता हूँ,''यहोवा मेरा चरवाहा है'', तो मेरे दिमाग़ में एक ऐसे इंसान की तस्वीर उभरती है जो बड़ी कोमलता के साथ अपनी भेड़ों को चराते हुए उनके ऊपर आनेवाले किसी भी संभव ख़तरे के प्रति बड़ा सतर्क और चौकन्ना रहता है. मैंने यीशु और चरवाहे में तुलना करने की कोशिश की. फिर मेरे दिमाग़ में सवाल उभरा, *''मुझे कुछ घटी नहीं होगी''* इस बात का क्या अर्थ है? मुझे याद है कि मेरे दिल ने उत्तर दिया कि मुझे कुछ घटी नहीं होगी क्योंकि चरवाहा मेरे लिए उस प्रत्येक वस्तु का प्रबन्ध करेगा किसकी मुझे ज़रूरत हो सकती है. मेरा परमप्रिय अपने वचन के द्वारा मुझसे बातें कर रहा था. उसकी आवाज़ मधुर और स्पष्ट थी, फिर भी मैं पढ़ते समय जल जैसी शान्ति का अनुभव कर सकता था. काश उसकी उस मधुर आवाज़ को मैं बिना किसी बाधा के सुन सकता, लेकिन एक और आवाज़ भी इसमें बाधा डाल रही थी, मुझे धोख़ा दे रही थी, मेरी चापलूसी कर रही थी, मुझे डरा रही थी और मुझे हतोत्साहित कर रही थी, जिसकी चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे.

इसी दौरान मैंने बपतिस्में की तैयारी के लिए हमारे चर्च पास्टर से बाइबल अध्ययन लेना भी शुरू कर दिया. जो कुछ मैंने सीखा वह तो मुझे याद नहीं है, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मेरे निर्णय से मेरा परमेश्वर, मेरे माता-पिता और मेरी कलीसिया सभी ख़ुश थे. अभी तक मुझे उस परमेश्वर के विषय में अधिक कुछ मालूम नहीं था जिसकी सेवा करने की मैं प्रतिज्ञा ले रहा था. मैं जानता था कि परमेश्वर है और उसके पुत्र का नाम यीशु है. मुझे पवित्र आत्मा के बारे में भी बताया गया था लेकिन

इसके कार्य के बारे में वास्तव में मुझे कुछ अधिक जानकारी नहीं थी. मैं विश्वास करता था कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा है और यदि मैं उसके पुत्र के ऊपर विश्वास करूँगा तो मुझे अनन्त जीवन मिलेगा. यह तो एक साधारण का कार्य था जिसे साधारण विश्वास के द्वारा किया जाना था.

जब मैं अपने बचपन के दिनों को याद करता हूँ तो मैं देखता हूँ कि मेरे परमप्रिय का हाथ बराबर मेरे ऊपर बना रहा. नींव के पत्थर उचित स्थान पर रखे गये जिनके माध्यम से मैं मेरे प्रभु के ज्ञान में आगे बढ़ने लगा. फिर भी इन सब सुविधाओं के बावजूद, आदम से प्राप्त हुआ मेरा पापी स्वभाव और उस वातावरण का असर जिसमें मैं बढ़ रहा था, उसने मेरे बचपन के बपतिस्में को उतना अधिक महत्वपूर्ण नहीं बनने दिया जितना कि होना चाहिए था. मेरी शिक्षा के दौरान मैं मेरे परमप्रिय के विषय में इतना ज्ञान प्राप्त नहीं कर सका जिससे मेरा बपतिस्मा अर्थपूर्ण हो जाता. इसके साथ ही वह कलीसिया जिसका मैं सदस्य था, उसमें ऐसी अनेक बातें पनप रही थीं जिनके कारण मैं अपने परमप्रिय से अधिक दूर होता चला गया और मेरा प्रभु मेरे पहुँच से दूर होता गया.

मैं भरोसा करता हूँ कि परमेश्वर इस बात से ख़ुश था कि मैंने उसके और उसके पुत्र के हाथों में अपना जीवन समर्पित कर दिया था, फिर भी मेरे बचपन की प्रतिज्ञाएं बहुत जल्दी ही उन जंगली झाड़ियों के बीच में दब गईं जिनके बीज वह दुष्ट मेरे जीवन में बोने में सफल रहा था.

***

3. भ्रम

मेरे बचपन को मेरे परमप्रिय ने मेरे माता-पिता की कोमलता भरी देखभाल, प्रकृति के साथ मेरी संगति और बाईबल की कहानियों के द्वारा सजाया और संवारा. प्रलोभन मधुर और स्पष्ट था, लेकिन फिर भी अब मैं उन बातों के बीच में जिस शान्ति, विश्राम और आशीषें प्राप्त हुईं उनकी याद करके अक्सर मुस्कराता हूँ. काश! मुझे हमेशा तक केवल मेरे परमप्रिय की आवाज़ के अलावा कोई दूसरी आवाज़ सुनने को मिलती ही नहीं.

हालाँकि मेरा परमप्रिय मेरे अति निकट ही था फिर भी उसकी आवाज़ सुनना काफी कठिन प्रतीत हो रहा था और ऐसा लग रहा था मानो वह मुझसे बहुत दूर हो. एक दूसरी ही आवाज़ बहुत क़रीब से आ रही थी. यह आवाज़ काफी तेज़ थी, यहाँ तक कि अधिक स्वीकारात्मक और कई बार तो बलपूर्वक लगती थी. इस आवाज़ का सारांश नीचे दिये गये वचनों से स्पष्ट हो सकता है:

> तू मन में कहता तो था, ''मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, (14) मैं मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा.'' यशायाह 14:13-14.

इस आवाज़ की प्रतिध्वनि प्राकृतिक रूप से मेरे अन्दर से सुनाई दे रही थी. यह

आवाज़ सलाह दे रही थी कि सच्ची ख़ुशी तो मनोरंजन और तमाशे में, टॉफी और कार्टून्स में, अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने और सराहना प्राप्त करने में था. अपने प्रारंभिक अनुभव में ही मैंने यह बात सीख ली थी कि लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने, उन्हें हंसाने या फिर तारीफ सुनने में सबसे अधिक संतुष्टि मिलती है. ऐसा लगता था मानो मैं आकाश में निहार रहा हूँ या फिर जैसे मेरे माता–पिता मुझे गले लगा रहे हैं. उन दोनों को ही अच्छा लगता था; लेकिन मैं इन दोनों आवाज़ों के बीच में भेद नहीं कर पा रहा था.

यह आवाज़ मुझे प्रलोभन दे रही थी कि मैं केक, टॉफी, आइसक्रीम और सॉफ्ट ड्रिंक्स में आनन्द प्राप्त करूँ. माता–पिता की मनाही पर मैं तब तक ज़ोर ज़ोर से चीखता था जब तक कि अनुशासन की छड़ी नहीं पड़ती थी. टेलिवीज़न मुझे सिखानेवालों में प्रमुख था. मैं ऐसे नायकों को देखना पसन्द करता था जो बड़े ख़तरनाक शत्रुओं को पराजित करते थे. मैं ऐसे परिवारों को देखता था जो हमारे समान समस्याओं के ऊपर बिना प्रार्थना के ही जयवन्त होते थे. मैंने बच्चों की ऐसी अनेक मूवीज़ देखीं जिनमें मुख्य पात्रों को परमेश्वर, बाईबल और प्रार्थना के बिना ही सफल जीवन जीते हुए दिखाया गया था.

मेरे स्कूल की शिक्षा के दौरान बिन बोले जो शिक्षा मुझे मिली थी उसकी एक हिस्सा यह भी था कि जो लोग हमारे इर्द–गिर्द हैं उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने से ख़ुशी मिलती है. इस अनलिखी व्यवस्था ने मुझे सिखाया कि यदि मैं यह चाहता हूँ कि लोग मुझे पसन्द करें, तो यह ज़रूरी था कि मैं अधिक मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई को करूँ. एक बालक के लिए पढ़ाई में कड़ी मेहनत करना अच्छा लगने वाला कार्य नहीं था; इसलिए मैंने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के दूसरे तरीके खोज निकाले ! जोकर का रोल करने से मैं दूसरे छात्रों का ध्यान मेरी ओर आकर्षित करने में सफल हो गया और अध्यापक भी केवल मेरे लिए पढ़ाना बन्द कर देते थे ! जब तक यह होता रहा तब तक यह तो बहुत ही अच्छा लगता था. लेकिन एक बार फिर अनुशासन की छड़ी ने सिखाया कि इस तरह से लोगों के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने की भी कीमत चुकानी पड़ती है.

ध्यान से सुनने पर पता चलता है कि प्रलोभित करनेवाले की आवाज़ दो दिशाओं में धकेलती है. या तो अधिकारियों और मित्रों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए जोकर बनने के लिए मुझे प्रलोभन दिया जाता था या फिर कठिन मेहनत से पढ़ाई करने के लिए जिससे मैं एक आदर्श बालक बन सकूँ. दोनो ही तरह से यह आवाज़ यही कहना चाहती थी कि ख़ुशी का मतलब ही यह है कि किसी भी तरह से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके रखा जाए.

जितना अधिक मेरे माता–पिता मुझे सुधारने का प्रयास करते थे उतना ही अधिक वह आवाज़ मुझे प्रलोभित करती थी कि मैं आदेशों का उल्लंघन करने के लिए मजाकिया रोल अदा करूँ. जितना अधिक मेरे माता–पिता मुझे स्वीकार करते थे, उतना ही अधिक मैं यह प्रयास करता था कि स्कूल में मैं अच्छे अंक प्राप्त करूँ. फिर भी बात यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाती है. मैं अपने परिवार और मित्रों के सामने यह दिखाने की कोशिश भी कर रहा था कि मैं एक भला मसीही था. इस संदर्भ में प्रलोभन में डालनेवाले और मेरे परमप्रिय की आवाज़ों काफी हद तक समानता थी.

मेरा परमप्रिय चाहता था कि मैं अपने माता–पिता की आज्ञा मानूँ, अपनी बाइबल पढ़ूँ,प्rार्थनाक रूँअ ौरअ च्छीत रहअ पनीप ढ़ाईक रूँ.ल ेकिनज बप्rलोभित करनेवाले ने देखा कि मैं अपने अधिकारियों का समर्थन और प्यार चाहता था, वह मुझे यही कार्य बिल्कुल एक अलग उद्देश्य के लिए करने के लिए प्रलोभन में डालना चाहता था. एक बालक के रूप में मुझे इतनी समझ नहीं थी कि उद्देश्य में भेद कर सकूँ. एक बालक तो केवल इतना ही समझता है कि उसकी आज्ञा दी जाती है और वह या तो पालन करने का चुनाव करता है या फिर उल्लंघन करने का. उसे इस बात की समझ नहीं होती है कि वह उस आज्ञा को पालन करने या फिर उलंघ्घन करने का चुनाव क्यों करता है.

> मैं यह कहता हूँ कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कोई भेद नहीं; (2) परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के वश में रहता है. (3) वैसे

> ही हम भी जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे. गलातियों 4:1-3.

मेरे परमप्रिय ने मेरे माता-पिता और बाइबल की कहानियों के द्वारा मुझे समझाया कि अधिकारियों का विरोध करने के द्वारा सबकी नज़रों में बने रहने की चाहत केवल ग़लत ही नहीं है परन्तु दर्दनाक भी है. ये निष्कर्ष मेरे जागरूक दिमाग़ की उपज नहीं थे परन्तु वास्तव में वे मेरे सुप्त दिमाग़ से प्रगट हुए. इसलिए मैंने लोगों के ध्यान को मेरी ओर आकर्षित करने के लिए कठिन परिश्रम, प्रयास और स्वीकार करने के योग्य उपलब्धियों के द्वारा प्राप्त करने का मार्ग चुना. इस बात का यह अर्थ नहीं है कि मैंने उस समय विरोध नहीं किया जब मुझे लगा कि अधिकारी ग़लत, पक्षपाती और परस्पर विरोधी थे. मैंने सीखा कि कठिन परिश्रम करने के बाद भी, सम्मान प्राप्त करने का मेरा लक्ष्य मेरे हाथ से फिसल सकता था.

मेरे जीवन के लगभग प्रत्येक अनुभव ने मुझे यही सूचित किया कि जीवन का उद्देश्य उपलब्धि के द्वारा लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना ही था. एक अकेली और शान्त आवाज़ ही थी जो कुछ अलग कहने का प्रयास कर रही थी. जिस समय मैंने स्वयं बाइबल पढ़ना शुरू किया उस समय मैं 12 वर्ष का हो चुका था, पापियों के लिए क्रूस पर मरने की यीशु की कहानी मुझे अच्छी लगी. मेरे जीवन में मुझे जितना अनुशासन मिला था उससे मैं जानता था कि मैं एक पापी था, फिर भी मुझे नहीं लगता था कि मैं दूसरों के बराबर बुरा था!

क्रूस की कहानी से मैं यह समझ गया था कि लोगों की उपलब्धियों को नज़र अंदाज़ करते हुए परमेश्वर लोगों को उसी रूप में स्वीकार करता है जैसे वे हैं. मैं जानता था कि मेरा परमप्रिय मुझे पुकार रहा था, लेकिन उसकी आवाज़ दूसरी आवाज़ की तुलना में बहुत ही धीमी थी जो कह रही थी कि मेरे पाप की समस्या का समाधान करने के लिए स्वर्ग ने एक बहुत बड़ी कीमत चुकाई थी और मेरे लिए मरने के लिए अपने पुत्र को भेजकर इतना अधिक दु:ख सहा था इसलिए यह ज़रूरी था कि मैं उसके प्रति आभार प्रगट करूँ. मुझे यह साबित करना था कि मेरी ख़ातिर जितना

बड़ा बलिदान दिया गया था मैं उसके योग्य था.

यह बात मुझे बहुत ही उचित लग रही थी. मानवीय अधिकारों का सामना करते हुए मैं यह समझ गया था कि मुझे सुधारने में काफी मात्रा में संसाधन खर्च हुए थे जिनका उपयोग किसी उत्तम कार्य में किया जा सकता था. जिस तरह से परीक्षा करनेवाले की आवाज़ प्राय: चिल्लाती थी:

> ''इसका क्यों सत्यानाश किया गया?'' मत्ती 26:8.

दिल की गहराईयों में छिपी हुई दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचने की चाहत के माध्यम से देखने पर, अपनी संतानों के उद्धार के लिए अपने प्रिय पुत्र को देने के द्वारा प्रकट होनेवाले पिता के प्रेम का सबसे प्रबल प्रतीक मसीह जीवन के अनुशासनों के प्रति वफादारी के द्वारा मेरी निष्ठा दिखाने के माध्यम से लोगों का अनुमोदन प्राप्त करने के एक सबल कारण में बदल गया. बारह वर्ष के एक लड़के के दिल में उठने वाली ये उत्तेजनाएं भ्रूणावस्था में थीं, फिर भी बीज बो दिया गया था जिसकी फसल आने लगी थी.

मेरे बपतिस्में के बाद परीक्षा करनेवाली की आवाज़ ने मुझे याद दिलाया कि अब मैं एक अच्छा लड़का बन गया था लेकिन फिर भी पुराने और परिचित तरीकों के द्वारा मैं लोगों का अनुमोदन प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था. जिस प्रकार उसने मेरे उद्धारकर्ता की परीक्षा की थी ठीक उसी प्रकार से वह मुझे भी उकसा रहा था कि *मैं पत्थरों को रोटियों में बदलकर* या *मंदिर के कंगूरे से कूदकर लोगों का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए कार्य करूँ.* इस तरह की मानसिकता के बीच सब्बत का अनुभव सबसे कठिन था. यह तो प्रत्येक सप्ताह सीन्नै पर्वत पर चढ़ने के समान एक कार्य था. मेरे बपतिस्में के कुछ समय बाद ही परमेश्वर को प्रसन्न करने के कार्य में मुझे निराशा सी होने लगी थी. मेरे मन में ऐसा प्रतीत नहीं होता था लेकिन यह आत्मिक बातों में घटती हुई रुचि के द्वारा देखा जा सकता था क्योंकि मैं उन प्रतिज्ञाओं को भूल कर जो मैंने पिता से की थीं, गतिविधियों के ऊपर अधिक ध्यान देने लगा था.

अब पीछे मुढ़कर देखने पर, मैं उस परीक्षा करनेवाले की चालाकी को देख सकता हूँ कि वह मुझे इस बात के लिये प्रेरित कर रहा था कि मैं लोगों का अनुमोदन और सहमति हासिल करने के उद्देश्य से परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करूँ. इसका परिणाम यह हुआ कि मेरे दिल में अनेक प्रकार के मनोरंजक कार्यों में सहभागी होने लगा. नाजुक उम्र में ही मैं दिखावा करने वालों की भीड़ मैं शामिल हो गया. केवल पाँच वर्ष में ही मैं सुअरों के साथ विचरण करने लगा था.

बचपन के मेरे प्रशिक्षण ने मुझे यह सिखाया था कि मैं ख़ुद को नुकसान पहुँचानेवाले किसी कार्य और बुराई में न फसूँ जिनमें बहुत से युवा लोग अपने आपको फंसा लेते हैं, लेकिन फिर भी भावनाएं लगभग उसी तरह की थीं. मैं अपने परमप्रिय का धन्यवादी हूँ कि मुझे किसी प्रकार की शारीरिक चोट कभी नहीं आयी जैसा कि अनेक युवाओं के जीवन में होता है.

मैं इस बात की केवल कल्पना ही कर सकता हूँ कि मुझे परीक्षा में डालनेवाले के प्रलोभनों की ओर झुकते हुए मेरे परमप्रिय को कितनी अधिक तक्लीफ हुई होगी. जो बीज मैंने बोये थे उनकी फसल काटते हुए देखकर उसे कितनी अधिक पीड़ा हुई होगी. अनेक बार मैंने ऐसा सोचा कि जो आवाज़ मेरी अगुवाई कर रही थी वह आवाज़ मेरे परमप्रिय की थी लेकिन वास्तव में वह आवाज़ तो मेरे शत्रु की थी.

यह सोचते हुए मुझे शर्म आती है कि मैं अपने परमप्रिय के विषय में इतना कम जानता था कि मैं बड़ी मुश्किल से मेरे परमप्रिय और शत्रु की आवाज़ में अन्तर कर सकता था. मेरे सहपाठियों के सामने स्कूल में एक पुरस्कार प्राप्त करते समय मेरे अन्दर इस प्रकार की भावनाएं पैदा हुई थीं जैसे मेरे पिता ने मुझे गले से लगा लिया हो. मुझे पुरस्कार मिलने के बाद तालियों की जो गड़गड़ाहट हुई वह ठीक वैसी थी जैसे मानों मैं आश्चर्यचकित होकर तारों भरे आकाश में देख रहा हूँ. बाइबल पढ़ना और चर्च जाना मेरे परमप्रिय और शत्रु दोनो को ही पसन्द था, लेकिन कारण दोनों के अलग अलग थे जिन्हें समझ पाना मेरे जैसे बालक के वश में नहीं था.

इन दोनों आवाज़ों में अन्तर करने के संघर्ष का वर्णन अगले अध्याय में किया जाएगा. मेरी प्रार्थना है कि जब आप इन बातों के ऊपर विचार करते हैं तो आप इस संघर्ष का कुछ भाग और जीवन के मार्ग की संकीर्णता को समझने में सक्षम होंगे. वह विचार कि मैं कितनी आसानी से शत्रु की आवाज़ की ओर आकर्षित होकर अपने परमप्रिय को दु:खी कर सकता था, मुझे आज भी शर्मिन्दा करता है , लेकिन मैं उसके दया भरी क्षमा और धैर्य में भरोसा रखता हूँ.

***

4. दरवाज़ा

दरवाज़ा/द्वार

भटकानेवाले मनोरंजन के माध्यम से परमेश्वर को दिये गये वचन से मुकरने के कारण मुझे चक्कर खिलानेवाले परिणाम भुगतने पड़ रहे थे. ऐसा लगता था कि मेरा ''मैरी गो राउन्ड'' अनुभव प्रत्येक चक्कर के साथ अधिक तेज़ होता जा रहा था. लोगों का ध्यान खींचना और उनका अनुमोदन प्राप्त करने की चाहत लगातार बढ़ने लगी थी, जबकि सफल होने की संभावनाएं कम ही दिख रहीं थीं.

मेरी उम्र और संस्कृति के अनेक युवा लोग जो आकर्षण का केन्द्र बनकर रहना चाहते थे उनके ऊपर एक समय में केवल कुछ एक लोग ही ध्यान दिया करते थे. परीक्षा करनेवाले शैतान के द्वारा मुझे जो सपने दिखाये गये थे वे भ्रमित करनेवाली एक फसल के रूप में दिखाई देने लगे थे. मैं प्राय: ऐसी कल्पनाएं किया करता था कि मैं महान उपलब्धियाँ हासिल कर रहा हूँ जिसकी वजह से मेरे सभी साथी, मेरे समुदाय और देश के लोग मुझे बधाई दे रहे हैं. जब मैं ऑस्ट्रेलिया में बैठे बैठे मन्त्रमुग्ध होकर बहादुरी दिखाने वाले खेलों के बाद खिलाड़ियों को उनके क्षेत्रों में गोल्ड मैडल प्राप्त करते हुए देखा करता था तब शैतान मेरे मन में यह विचार डाला

करता था कि उद्धार पाने का मार्ग यही है.

मेरी असफलता के द्वारा मैंने परमेश्वर को, अपने माता-पिता को और अपनी कलीसिया को जो काल्पनिक गुस्सा दिलाया था उससे निपटने के लिए देह और दिमाग़ के द्वारा विशेष उपलब्धियाँ हासिल करने के द्वारा जीवन का आनन्द लेने को सही ठहराने का निर्णय कर लिया. अपनी ही मर्जी से जीने को सही ठहराने की इच्छा मेरे जीवन में ठीक वैसे ही प्राकृतिक थी जैसे कि सांस लेने की क्रिया होती है. मुझे इस बात का कोई ख्याल नहीं था कि मैं कैन की राह पर चलते हुए परमेश्वर की आराधना के लिए वे वस्तुएं भेंट करना चाहता था जो मैंने अपनी ही ताकत से प्राप्त की थीं. शैतान की आवाज़ सुनने के कारण, मैं अनजाने में ही उस राह पर चल पड़ा था जो जीवन की राह से बिल्कुल विपरीत दिशा में जाती है. दूसरों की तुलना में अधिक उपलब्धियों के द्वारा अस्तित्व को क़ायम रखने की दशा में आप उन लोगों के साथ प्रेम पूर्ण संबन्ध बनाकर नहीं रख पाते हैं. मुझे पता ही नहीं चला कि सच्ची मित्रता कब मेरे हाथ से फिसल कर निकल गई क्योंकि मेरे इर्द-गिर्द पाया जानेवाला प्रत्येक व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में या तो मेरा प्रतियोगी था या फिर उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक साधन मात्र था. लेकिन फिर भी मैं चाहता था कि लोग मुझे प्रेम करें और मेरे साथ मित्रता निभाएं.

ये विरोधाभासी शक्तियाँ समय समय पर मेरे दिल में ऐसी भावनाएं पैदा करती थीं जो उस मार्ग के विपरीत थीं जिस पर मैंने अपने परमप्रिय के साथ चलने का फैसला किया था. मुझे अच्छी तरह से एक 'बॉस्केट बॉल' खेल के बारे में याद है जिसमें देखने लायक हंगामा हो गया था. खेल में मैं एक नाजुक स्थिति में प्रतियोगी खिलाड़ी से बॉल छीनने में सफल हो गया था, फिर भी उस शिक्षक ने जो खेल का 'रेफ्री'(निर्णायक)थ ाउ सनेम ुझेह ी' फॉउल'द ेि दया.उ पलब्धियाँह ासिल करनेवाली आत्मा अपने आपको सही साबित करने पर अड़ गई जिसकी वज़ह से एक पल के मेरे शिक्षक के लिए मेरे दिल में पाया जानेवाला सम्मान समाप्त हो गया और शिक्षक के ग़लत निर्णय का विरोध करते हुए मैं अपने शिक्षक के ऊपर क्रोधित हो गया. अधिकार प्राप्त लोगों के प्रति मेरे दिल से सम्मान पूरी तरह से समाप्त हो गया.

मैं क्रोध से पागल हो गया और ऐसी प्रतिक्रिया कर बैठा जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था.

मैंने अपने परमप्रिय की आवाज़ सुनी. धीरे से सवाल पूछा, ''ऐड्रिन तुम ठीक तो हो? क्या तुम वास्तव में ऐसे इंसान ही बनना चाहते हो?'' इस नाज़ुक दशा में जहाँ शैतान मेरे द्वारा विद्रोह की फसल काट रहा था, मेरे परमप्रिय ने जानना चाह कि क्या मुझे उसका स्वाद पसंद था या फिर मैं कुछ बेहतर चाहता था. गहरे अंधकार में मैं इन दोनों आवाज़ों में अन्तर महसूस कर सकता था. अंधेरी, क्रोध भरी और बदल लेने के लिए आतुर आत्मा जिसने मुझ पर नियंत्रण कर लिया था, अब इसके ठीक विपरीत मेरे परमप्रिय की आवाज़ बहुत ही मधुर और कोमल प्रतीत हो रही थी.

रेफ़्री ने मुझे प्रतियोगिता से बाहर कर दिया था. शैतान चाहता था कि मैं बदला लूँ; मेरे परमप्रिय ने सलाह दी कि मैं सावधानी के साथ अपनी प्रतिक्रिया पर चिन्तन करूँ.दोनों आवाज़ें काफी तेज़ और स्पष्ट थीं और मेरी आत्मा के ऊपर एक महान संघर्ष चल रहा था. यह पल मेरे जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण पल था– एक सनातन पल था जिसमें इस बात का निर्णय होना था कि मैं अपने शेष जीवन भर किस राह पर चलूँगा. मेरे परमप्रिय ने मुझे इस तरह से आवाज़ दी जैसे कि वह मुझ में बदलाव लाने के लिए मुझे प्रेरित कर रहा हो. मैं एक बुरा, क्रोधित और उग्र व्यक्ति नहीं बनना चाहता था; मैं तो शान्ति, आनन्द और प्रेम चाहता था. मेरे मन का भ्रम दूर होने लगा और मेरा ध्यान मेरे चुनाव के ऊपर अधिक केन्द्रित होने लगा था. आनेवाले समय में जब शैतान और कठोरता के साथ मुझे सलाहें देना ज़ारी रखा तो यह इच्छा और भी अधिक शक्तिशाली होती चली गई.

सबसे अधिक बुद्धिमान अति प्राचीन मेरी मूर्खता से क्रोधित नहीं हुआ. परमेश्वर की योजना के अनुसार मेरे जीवन में एक के बाद एक ऐसी घटनाओं की झड़ी लग गई कि मुझे सुअरों का साथ छोड़कर पिता के घर की ओर लौटने की इच्छा मेरे दिल में जाग उठी. जब मेरे मन में द्वन्द उठने लगा, उसी समय मुझे मेरे गुनाह भरे जीवन की एक झलक दिखाई गई जिसे मैं छिपा नहीं सका. जितनी अधिक शक्ति के साथ

शैतान मुझे भरमाने की कोशिश कर रहा था, उससे भी अधिक तीव्रता के साथ मेरा परमप्रिय, शैतान से आज़ादी पाने के लिए उद्धार के मार्ग पर चलने के लिए मुझे पुकार रहा था.

मेरे कार्यों और प्रयासों के द्वारा स्वीकृति प्राप्त करने की भोली सी इच्छा ने मेरा इस वास्तविकता से परिचय करवाया:

> ''पाँव से सिर तक कहीं भी कुछ अरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं जो न दबाये गये, न बाँधे गये, न तेल लगाकर नरमाए गये हैं. यशायाह 1:6.

> जैसा लिखा है: ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं. (11) कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं. (12) सब भटक गये हैं, सब के सब निकम्मे बन गये हैं; कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी नहीं.'' रोमियों 3:10-12.

मेरे परमप्रिय ने बड़ी बुद्धिमानी और दक्षता के साथ मेरे साथ व्यवहार किया. वह उस दर्द के बारे में जानता था जिसका मैं सामना करनेवाला था, फिर भी उसने वह राह चुनने दी जिसे मैं चुनना चाहता था. उसने मेरे ऊपर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाये और वह दर्द भरे मेरे रास्तों में मेरे साथ चलता रहा जो शैतान की राहों पर चलकर मैंने प्राप्त किये थे. प्रत्येक बार जब मैं गिरा तो उसने मुझे फटकार नहीं लगाई, उसने मुझे दोषी नहीं ठहराया और उसके चेहरे पर चिढ़ने के कोई चिन्ह दिखाई नहीं दिये. उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं अपने जीवन में कुछ बेहतर चाहता था; मेरे हृदय को अपनी ओर आकर्षित करने के द्वारा उसने मुझे उसके प्रेम का थोड़ा सा स्वाद चखने दिया. अब मेरे सामने द्वार खुला हुआ था. मैं उन जंजीरों को महसूस कर सकता था जो मेरी भुजाओं, पाँवों और गर्दन के चारों ओर लिपटी हुई थीं. मैं स्पष्ट रूप से देख सकता था कि मैं जिस राह पर चल रहा था कि मैं विनाश की राह पर चल रहा था, फिर मेरे परमप्रिय की ओर से मेरे हृदय की गहराईयों में आशा की एक किरण चमकने लगी.

फिर प्रचारक ने कहा, ''तुम मरने के लिए तैयार क्यों नहीं हो, जबकि जीवन इतनी अधिक बुराईयों से भरी हुई है?'' उस आदमी ने उत्तर दिया, ''क्योंकि, मैं डरता हूँ कि यह बोझ जो मेरे कंधों के ऊपर है यह मुझे कब्र की गहराईयों में ले जाएगा, और मैं तोपेत में गिर जाऊँगा. यशायाह 30:33. और महोदय, यदि मैं जेलखाने में जाने के लिए तैयार नहीं हूँ तो मैं न्याय का सामना करने के लिए भी तैयार नहीं हूँ, और वहाँ से मृत्यु तक, और इनके विचार मुझे रोने के लिए विवश करते हैं.''

फिर प्रचारक ने कहा, ''यदि तुम्हारी दशा ऐसी है तो, यहाँ पर खड़े पर क्या कर रहे हो?'' उसने उत्तर दिया, ''क्योंकि मुझे मालूम नहीं कि किधर जाऊँ?'' फिर उसने उसे एक चर्मपत्र दिये जिसमें यह लिखा हुआ था, ''आनेवाले क्रोध से भागो.'' मत्ती 3:7.

उस आदमी ने इसलिए इसे पढ़ा, और प्रचारक को बड़ी सावधानी पूर्वक देखते हुए कहा, ''मुझे किधर उड़ कर जाऊँ?'' फिर प्रचारक ने (एक बड़े मैदान की ओर उंगली उठाते हुए) कहा, ''क्या तुम विकेट-गेट (सकेत फाटक) के उस पास देख सकते हो?'' मत्ती 7:13,14. उस आदमी ने कहा, ''नहीं''. तब दूसरे ने कहा, ''क्या तुमच मकतेह ुएप़काशस ेप रेद ेखस कतेह ो?''भ जनस ंहिता 119:105; 2 पतरस 1:19. उसने कहा, ''मुझे लगता है कि मैं देख सकता हूँ.'' तब प्रचारक ने कहा, ''उस प्रकाश को अपनी आँखों में बसा लो, और सीधे वहीं जाओ, फिर तुम्हें वह गेट (द्वार) दिखाई देखा; जिसे खटखटाने के बाद, तुम्हें बताया जाएगा कि तुम्हें क्या करना है.'' *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,* पहला चरण

***

5. वेदी

अब मैं इस बात को पूरी रीति से समझ चुका था कि मुझे एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत थी. मेरे दिल के अन्दर चल रही उथल-पुथल ने मेरे अन्दर स्वर्गीय शान्ति को प्राप्त करने की चाहत पैदा कर दी. बड़ी सावधानी पूर्ण प्रबन्धन के द्वारा मेरे परमप्रिय ने मेरी सहायता की कि मैं शैतान की आवाज़ को स्पष्ट रीति से पहचान सकूँ. अब मैं विनाश के शहर से दूर भाग रहा था, फिर मैं यह नहीं जानता था कि किस ओर जाऊँ. मैं अपने दिल में यीशु की ओर खिंचता चला गया. मैं 17 वर्ष की उम्र में यह भली प्रकार से सीख चुका था कि मुझे एक प्रेमी उद्धारकर्ता की ज़रूरत थी, फिर भी मैं यह नहीं समझता था कि मुझे किस बात से उद्धारकर्ता की ज़रूरत थी.

> यीशु ने उससे कहा, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता.''यूहन्ना 14:6.

स्वतंत्रता का मार्ग यीशु के द्वारा ही था लेकिन कैसे? 12 वर्ष की उम्र में मैंने यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया था, मैं जिन बातों को पास समझता था उनके लिये पश्चाताप भी किया था और यह विश्वास करता था कि एक दिन यही यीशु

मुझे लेने के लिए इस दुनिया में फिर से आयेगा. फिर भी एक ख़ालीपन बना हुआ था. जिस तरह से मैं पाप की ग़ुलामी की गहराई को नहीं समझता था, ठीक उसी तरह से मैं मेरे उद्धार के उपहार की सराहना करने में असमर्थ था.

> ''.....पर जिसका थोड़ा क्षमा किया गया है, वह थोड़ा प्रेम करता है.'' लूका 7:47.

स्टेप्स टु क्राइस्ट किताब मेरे दिमाग़ में आई और मैंने सोचा, ''यह तो बिल्कुल वैसी कि किताब है जिस तरह की किताब की मुझे ज़रूरत है.'' अब मैं धार्मिकता का दिखावे के लिए नहीं पढ़ता था, और न ही मैं इस बात का दिखावा करता था कि मैं परमेश्वर के प्रति धन्यवादी था, जो बातें मैं पढ़ रहा था वे मेरे दिल में बैठने लगीं.

> ''प्रकृति तथा धर्मशास्त्र के वचन समान रूप से परमेश्वर के प्रेम की साक्षी दे रहे हैं. हमारा स्वर्गीय पिता, जीवन, ज्ञान तथा सच्चे आनन्द का स्रोत है.'' *स्टेप्स टु क्राइस्ट,* पृष्ठ 9

> परमेश्वर ने हमारे हृदयों को , इस पृथ्वी और स्वर्ग में पाये जानेवाली असंख्य निशानियों द्वारा अपने साथ बांध रखा है. प्राकृतिक पदार्थों द्वारा, तथा पृथ्वी के गंभीरतम और कोमलतम सम्बन्धों द्वारा, परमेश्वर ने अपने आपको प्रगट करने का प्रयास किया है. उपरोक्त पृष्ठ 10

> परमेश्वर का पुत्र स्वर्गिक पिता का स्वभाव और प्रेम प्रगट करने के लिए ही इस धरती पर आया. ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र, जो पिता की गोद में है, उसी ने उसको प्रगट किया. ''यूहन्ना 1:18. ''और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता, और कोई पिता, और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे.''उपरोक्त किताब, पृष्ठ 11

ये शब्द मेरे दिल की गहराईयों में उतर गये. जब मैंने यह जाना कि यीशु मसीह हमारे लिए पिता के स्वभाव और प्रेम को प्रगट करने के लिए आया तो मेरे दिल में ख़ुशी की एक लहर सी दौड़ गई. फिर इसका रहस्य मेरे सामने खुलता गया.

''वह चारों ओर भलाई करता और जो लोग शैतान द्वारा सताये गये थे उनको चंगा करता फिरा. पूरे के पूरे गाँव ऐसे थे, जहाँ किसी भी घर से किसी रोगी के कराहने का शब्द सुनाई नहीं देता था क्योंकि जिन गाँवों में से यीशु होकर गया था वहाँ के समस्त रोगी चंगे हो चुके थे. परमेश्वर की ओर से अभिषिक्त होने के प्रमाण उसके कार्य थे. प्रेम, करुणा और दया उसके प्रत्येक कार्य में दिखाई देते थे. दु:खी, लाचार और भटके हुए मनुष्यों को देखते ही उसका कोमल हृदय सहानुभूति से पिघल जाता था. उसने मानवीय स्वभाव को इसलिए अपनाया ताकि मनुष्यों की ज़रूरतों को पूरा कर सके. उसके पास आने में ग़रीब से ग़रीब और दीन–हीन जन ज़रा भी संकोच नहीं करता था. छोटे–छोटे बच्चे भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे. वे उसके घुटनों पर चढ़कर उसके उस तेजस्वी चेहरे को निहारते थे जिससे प्रेम भरी किरणें निकलती थीं.

यीशु ने सत्य के किसी भी अंश को न तो दबाया और न ही छिपाया, बल्कि उसे प्रेम भरे शब्दों में व्यक्त किया. जब वह लोगों से बातचीत करता था तो बड़ी समझदारी, पूरी हमदर्दी तथा सावधानी के साथ उनके प्रश्नों के उत्तर देता था. उसने कभी किसी के साथ रूखेपन का व्यवहार नहीं किया. न तो कभी कोई व्यर्थ बात कही और न ही कड़वे वचन बोलकर किसी के भावुक हृदय को अनावश्यक चोट पहुँचायी. उसने इन्सानी आदतों और कमज़ोरियों की कटु आलोचना नहीं की. उसने सत्य तो बोला परन्तु उस सत्य में प्रेम रस घोलकर पेश किया. उसने पाखण्ड, अविश्वास तथा बुराईयों की निन्दा तो की, परन्तु उनको छिड़कते समय उसके शब्दों में आँसू साफ दिखाई देते थे. वह अपने प्रिय नगर यरुशलेम के लिए रोया क्योंकि यरुशलेम न जिसका इनकार किया था वही उसके लिए मार्ग, सत्य और जीवन था.

उपरोक्त किताब पृष्ठ 11, 12.

मैंने महसूस किया कि मेरा हृदय मेरे परमप्रिय के लिए खुल गया है. वह मानवीय क़मज़ोरियों के लिए मानव की कटु आलोचना नहीं करता है, तरस से भरा हुआ है और बड़ी सावधानी एवं व्यवहार कुशलता के साथ व्यवहार करता है. छोटे बच्चे उसके घुटनों पर चढ़ जाते थे! जब मैंने अपने साथ उसकी तुलना की, मैं महसूस किया कि शर्मिन्दगी के अंधकार ने उस ज्योति पुँज को रोक दिया जो मेरी आत्मा में बह रही थी. वह तो इतना अधिक पवित्र, धर्मी और शुद्ध है और मैं कितना अधिक अपवित्र, अशुद्ध और स्वार्थी हूँ. शैतान मेरे कान में बोला, ''कोई फायदा नहीं.'' मेरे परमप्रिय ने कहा, ''आगे पढ़ते रहो, ऐड्रिन.''

> उसकी दृष्टि में प्रत्येक प्राणी बेशक़ीमती था. जबकि उसके व्यक्तित्व में सदा ही ईश्वरीय महिमा निवास करती थी, परन्तु परमेश्वर के परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए वह बड़ी करुणा के साथ नीचे झुकता था. प्रत्येक प्राणी के अन्दर उसने एक आत्मा को देखा किसका उद्धार किया जाना ज़रूरी था. उसके जीवन का मकसद लोगों को बचाना ही था. मसीह यीशु के जीवन से उसका ऐसा चरित्र प्रकट होता है और यीशु मसीह के चरित्र में ही परमेश्वर पिता के चरित्र के दर्शन होते हैं. मनुष्यों तक ईश्वरीय करुणा की धाराएं प्रभु यीशु मसीह के द्वारा ही प्रवाहित होती हैं. कोमल हृदयवाला उद्धारकर्ता यीशु ही, ''देहधारी परमेश्वर था.'' 1 तीमुथियुस 3:16. *स्टेप्स टु क्राइस्ट,* पृष्ठ 12.

क्या वास्तव में मैं उसकी दृष्टि में बहुमूल्य था? क्या यह बात सच हो सकती है?

> मुझे इसलिए न घूर कि मैं साँवली हूँ, क्योंकि मैं धूप से झुलस गई. मेरी माता के पुत्र मुझसे अप्रसन्न थे, उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन बनाया; परन्तु मैंने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की! श्रेष्ठगीत 1:6.

शैतान शायद इस बात को समझ गया था कि मेरे दिल में उम्मीद बंधने लगी थी. यदि मैं यह विश्वास करने का साहस कर सकूँ कि परमेश्वर ने मुझसे इतना अधिक प्रेम किया कि मुझे बचाने के लिए उसने अपने एकलौते पुत्र को भेजा है, तब मेरे जीवन में विनाश करनेवाला उसका कार्य काफी कठिन हो जाएगा. ''अपने पापों के बारे में सोचो, ऐड्रिन!''

> इस तरह से क्रिश्चयन निराशा के गर्त में भकटने के लिए अकेला छोड़ दिया गया, फिर भी उसने गर्त के उस किनारे तक पहुँचने के लिए संघर्ष किया जो उसके अपने घर से बहुत दूर तथा दुष्ट दरवाजे के निकट था, उसने ऐसा ही किया, लेकिन इसलिए बाहर नहीं निकल सका क्योंकि उसकी पीठ के ऊपर बहुत अधिक बोझ था: लेकिन मैंने सपने में देखा कि उसके पास एक आदमी आया जिसका नाम मदद था. *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,* स्टेज वन.

''पढ़ते रहो, ऐड्रिन,'' मेरे परमप्रिय ने मुझसे कहा.

''हाँ, मैं आगे भी पढ़ना चाहता हूँ.''

> केवल हमारे ही उद्धार के लिए यीशु ने मानव जन्म लिया, दु:ख सहा और मृत्यु को गले लगाया. ''वह दु:ख पुरुष'' बना ताकि हम लोग अनन्त आनन्द को प्राप्त करने के योग्य बन सकें. परमेश्वर पिता ने सत्य और अनुग्रह से भरपूर अपने प्रिय पुत्र को, अकथनीय महिमा वाले लोक से ऐसे लोक में भेजने की अनुमति दी जो पाप से क्षति-विक्षत था और मृत्यु की छाया तथा श्राप से कलंकित हो चुका था. परमेश्वर ने उसको जो स्वर्गदूतों द्वारा श्रृद्धा और भक्ति प्राप्त करता था, उसे अपने पास से दूर जाने की अनुमति दे दी, ताकि वह इस जगत का लान्छन , निन्दा, अवहेलना तथा घृणा और फिर मृत्यु को अपने ऊपर

> लेकर हमें पाप और शैतान की ग़ुलामी से आज़ाद कर दे. ''हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं.'' यशायाह 53:5. मसीह को जंगल में शैतान की परीक्षाओं का सामना करते हुए, गतसमनी के बाग में प्रार्थना करते हुए तथा क्रूस पर लटके हुए देखिये. परमेश्वर के निर्दोष पुत्र ने पापों का सारा बोझ अपने ऊपर उठा लिया. जो परमेश्वर के साथ था, उसने अपनी आत्मा में उस डरावनी जुदाई (दूरी) को देखा, जो जगत के पाप के कारण परमेश्वर और उसके बीच में पैदा होनेवाली थी. इसी कारण उसके मुँह से आह भरे ये शब्द निकले थे, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' मत्ती 27:46. पाप के भार और उसके भीषण दुष्परिणाम की हक़ीकत के बारे में सोचकर, कि परमेश्वर से उसका सदा का नाता टूट जाएगा, इस कारण प्रभु का हृदय चूर चूर हो गया था. उपरोक्त किताब, पृष्ठ 13.

मैं अचंभित होकर बैठ गया. इन शब्दों के साथ, ''उसे क्रूस पर देखो,'' मैं अपने मन में उस दृश्य की कल्पना करने लगा. वहाँ क्रूस के ऊपर परमेश्वर का पुत्र पिटने, कोड़े खाने और कुचले जाने के बाद लटका हुआ था, क्यों, मेरे लिए? मेरे मन में एक बड़ी हलचल होने लगी.

''मैं इस प्रेम के योग्य नहीं हूँ....''
''केवल विश्वास करो कि मसीह तुम्हारे पापों के लिए मारा गया है....''

फिर मैंने इस आयत को पढ़ा:

> परमेश्वर के निर्दोष पुत्र ने पापों का सारा बोझ अपने ऊपर उठा लिया. जो परमेश्वर के साथ था, उसने अपनी आत्मा में उस डरावनी जुदाई (दूरी) को देखा, जो जगत के पाप के कारण परमेश्वर और उसके बीच में पैदा होने वाली थी. इसी कारण उसके मुँह से आह भरे शब्द निकले थे, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' मत्ती 27:47.

उपरोक्त किताब, पृष्ठ 13.

मैं समझा नहीं सकता कि किस प्रकार से यह सब मेरे साथ हुआ, किन्तु इस बात ने मुझे प्रभावित किया कि यीशु मेरे पापों के साथ साथ पूरे संसार के पापों के लिए क्रूस पर टाँगा गया जिसके कारण वह चिल्ला उठा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' जब मैंने इस दृश्य पर दृष्टि की, मैंने यीशु के चेहरे को निहारा और उसने मेरी ओर फिर कर मुझे देखा और देखो मेरे प्रति उसके दिल में कोई गुस्सा, निराशा अथवा उदासीनता नहीं थी. मैंने तो उसकी आँखों में केवल प्रेम और स्वीकृति को ही देखा.

''मैं विश्वास करता हूँ. प्रभु मैं चाहता हूँ कि तू मेरे दिल में आकर मेरे जीवन का नियंत्रण अपने हाथों में ले ले. मुझे प्रेम करने और मुझे बचाने के लिए मैं तेरे धन्यवाद करता हूँ.....''

उसी क्षण शान्ति का एक झोंका आया और मेरी आत्मा शान्ति से भर गई. मैंने महसूस किया कि मेरी गर्दन, पैरों और हाथों में लिपटी हुई जंजीरें टूट कर गिर पड़ी हैं. फिर मेरी आँखों से एक सैलाब सा बहने लगा. मैं घुटने टेक कर बस रोता रहा, सिर्फ रोता रहा. मेरे अपराध, मेरा पाखण्ड, मेरी हठ, मेरे कटुवचन, मेरे अशुद्ध विचार– सब के सब माफ कर दिये गये. मैंने यीशु के प्रेम का स्वाद चखा.

अभी भी जब मैं यह लिखते हुए उस घटना को याद करता हूँ, मेरे हृदय में एक जोश भर जाता है और मेरी आँखे नम हा जाती हैं. मैंने शब्दों में यह बयान नहीं कर सकता कि उस पल मैं अपने उद्धारकर्ता के विषय में किस प्रकार का अनुभव किया. अलगाव ! ओ कितना बड़ा अलगाव ! वह मेरे दिल में गहराई तक उतर गया. यदि वह यह सब मेरे लिए करने को तैयार था, जिसका अर्थ यह हुआ कि उसकी नज़रों में मेरी कोई खास कीमत थी, और यदि परमेश्वर अपने पुत्र को त्यागने के लिए तैयार था– मैं रुक गया और उसके प्रति मेरे हृदय में आभार और धन्यवाद का सैलाव उमड़ने दिया. यदि वास्तव में परमेश्वर मेरी ख़ातिर अपने पुत्र को त्यागने के लिए

तैयार था, तब मैंने यह विश्वास कर सकता था कि परमेश्वर वास्तव में मुझ से प्रेम करता था.

> अब मैंने सपने में देखा, कि जिस मार्ग से क्रिश्चयन जानेवाला था, वह दोनों ओर से दीवार के द्वारा सुरक्षित किया गया था, और उस दीवार का नाम उद्धार था. यशायाह 26:1. इसलिए इस मार्ग पर बोझ से दबा हुआ क्रिश्चयन दौड़ने लगा, लेकिन उसकी राह में अनेक बाधाएं भी आ रही थीं क्योंकि उसके काँधों के ऊपर एक भारी बोझ था. दौड़ते दौड़ते वह एक स्थान पर पहुँचा जहाँ ऊपर तो एक क्रूस खड़ा था और उसके थोड़ा नीचे एक कब्र थी. इस तरह से मैंने अपने सपने में देखा कि जैसे ही क्रिश्चय क्रूस के पास पहुँचा, उसके काँधों के ऊपर लदा बोझ खुलकर उसकी पीठ से नीचे गिर गया और लुढ़कते लुढ़कते वह कब्र के मुँह तक जा पहुँचा, जहाँ जाकर वह गिर गया और फिर मुझे वह दिखाई नहीं दिया. *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,* स्टेज तीन.

***

प्रथम अंतराल

जब मैंने अपने परमप्रिय की आँखों में झाँकता हूँ, मैं भूल जाता हूँ कि मैं कहाँ हूँ.मैं महसूस करता हूँ कि मुझे स्वीकार किया गया है; मैं जानता हूँ कि वह मुझे प्रेम करता है. ओ, आदम की संतान इस सौभाग्य का बदला मैं क्या देकर चुका सकता हूँ? मैं अपनी आँखें उसके चेहर से हटाने का प्रयास करता हूँ, लेकिन प्रेम भरी उसकी दृष्टि मुझे आश्वासन देती है. यह वास्तविक है ! ऐसा वास्तव में हो रहा है और मेरे साथ हो रहा है ! वह वास्तव में मुझे प्रेम करता है और पिता को यह भाता है कि हम साथ साथ रहें. मेरा हृदय आनन्द से भर जाता है, मेरी आत्मा उसकी उपस्थिति से प्रकाशित हो जाती है और उद्धार की सुगन्ध मेरे निवास के कोने कोने में फैलने लगती है.

मेरा परमप्रिय सामर्थी है, वह निडर है. मेरा पाप लेकर वह कब्र में उतर गया. उसने अपने पिता की गोद से अलगाव बर्दाश्त किया. यह सब केवल मेरे लिए ! ओ सबसे अधिक सम्मानीय राजकुमार, तुमने मेरे हृदय को जीत लिया है. मैं तुम्हारी ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता हूँ. क्षमा किया गया हूँ? हाँ, मैं विश्वास करता हूँ कि मुझे क्षमा मिली है, और मेरे सभी पाप मुझसे दूर कर दिये गये हैं. महीन मलमल का वस्त्र मुझे दिया गया है, यह वस्त्र मेरे लिए स्वर्ग में बुना गया है और इसे बनाने में किसी भी मानव में कोई सहयोग नहीं दिया है.

प्रिय पिता, तेरा पुत्र ऐसा उपहार है जिसको समझना मनुष्य के वश की बात नहीं है, और फिर भी तूने उसे स्वेच्छा से अपने से दूर जाने से दिया. मैं समझ सकता हूँ कि तेरा पुत्र इतना अधिक सुन्दर क्यों है; जो कुछ उसका है वह सब तेरी ओर से ही मिलता है. मैं यह नहीं समझ पाता हूँ कि तूने इतना बड़ा त्याग क्यों किया, लेकिन एक छोटे बालक के समान मैं खुशी से तुझे, ''अब्बा पिता'' कहकर पुकार सकता हूँ. मैं त्यागा हुआ नहीं हूँ, मेरे पास एक पिता है और उसका पुत्र मेरा परमप्रिय है.

ओ आदम की संतान, आनन्द से मेरा हृदय धड़कता है. कौन कह सकता था कि ऊपर उठाये गये पुत्र को देखने मात्र से मेरे घर में उद्धार आजाएगा? हाँ,मैं विश्वास करता हूँ. मेरा परमप्रिय मेरा है और मैं उसका हूँ.

***

6. जल की हौदी

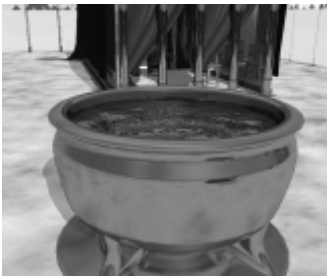

हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया. (26) कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए. इफिसियों 5:25-26.

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था. (2) यही आदि में परमेश्वर के साथ था. यूहन्ना 1:1-2.

यीशु ने जो कुछ मेरे लिए किया है, उसके प्रभाव ने मेरे जीवन का प्रत्येक पहलू पूरी तरह से बदल दिया. मैं हमेशा के लिए उसके साथ रहना चाहता था. मैं उसके बारे में सोचना पसन्द करता था, उसकी नकल करता था, और मेरे जीवन की प्रत्येक बात को उसकी अधीनता में लाता था. जब मैं कई घण्टों तक किसी दूसरे विषयों पर सोच विचार करता था, तब मुझे इस बात का एहसास होने लगता था कि उसकी उपस्थिति मुझे छोड़ कर चली गई है और मेरे विचार पुन: यीशु की ओर लौट आते थे. मेरे सब पाप क्षमा हो गये हैं इस बात का ज्ञान मुझे हफ्तों तक आत्मिक आनन्द से भर कर रखता था. पहले प्रेम का आनन्द ऐसा ही होता है.

इस आनन्द ने बाइबल को पूरी तरह से बदल दिया. मैं अपनी बाइबल को नीचे नहीं रख पाता था. अचनाक ही बाइबल को समझने के लिए मेरे अन्दर एक बहुत गहरी प्यास पैदा हो गयी. मुझे बहुत कुछ सीखना भी था और बहुत कुछ भूलना भी था. जो कुछ मैं पढ़ता था उसके द्वारा मसीह का आत्मा मुझे दोषी ठहराने लगा. मैंने देखा कि मेरे अन्दर बहुत सी बातों में बदलाव आना ज़रूरी था. परमेश्वर का वचन मुझे साफ करने और मेरे मन को बदलने लगा. अब मेरे लिए वचन एक व्यक्ति था न कि लेखों का एक संकलन मात्र. अब यीशु मसीह बड़े प्यार से व्यक्तिगत तरीके से मुझ से बात किया करता था.

मैंने एहसास किया कि मुझे अनेक आदतें बदलने की ज़रूरत थी. अब मैं वे फिल्में नहीं देख सकता था जिनमें गालियाँ देना, मार-काट और गंदगी भरी बातें होती थीं. आत्मा ने मुझे उकसाया और मैंने अनेक लोगों के पास जाकर अपने बुरे व्यवहार के लिए क्षमा माँगी. कुछ लोगों ने यह समझने की कोशिश भी की कि मैं क्यों क्षमा माँग रहा था और उन्होंने यह कहकर मुझे तसल्ली देने की कोशिश की हम सब मानव हैं. फिर भी मेरे परमप्रिय की आँखों में उसके वचन के माध्यम से ध्यान से देखने पर मैंने पाया कि उन लोगों से क्षमा माँगना अत्यंत महत्वपूर्ण था. धार्मिकता और पाप दिन और रात के समान हो गये और मेरा विवेक भी कोमल, केन्द्रित और सतर्क हो गया.

इस धुलाई के कुछ पहलू तो आज़ादी और आनन्द से भरे हुए थे जबकि कुछ अवसरों वचन जो काट पीट मेरे जीवन में करता था वह काफी कष्टदायक, सामना करने वाला और अपमानित करने वाला लगता था. जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो पाता हूँ कि मेरे परमप्रिय ने मुझ पर अपनी दया बनाये रखते हुए मेरे सभी दोषों को मेरे ऊपर प्रगट नहीं किया. यदि मेरे जीवन के सभी दोष एक साथ मेरे ऊपर प्रगट कर दिये जाते तो मैं निश्चय ही निराश हो जाता. फिर भी प्रत्येक बाधा को पार करने के लिए यीशु का प्रेम मेरे साथ बना रहा.

काश कि ऐसा होता कि मैं कह सकता, ''और उसके बाद वे खुशी खुशी रहते रहे,'' लेकिन संसार की वास्तविकता, शरीर की अभिलाषाएं और शैतान परिणाम को

काफी कठिन बना देते हैं. वर्षों तक उपलब्धियों के द्वारा पहचान बनाने के विषय में शैतान की सलाहें सुनने के कारण मेरा दिमाग़ परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों के ठीक विपरीत हो चुका था. मेरे मन परिवर्तन के बाद कुछ माह तक शैतान की आवाज़ मेरे परमप्रिय की आवाज़ की अपेक्षा काफी धीमी थी, लेकिन वह मेरे आस-पास ही था. मसीह में मुझे प्राप्त हुए प्रेम से क्रोधित होकर उसने मेरे जीवन पर नियंत्रण करने और मेरे ऊपर पुनः शासन करने की चाहत के साथ मेरे जीवन में फिर से प्रवेश करने का प्रयास किया.

मेरी जीवन शैली तथा आदतों में आए बड़े बदलाव को देखकर मेरे कुछ पुराने साथियों ने मेरे ऊपर आलोचनात्मक टिप्पणियाँ कीं. अब मैं अकेलेपन और निराशा के गर्त में गिर गया. इन बातों के पीछे मैं शैतान के हाथ को नहीं देख पाया. मैं उसकी रणनीतियों के विषय में अधिक नहीं जानता था इसलिए मैंने उसे लाभ उठाने दिया. आत्मदया के द्वार से शैतान मेरी आत्मा में प्रवेश करने में सफल हो गया. ठीक इसी दौरान मेरी जीवनशैली के कुछ बदलावों को बनाये रखने में मुझे कठिनाई होने लगी. कभी कभी तो मैं सब कुछ भूलकर पुराने आदतों में चला जाता था. और कभी कभी तो मैं निराशा में जान बूझ कर इस गर्त में गिर जाता था और अंधकार को मुझे घेरने देता था.

मैं कठिनाई की चोटी पर पहुँच चुका था. आराम तलबी, धीरज की कमी और जब तक ज़रूरी हो खुशी के साथ एकान्त में न रहने की चाहत ने शैतान को मेरे जीवन में प्रवेश करने दिया जिसकी वह तलाश में था. इसके आगे, मैं वचन में दक्ष नहीं था कि परमेश्वर के ज्ञान के विरोध में उठने वाली परीक्षाओं का सामना कर सकूँ. मसीह के आत्मा ने मुझे सिखाया कि मैं वचन को याद करूँ.

> तेरे वचन को मैंने अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ.
> भजन संहिता 119:11.

मैंने सीखा कि जब मैंने विश्वास से परमेश्वर के वचन को दोहराया तो इससे शैतान

द्वारा उठाई गईं दलीलों और भावनाओं की शक्ति जाती रही.

> क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है. इब्रानियों 4:12.

यदि मेरा परमप्रिय मुझे शैतान की सभी परीक्षाओं से बचाता रहता तो मेरे चरित्र का विकास नहीं हो पाता. मुझे अपनी गंभीर पतित अवस्था के सच्चे स्वभाव को भो समझना ज़रूरी था. शरीर के साथ इन आरंभिक संघर्षों के द्वारा मैं अपने हृदय की पतित अवस्था को समझने लगा.

> मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है? यिर्मयाह 17:9.

वचन के प्रकाश ने मेरी राहों को प्रकाशित करके यह समझने में मेरी मदद की कि मैं कहाँ पर था और यदि मैं अपने परमप्रिय की आवाज़ पर ध्यान न देता तो मेरा विनाश निश्चित था.

मुझे प्रार्थना में संघर्ष करना सिखाया गया. कभी कभी प्रार्थना करते समय मुझे ऐसा लगता था कि मेरा हृदय पत्थर का हो गया था और मेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का हो गया था. जितना अधिक मैंने प्रार्थना करने का प्रयास किया उतना ही अधिक मैं मायूस होता गया. ''ऐड्रिन, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करो,'' आवाज़ आई. ''वचन जो कुछ कहता है उस पर विश्वास करो, अविश्वासी नहीं किन्तु विश्वासी बनो.''

मेरे परमप्रिय में मुझे सिखाया कि दावा करने और प्रतिज्ञाओं के पूरे होने के बीच में पाये जाने वाले फासले के बीच में किस प्रकार से प्रतीक्षा करूँ. कई बार तो कुण्ठा के

सामने मैंने समपर्ण कर दिया, और इसके द्वारा मेरे परमप्रिय ने मुझे यह सिखाया कि मेरे हृदय कितना दुर्बल, अधीर और चंचल था. अनेक बार मैंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करना भूल कर, अपने प्रभु के सामने अपनी परेशानियों के लिए रोना रोना शुरू कर दिया, जिससे मैं पहले से भी अधिक निराश हो गया. ये कठिन दौर थे, फिर भी इनके दौरान मेरे परमप्रिय ने मेरी हिम्मत बढ़ाते हुए मुझे क्रूस पर मेरे बदले में अपनी मृत्यु और उसके और उसके पिता के साथ होनेवाली सनातन संगति की याद दिलाई. धीरे धीरे लेकिन निश्चय रूप से परमेश्वर का वचन मेरा विश्वास और मेरी ढाल बनता चला गया.

मेरे परमप्रिय प्रभु के साथ मेरे पहले दो वर्ष के अनुभव को मैं बड़े आनन्द के साथ याद करता हूँ– कि वह मेरा विश्वासयोग्य उद्धारकर्ता, शिक्षक और मित्र है. मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं यीशु के समान बनूँ.

लगभग दो वर्ष के बाद, पवित्रशास्त्र के ये वचन मुझे दिमाग़ में गूँजने लगे.

> तब पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे. प्रेरितों के काम 2:38.

यद्यपि बचपन में मुझे यीशु के बारे में काफी कुछ सिखाया गया था, मैं उसे नहीं जानता था और मेरा बपतिस्मा जबकि मेरी स्वीकृति से हुआ था फिर भी व्यक्तिगत रूप से इसका मेरे लिए अधिक महत्व नहीं था, क्योंकि मैं अपने बारे में बहुत कम जानता था और मेरे परमप्रिय के विषय में तो लगभग कुछ भी नहीं जानता था. बपतिस्मा ऐसे दो लोगों के बीच के संबन्ध पर हस्ताक्षर हैं जो एक दूसरे से प्रेम करते हैं. यीशु तो मुझे सदैव से प्रेम करता था, लेकिन मैंने उसे अब प्रेम करना आरम्भ किया था इसलिए मित्रता के इस बंधन के ऊपर बपतिस्मे की मोहर लगना बहुत ज़रूरी था.

जब मैं बपतिस्में के लिए पानी में उतरा, मेरा हृदय यीशु के ऊपर केन्द्रित था. वह मेरे जीवन का गीत और आनन्द था, और उसे अपना प्रभु मानते हुए अपना जीवन उसके हाथों में सौंपना आनन्दमय उत्सव के समान था. मेरी आत्मा को ढकनेवाला पानी इस बात का प्रतीक था कि उसके वचन से मेरे जीवन के सब पाप धुल गये थे. जो कार्य आरम्भ हुआ था उसके साथ यह प्रतिज्ञा जुड़ी थी कि वह पूरा भी हो जाएगा.

***

7. अधिक भ्रम

वह व्यक्ति दुचित्ता है और अपनी सारी बातों में चंचल है. याकूब 1:8.

यीशु के साथ मेरे पहले प्रेम के अनुभव के बाद लगभग दस वर्ष बाद, मैं भ्रम में फँस गया. मेरा मसीही जीवन इस प्रकार से चक्करदार हो गया जैसे कि इस्राएली जंगल में भटक रहे थे. यदि कोई यह कह देता कि मैं दुचित्ता व्यक्ति था, तो मुझे बुरा लगता और मैं क्रोधित हो जाता था. मैं इस बात के लिए यीशु से प्रेम करता था कि वह मेरे लिये क्रूस पर मरा था और मैं विश्वासयोग्यता से अपने पिता की आज्ञाओं का पालन करना चाहता था मैं परिस्थियों पर जय पाने के लिए अनुग्रह और शक्ति के लिए प्रार्थना कर रहा था. मैं कई बार सफल हो जाता था लेकिन निरंतर जय पाने से चूक जाता था.

मैं वचन के ज्ञान में बढ़ता गया और अपने परिवार तथा मित्रों के साथ अनेक सब्बत के दिनों में आत्मिक संगति का आनन्द लिया. फिर भी एक ख़ालीपन रह गया था. कोई बात ऐसी थी जो मुझे बेचैन कर रही थी लेकिन मैं उसे खोज नहीं पा रहा था. काफी समय तक तो मैं पूरी तरह से यह भी नहीं समझ पाया कि मेरे अन्दर एक ख़ालीपन है.

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप

> में अंश अंश करके बदलते जाते हैं. 2 कुरिन्थियों 3:18.

एक बात मुझसे छिपी रही कि इन वर्षों में मैं जिस यीशु को देखता रहा वह दो अलग अलग संसारों को संयोजन है. एक तरफ तो मैंने यीशु के प्रेमी, देखभाल करनेवाले और तरस खानेवाले स्वभाव को देखा जो पिता के अद्भुत प्रेम को दिखाता है. मैंने उस कशमकश को भी समझने का प्रयास किया कि किस प्रकार से पिता ने अपने प्रिय पुत्र को स्वयं से दूर करना सहन किया. मैंने यीशु के प्रार्थनामय जीवन तथा हमारी एवज़ में मध्यस्थ की प्रार्थना करने वाले जीवन पर मनन किया जिसने मेरे दिल को छू लिया, मेरे दिल पिघल गया और मैंने मसीही जीवन जीने का फैसला कर लिया. फिर भी यीशु के व्यक्तित्व के एक पहलू को समझना अभी भी बाक़ी था, मैं समझता था कि इसका वर्णन बाइबल में पाया जाता होगा और मेरे मसीही जीवन के लिए यही आधार बन गया. थोड़ा समय लेकर यहाँ पर मुझे यह बताने दीजिये कि मेरे मन में क्या चल रहा था. अनेक बातों ने मिलकर कुछ ऐसा किया कि मैंने रोने लगा:

> रात के समय मैं अपने पलंग पर अपने प्राणप्रिय को ढूँढ़ती रही; मैं उसे ढूँढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया. श्रेष्ठगीत 3:1.

मेरे पूरे बचपन भर शैतान की आवाज़ मुझे यही सलाह देती रही कि सम्मान पाने के लिए मैं आत्म निर्भरता और कठोर परिश्रम का सहारा लूँ. भले इंसान की छवि को मैंने अपने पतित स्वभाव के चश्मे के द्वारा देखा था जिसमें शैतान की सलाह शामिल थी कि ईमानदारी, सच्चाई और वफादारी के द्वारा सम्मान प्राप्त किया जा सकता था. आपको याद होगा कि मैंने यह कहा था कि शैतान ने मुझे उन्हीं बातों को करने की सलाह दी जिनकी सलाह मेरा परमप्रिय देता है लेकिन उसका उद्देश्य बिल्कुल अलग था.

चूँकि चरित्र निर्माण के इन वर्षों में शैतान की आवाज़ मेरे परमप्रिय की आवाज़ की आवाज़ से भी तेज़ सुनाई देती रही इसलिए मेरे मन में बनी हुई एक आदर्श पुरुष की

तस्वीर एक ऐसे इंसान की थी कि वह भले कार्य करे और दूसरों के सामने अच्छा चरित्र पेश करे. इस प्रकार के भले जीवन के प्रदर्शन के द्वारा मैं लोगों की सराहना और तारीफ़ प्राप्त करने के साथ साथ समाज में भी स्वीकृति प्राप्त करूँगा.

मैं इस बात से अनजान था कि जिस प्रकार के आदर्श पुरुष की तस्वीर मैंने अपने मन में बना रखी थी वह वास्तव में एक मूर्ति थी, जिसे अनजाने में ही मैंने यीशु की तस्वीर के साथ शामिल कर लिया था. मैंने यीशु के जीवन को देखा कि वह एक आदर्श पुरुष के सभी गुणों से संपन्न था, जिसने दया और धर्म के कार्यों द्वारा करोड़ों लोगों की सराहना और आराधना प्राप्त की थी. यीशु वास्तव में एक ऐसा मनुष्य था जिसके पद चिन्हों पर मैं चल सकता था और उसके समान बनने की चाहत रखता था. एक बार फिर शैतान ने सही कार्य ग़लत उद्देश्य से करने के लिए उभारा.

सबसे कठिन भाग तो यह था कि बाइबल का वास्तविक यीशु मेरे मन में बसे इस झूठे यीशु के साथ इस तरह से घुल-मिल गया था कि मैं दोनों में अन्तर नहीं कर सकता था.

> अत: अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे. यद्यपि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे. 2 कुरिन्थियों 5:16.

मेरी समझ में यह कभी नहीं आया कि मैं यीशु को सांसारिक दृष्टिकोण से देख सकूँ. वो बात जिसने इस पूरे अनुभव को कठिन बना दिया था वो यह सच्चाई थी. मसीहत के आरम्भ से ही यीशु मसीह को ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा गया है कि उसके पास स्वर्ग से ही सामर्थ, योग्यता और वरदान प्राप्त हैं. इसी तरह से मैंने भी अपने मन में आदर्श पुरुष की एक ऐसी तस्वीर बनाई हुई थी जो भले कार्य करने के द्वारा सराहना प्राप्त करता है, मसीह अगुवे भी प्रक्रिया के अधीन रहे हैं. यह नया यीशु तीन व्यक्ति काए कभ ागथ ा,ए कप रमेश्वर,ि त्रएक.त ीन० यक्तियोंक ाए कप रमेश्वरम ें समाहित होने की जटिलता समझ में न आने के कारण मैंने यह समझने का प्रयास

करना ही छोड़ दिया कि वे आपस में एक दूसरे के साथ किस प्रकार से संबन्ध रखते हैं. मैंने इसे एक रहस्य के रूप में स्वीकार कर लिया.

यदि आप सावधानी से परमेश्वर के बारे में विभिन्न कलीसियाओं द्वारा किये गये वर्णन को पढ़ें तो पाएंगे कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी होने के कारण ही आरधना का हक़दार है. मेरे बचपन का देवता यही था! जब मैंने इस देवता के बारे में सोचा, तो यह दृष्टि सही लग रहा था. इस दृष्टिकोण ने मेरे जीवन में यह किया कि मैंने अपने बचपन की धारणा के इस व्यक्ति को अपने जीवन का देवता बना लिया.

जो बात मेरी समझ में कभी नहीं आयी कि यह देवता जिसकी सेवा करने का मैंने वचन दिया था वह वास्तव में एक भले व्यक्ति का जो महिमा, आदर और सम्मान का हक़दार हो, मेरे बचपन की चाहत का एक सांकेतिक प्रकटीकरण था.

जैसा कि मैंने पहले कहा था, वह बात जिसके कारण इस देवता को समझना काफी कठिन हो गया था वह यह है मैंने बाइबल के इस सच्चे यीशु को इस देवता के साथ मिला दिया था. दो वर्ष के बाद मेरे बपतिस्मे के समय मेरे मन परिवर्तन ने परमेश्वर के इन दो रूपों को आपस में मिलना साबित कर दिया.

मेरे बपतिस्मे की प्रतिज्ञा ने पूछा:

> क्या तुम परमेश्वर पिता, उसके पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा में विश्वास रखते हो?

लेकिन कलीसिया का कथन यह दिखाता था:

> एक परमेश्वर: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है, और ये तीनों सनातन काल से साथ साथ रहनेवाले व्यक्ति हैं. परमेश्वर अविनाशी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, सबसे बड़ा और सदैव बना रहनेवाला

> परमेश्वर है. वह अनन्त परमेश्वर है और वह मानव प्राणी के समझ से परे है.

बहुत से लोग इन दो कथनों को पढ़ेंगे और कोई अन्तर नहीं समझ पायेंगे. बचपन में मैं भी कोई अन्तर नहीं समझ पाया था. मैं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की परिभाषा को समझ सकता था. ये परिभाषाएं बाइबल में पाई जाती हैं और मैंने इन तीनों को कार्य करते हुए देखा था, इसलिये मैंने मान लिया कि यह कथन सही था.

मेरे बपतिस्मे की प्रतिज्ञा साधारण रीति से इन तीन हस्तियों में इस विश्वास के साथ प्रकट करती है जहाँ पिता और पुत्र के बीच के संबंध को साधारण तरीके से *उसके* के रूप में दिखाती है. यह छोटा शब्द उसके में एक बड़ा अन्तर पाया जाता है. *उसके* शब्द ने ही *पिता* और *पुत्र* को वास्तविक अर्थ दिया है. यीशु उसका *पुत्र* था; पिता का पुत्र. मुख्य बात यह है कि पिता और *उसके* पुत्र के बीच के सम्बन्ध को तोड़ दिया गया था इसी बात ने मेरे दिल को तोड़ दिया. ये वे शब्द हैं जो मेरे दिल में चुभ गये.

> परमेश्वर के निर्दोष पुत्र ने पापों का सारा बोझ अपने ऊपर उठा लिया. जो परमेश्वर के साथ था, उसने अपनी आत्मा में उस डरावनी जुदाई (दूरी) को देखा, जो जगत के पाप के कारण परमेश्वर और उसके बीच में पैदा होनेवाली थी. इसी कारण उसके मुँह से आह भरे ये शब्द निकले थे, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' मत्ती 26:46. *टेप्स टु क्राइस्ट,* पृष्ठ 13.

इन शब्दों में मैंने सच्चाई को पहचान लिया:

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए. यूहन्ना 3:16.
>
> जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने

> अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ. (10) प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा. 1 यूहन्ना 4:9-10.

मेरे बपतिस्मे के 12 वर्ष बाद तक मैं इस बात को नहीं समझ पाया कि दो व्यक्तियों के बीच के सम्बन्ध को पिता और पुत्र कहा गया है और इसी में वह चाबी पायी जाती है जिसने मेरे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया. अपने पुत्र को देना पिता का कार्य था न कि पुत्र अपने आप को देता है, पुत्र अपनी सामर्थ्य को प्रगट नहीं करता है, आत्म त्याग का चरित्र दिखाता है, और न ही वह अपने बड़े बड़े कार्यों को दिखाता है.पिता ने अपने पुत्र को भेजा कि वह पिता के प्रेमी चरित्र को हमारे सामने पेश करे, और अपने पुत्र को देने के कार्य के द्वारा हम पिता के हृदय से निकलने वाला सबसे अधिक आकर्षक, सुन्दर, कोमल और साहस भरा प्रेम प्रगट होता है.

जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं इस बात को समझ नहीं पाया था कि तीन व्यक्ति में एक एक त्रिएक परमेश्वर को स्वीकार करने के द्वारा मैं पिता और पुत्र के बीच में पाए जाने वाले संबन्ध के विषय में भ्रमित हो गया था. यह समस्या इस बात से और भी अधिक जटिल हो गयी कि यदि मैं यीशु से प्रेम करता हूँ तो मैं यीशु को पिता के बराबर का दर्जा देना पड़ेगा. बचपन से मैंने समानता के विषय में जो सीखा था वह यह था कि मैं संख्यात्मक रूप से उनकी तुलना करूँ. मैं इस बात की जाँच करता था कि मेरी बहन के प्याले में पड़ी हुई शिंकजी की मात्रा मेरे प्याले में पड़ी हुई शिंकजी से अधिक न हो. यदि मेरी बहन को पाँच टॉफी या कैंण्डी मिल गईं जबकि मुझे केवल चार मिलीं तो मैं बहुत देर तक रोता और चिल्लाया करता था. इसी तरह से वस्तुओं को बराबर की मात्रा में रखा जाता था. इस तरह से यह तय होना था कि यदि पिता और पुत्र दोनों एक बराबर हैं तो उन दोनों के पास एक समान मात्रा में सामर्थ्य, ज्ञान और उसी तरह का अस्तित्व भी होना चाहिए. यदि किसी को पिता से कुछ प्राप्त होता है, तो मात्रा की संख्याएं अलग अलग होंगी; ऐसा होगा जैसे कि एक के पास 100% होगी शिंकजी होगी और दूसरे के पास 50% शिंकजी और 50% पानी होगा.

इस प्रकार के तर्क मेरे मन की गहराईयों में चल रहे थे; यह तो प्राकृतिक, तर्क संगत था इसलिए उचित भी था. मैं नहीं जानता था कि परमेश्वर के विषय में इस प्रकार से सोचने पर वास्तव में *पिता* और *पुत्र* और उन दोनों के बीच में पाया जानेवाले सम्बन्ध अर्थहीन हो जाता है.

जब मैंने बाइबल से यीशु के पुत्र होने के विषय में जानकारी एकत्र की, मैं पाया कि यीशु अपने पिता के ऊपर अटूट भरोसा रखता और पूरी तरह से पिता की इच्छा के सामने समर्पित था. मैंने देखा कि वह किस तरह से एक तूफान के बीच में एक नाव में सो सकता था; पूरी शान्ति के साथ वह उस भीड़ का सामना कर सकता था जो उसकी मृत्यु की माँग कर रही थी; वह बिना खाना और पानी के 40 दिन तक प्रतीक्षा कर सकता था क्योंकि उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वह अपने पिता के ऊपर भरोसा रखता था. जब भरोसे और समर्पण के ये कार्य ईश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति उस यीशु के ऊपर रखे गये जिसके पास पिता के समान सामर्थ्य थी, तो मेरा मन विचलित हो गया. इस व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के लिए पिता के प्रति किसी भी प्रकार से धन्यवादी होने की ज़रूरत नहीं थी, बजाए इसके वह ''पिता'' कहलाने वाले इस व्यक्ति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा था, क्योंकि उम्र में, शक्ति में और ज्ञान में वह भी पिता के समान ही था. प्रेम से बराबर, और वास्तव में वे पूरी तरह से बराबर ही थे. मेरे दिल लिए जो एक समस्या यह थी कि समानता की इस गणना में नुकसानदाय तत्व था जिसने पिता और पुत्र शब्दों के अर्थ को ही समाप्त कर दिया जिसकी वजह से मेरे मन में पुत्रत्व का जो अर्थ था वह पूरी तरह से समाप्त हो गया. यदि यीशु मसीह अपने दायरे में वास्तव में पुत्र नहीं था तो मैं भी अपने दायरे में पुत्र नहीं हो सकता था. कैसे हो सकता था? देखने के द्वारा ही हम बदलते हैं. यदि मेरे मन में यीशु के पुत्र होने के विषय में संदेह था और केवल उसकी स्थिति के कारण पुत्र के रूप में स्वीकार किया गया था न कि पुत्र होने के कारण, फिर तो मुझे भी पुत्र होने पर संदेह हो सकता है और मैं भी अपने पद और कलीसिया में कार्य के आधार पर स्वीकार किये जाने की अपेक्षा कर सकता था.

इसलिए मैंने उसे यीशु की आराधना को उस यीशु के साथ मिला दिया जो स्वर्ग में पिता के किसी सहायता के बिना सर्वाधिकार सम्पन्न है परन्तु जो इस पृथ्वी के ऊपर अधीनता के साथ रहते हुए पिता के ऊपर भरोसा रखते उसकी आज्ञाओं का पालन करता है.इस ''स्वर्गीय यीशु'' ने ''पृथ्वी वासी'' यीशु के कार्य करने की विधि को प्रगट किया है. सर्वाधिकार सम्पन्न यह ''स्वर्गीय यीशु'' ने मुझे इस पृथ्वी वासी यीशु के स्वर्गीय रूप की नकल करते हुए उसके पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया. मुझे इस बात का एहसास ही नहीं हुआ कि मेरे पापी स्वभाव ने स्वर्गीय पवित्र स्थान में एक ऐसे यीशु की मूर्ति की स्थापना कर दी जिसके अन्दर वही गुण हैं जो कि छोटी सींग में हैं और यह स्वर्गीय यीशु के गुणों के विपरीत है.

आइये मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ जो यह बताएंगे कि यह किस प्रकार से वास्तविक जीवन कार्य करता है. अनेक बार जब मैं बैठ कर उपदेश सुन रहा होता था, मेरा परमप्रिय मुझसे कहता था कि मैं इन शब्दों को अपने हृदय में ग्रहण करूँ. लेकिन उसी समय शैतान मुझे इस बात के प्रेरित करता था कि मैं प्रचारक के ऊपर ध्यान दूँ कि वह किस प्रकार से प्रचार कर रहा था. यदि उपदेश अच्छी तरह से पेश किया जाता था तो मैं कल्पना करने लगता था कि मैं इसी उपदेश को पेश करूँगा और श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं के बारे में कल्पना करने लगता. यदि प्रचारक बढ़िया रीति से प्रचार नहीं कर पाता तो शैतान मुझसे कहता कि मैं उससे भी बढ़िया तरीके से प्रचार कर सकता था. जब मैं कोई उपदेश प्रचार करता था और श्रोता लोग सत्य के द्वारा आशीषित होते तो मेरा परमप्रिय आनन्द करने के लिए मुझे उत्साहित करता था, लेकिन शैतान मेरे कान में धीरे से कहता था कि चर्च के दरवाज़े पर लोगों से हाथ मिलाते समय मैं उनसे तारीफ़ की उम्मीद रखूँ.

जब मैं किसी बाइबल अध्ययन में बैठता था, तो मेरा परमप्रिय मुझे उत्साहित करता कि मैं वचन के ऊपर गंभीरता से विचार करूँ, जबकि शैतान मुझे यह दिखाने के लिए उत्साहित करता था कि मैं कितनी भली प्रकार से बाइबल के वचनों को जानता था और उस विषय पर कितने अधिक पद ज़बानी बोल सकता था. जब मैं प्रार्थना के घेरे में होता था, मेरा परमप्रिय मुझे इस बात के लिए आनन्दित होने के लिए

उत्साहित करता था कि मैं प्रार्थना के सौभाग्य के द्वारा पिता के अनुग्रह के सिंहासन तक पहुँच सकता था, लेकिन शैतान मेरे मन में ऐसे विचारों को लाता था कि मुझसे पहले प्रार्थना करने वाला व्यक्ति कितनी लम्बी प्रार्थना करता है जबकि उसके पास कहने के लिए कुछ खास नहीं है. इससे मेरा विवेक विचलित हो जाता था और मेरे मन में इन दो विचारों को लेकर एक युद्ध शुरू हो जाता था जिसके कारण मैं पूरी तरह से भूल जाता था कि मेरे आस पास के लोग कौन सी बातों के लिए प्रार्थनाएं कर रहे थे.

मैंने पढ़ा कि यीशु ने पूरी रात प्रार्थना करने में बिताई और इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए कि वह अपने पिता से कितना अधिक प्रेम करता था, मैं इस तथ्य के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता था कि उसने पूरी रात प्रार्थना में बिताई थी, और मैंने भी ऐसा ही करने का प्रयास किया, किन्तु मेरे परमप्रिय ने मुझे क़ायल किया कि इस उद्देश्य से प्रार्थना में पूरी रात बिताना पूरी रीति से ग़लत था. जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि मेरे मन में यह संघर्ष लगभग 10 वर्ष तक चलता रहा. जब मेरे उद्धारकर्ता ने मेरे सामने आहार और जीवन पद्धित के विषय पेश किये, तो शैतान ने मुझे उकसाया कि उचित आहार, पहनावा और मनोरंजन के ऊपर ध्यान केन्द्रित करूँ. दूसरों के ग़लत व्यवहार के लिए उनकी आलोचना करने से यह प्रकट हो जाता था कि मैं ग़लत आवाज़ को सुनकर प्रतिक्रिया कर रहा था. उचित मसीही व्यवहार फल बनने के बजाये मेरे अनुभव की जड़ बनता जा रहा था. ऐसा इसलिए हो रहा था क्योंकि मेरे बचपन का देवता मेरे हृदय में पूरे ब्रह्माण्ड का परमेश्वर बनकर बैठ गया था.

प्रतिदिन मेरे हृदय में चल रहे संघर्ष ने मेरे जीवन में काफी दु:ख घोल दिया. अनेक अद्भुत चमत्कार करनेवाला यह यीशु मेरी पकड़ से दूर और अधिक दूर होता चला जा रहा था. मेरे पहले प्रेम का आनन्द मुझ से छीना जा चुका था. मैंने अपने प्रिय को व्यर्थ में तलाश किया, और कहीं नहीं पाया. मेरा जीवन चर्च की गतिविधियों और अध्ययन से इस हद तक से भरा हुआ था,कि मेरे पास मेरे उद्धारकर्ता से बातचीत करने और बिताने के लिए बहुत कम समय था. और यदि मेरे पास समय होता भी था

तो मुझे लगता था कि मैं घर से बाहर निकल कर वे काम करूँ जो यीशु करता था और उसी के समान मदद करनेवाला इंसान बनूँ. यदि मैं अकेले में यीशु के साथ समय बिताता तो शायद कोई भी परवाह नहीं करेगा, तब तक तो कोई नहीं जब तक मुझे ऐसे लोग न मिलें जो प्रभु के साथ अकेले में समय बिताने को भला काम समझते हैं.

परमेश्वर को, उसके वचन को और जो मेरे आसपास थे उनसे प्रेम करनेवाला एक मसीही बनने की मेरी चाहत और इसके ठीक विपरीत इन बातों को करने के द्वारा लोगों की सराहना प्राप्त करने को लेकर मेरे अन्दर लगातार एक संघर्ष चलता रहता था.अपने मन में मैं जानता था कि भले कामों का श्रेय लेना ग़लत था, लेकिन मैं तो कल्पना किया करता था कि शरीर के कामों के ऊपर जयवन्त होने के लिए मसीही अनुभव का यह एक हिस्सा था. उपदेश का प्रचार करने के बाद मैं ऐसी टिप्पणियों से बचने का प्रयास किया करता था, लेकिन मैंने महसूस किया कि जब मैं कहता था,''मेरा धन्यवाद मत कीजिये, प्रभु का धन्यवाद कीजिए'' तो मेरा ध्यान अपने ऊपर होता था. मुझे ''मुझको'' ध्यानाकर्षण का केन्द्र नहीं बनाना था. साधारण शब्दों में मैं यह कह सकता था, ''प्रभु का धन्यवाद कीजिए'' लेकिन ''मेरा धन्यवाद मत कीजिए'' कहना इस बात को दिखाता था कि अच्छा उपदेश प्रचार करने के लिए सराहना प्राप्त करने की इच्छा मेरे दिल के किसी कोने में छिपी हुई थी.

एक बार जब मैं ऐडवेंटिस्ट पादरी बन गया, मेरी नियुक्ति एक ऐसी बढ़िया जगह पर हो गई जहाँ मैं पहले कभी नहीं पहुँचा था. मेरा ध्यान उन पादरियों के ऊपर गया जो पद पाने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे; मैंने देखा जो विचार मेरे अपने दिल में चल रहे थे वे विचार मेरे आस पास के पादरियों के कामों में दिखाई दे रहे थे. चूँकि मेरे विचार अभी तक मेरे दिल के किसी कोने में ही थे इसलिए मैं उन पादरियों की आलोचना करने लगा जो झुण्ड को भरमा रहे थे.

सेवकाई में कुछ समय रहने के बाद, चर्च की राजनीति में शक्ति के दुरूपयोग को देखकर, मैं सोचता हूँ कि मैं थोड़ा सा भ्रम मुक्त हो गया, और इसी समय प्रलोभन में

डालनेवाले ने एक दूसरी राह पकड़ने के लिए मुझे उत्साहित किया जबकि अधिकारियों को खुश करने का ख़याल अब मुझे आकर्षित नहीं करता था. अब मैं वृत्तचित्र (फिल्में) देखने, खेल-तमाशों के मनोरंजन में एक बार फिर से डूब गया. मैंने अपने आपसे कहा कि मुझे फरीसी बनने की ज़रूरत नहीं थी, और इसलिए मुझे बोझ हल्का करने और विश्राम करने की ज़रूरत थी. मुझे बोझ हल्का करने और विश्राम करने की ज़रूरत तो थी, लेकिन खेलों के द्वारा नहीं. खेलों ने मेरे इस विश्वास को दृढ़ किया कि लोगों द्वारा स्वीकार किये जाने,आदर और सम्मान प्राप्त करने के लिए आश्चर्यचकित करने वाले काम करना और उपलब्धि हासिल करना ज़रूरी था.

इस प्रकार की मनोदशा में मैं जीवन के मार्ग में रुका रहा. मैं इसलिए आगे नहीं बढ़ सका क्योंकि मेरे बचपन की मूर्तिपूजा के कारण परमेश्वर के विषय में मेरे विचार अभी तक स्पष्ट नहीं थे. इस मूर्तिपूजा के कारण प्रलोभन में डालनेवाले ने मेरे मन में ऐसी बातें डालीं और मैं यह भी नहीं समझ पाया कि वे कहाँ से आ रहीं थीं और ऐसा क्यों हो रहा था. और मेरे तर्कसंगत भ्रम के कारण मैं *कठिनाई* नाम की पहाड़ी पर सो गया जिस वजह से मैंने वे पत्रियाँ खो दीं जिन्हें अपने सीने से चिपका कर रखने की मुझे सलाह दी गई थी जैसे कि जॉन बनियन *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस* में बताता है:

> मैंने कहा, ''मैं अब उठकर नगर में, और सड़कों और चौकों में घूमकर अपने प्राणप्रिय को ढूँढूँगी.'' मैं उसे ढूँढ़ती तो रही, परन्तु उसे न पाया. (3) जो पहरुए नगर में घूमते थे, वे मुझे मिले, मैंने उन से पूछा, ''क्या तुम ने मेरे प्राणप्रिय को देखा है?'' श्रेष्ठगीत 3:2-3.

***

खण्ड 2 – प्रेमालाप

8. पहला परदा

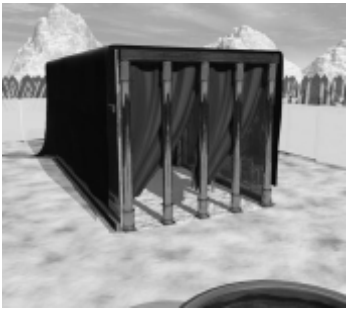

प्रलोभन में डालनेवाले ने मेरे परमप्रिय की एक भ्रमित छवि के द्वारा मुझे धोखा दिया था. वह मसीह जो लोगों के ऊपर प्रगट किया गया तथा वह मसीह ''परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति'' जो देहधारी हुआ, जिसके पास अपने ही स्रोत से सामर्थ्य, शक्ति और सम्मान है, वे दोनों आपस में दोनों मिल जुल गये[2]. मेरे सामने इस व्यक्ति को परमेश्वर के समान इसलिये प्रस्तुत नहीं किया गया कि पुत्र होने के नाते उसे परमेश्वर से सामर्थ्य मिली है बल्कि क्योंकि उसके पास उसकी स्वयं की सामर्थ्य है. इन दोनों में से एक भी विचार मेरे लिए स्पष्ट नहीं था; मैं तो इस विश्वास के पूर्वाभासी परिणाम को भोगते हुए जीता रहा.

---

[2] यह मेरा अनजान पुर्ननवीनीकरण था कि 451 ईस्वी में चाल्सीदोन की परिषद् में औपनिवेशिक रूप से पूर्वोत्तर संघ के सिद्यान्त में रोम ने बहुत पहले क्या किया था. यह दो–विपरीतों के साथ द्वन्द्वात्मक जुड़ाव रहा है. वास्तविकता से निपटने के लिए रोम को इस सिद्यान्त की आवश्यकता है कि आत्मा–अस्तित्व वाले देवता मर नहीं सकते हैं. मैं इस अध्यापन/शिक्षण के एक कच्चे रूप को एक विनम्र भरोसा करनेवाले सांसारिक यीशु मसीह को एक आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी स्वर्गीय यीशु के साथ जोड़ना चाहता हूँ.

जैसा कि मैंने पहले कहा था, अपने साथी पादरियों के घटी घटनाओं के कारण और अधिक भ्रमित हो गया. मैंने कलीसिया की सभाओं में पक्षपात, मुद्दों को छिपाना और राजनीतिक चालबाज़ी को देखा.

मेरे परमप्रिय से निकटता के अभाव में, पाप मुझे पापपूर्ण नहीं लगता था, मेरा विवेक इतना अधिक कोमल नहीं था, और आत्म दया ने प्रलोभित करनेवाले को मेरे हृदय के ऊपर पकड़ बनाने की अनुमति दे दी. थोड़ा सा आत्म-भोग विलास धीरे-धीरे बड़ा आत्म-भोग विलास में बदलता गया. एक धार्मिक अगुवा होने के नाते मैं अपने बाहरी रूप की तो अच्छी देख-भाल कर रहा था, लेकिन मेरे गोपनीय मन में, मैं जिन फिल्मों को देखा करता था उनकी भाषा और हिंसा के विषय में बहुत कम चिंता करता था. मैं उन खेलों में अधिक रुचि लेने लगा जिनमें निरंतर दिखाया जाता था कि उपलब्धि के द्वारा सम्मान प्राप्त किया जाता है.

इस तरह की मनोदशा में, मैंने एक व्यक्तिगत रेखा पर पाँव रख दिया जिसे मैं अस्वीकार्य मानता था. इस बाहरी रूप से दिखाई देनेवाली कोई बात नहीं थी और यह तो मेरे हृदय में चल रहा था लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार, मैंने अपने आपको दोषी महसूस किया. इसके द्वारा मैं अपने जीवन में एक आलोचनात्मक बिन्दु पर आ गया. कठिन परिश्रम, ईमानदारी और अनुशासन के द्वारा आदर और सम्मान प्राप्त करने के सिद्धान्त पर आधारित सोच के कारण मैंने महसूस किया कि मैं असफल हो चुका था. आरम्भ में मुझे केवल एक ही विकल्प दिखाई दे रहा था कि इतने ऊँचे आदर्श के समाने मैं एक मसीही बनकर जीने के बारे में सब कुछ पीछे छोड़ कर भूल जाऊँ. यदि जो कुछ मैं प्रचार कर रहा था वह मेरे अपने जीवन में नहीं था तब मुझे वह प्रचार करना बन्द कर देना चाहिए. जो लोग विश्वास से महापवित्र स्थान में मसीह के पीछे पीछे चलते हैं, बाइबल प्रतिज्ञा करती है कि वे पाप के ऊपर जय पायेंगे. मैं इस विजय का अनुभव नहीं कर रहा था. मैं जानता था कि परमेश्वर पापों को क्षमा करता है, लेकिन वह जीवन में विजय का वायदा भी करता है.

प्रलोभन में डालनेवाले ने मेरे परमप्रिय की एक भ्रमित छवि के द्वारा मुझे धोखा दिया था. वह मसीह जो लोगों के ऊपर प्रगट किया गया तथा वह मसीह ''परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति'' जो देहधारी हुआ, जिसके पास अपने ही स्रोत से सामर्थ्य, शक्ति और सम्मान है, वे दोनों आपस में दोनों मिल जुल गये. मेरे सामने इस व्यक्ति को परमेश्वर के समान इसलिये प्रस्तुत नहीं किया गया कि पुत्र होने के नाते उसे परमेश्वर से सामर्थ्य मिली है बल्कि क्योंकि उसके पास उसकी स्वयं की सामर्थ्य है. इन दोनों में से एक भी विचार मेरे लिए स्पष्ट नहीं था; मैं तो इस विश्वास के पूर्वाभासी परिणाम को भोगते हुए जीता रहा.

जैसा कि मैंने पहले कहा था, अपने साथी पादरियों के घटी घटनाओं के कारण और अधिक भ्रमित हो गया. मैंने कलीसिया की सभाओं में पक्षपात, मुद्दों को छिपाना और राजनीतिक चालबाज़ी को देखा.

मेरे परमप्रिय से निकटता के अभाव में, पाप मुझे पापपूर्ण नहीं लगता था, मेरा विवेक इतना अधिक कोमल नहीं था, और आत्म दया ने प्रलोभित करनेवाले को मेरे हृदय के ऊपर पकड़ बनाने की अनुमति दे दी. थोड़ा सा आत्म-भोग विलास धीरे-धीरे बड़ा आत्म-भोग विलास में बदलता गया. एक धार्मिक अगुवा होने के नाते मैं अपने बाहरी रूप की तो अच्छी देख-भाल कर रहा था, लेकिन मेरे गोपनीय मन में, मैं जिन फिल्मों को देखा करता था उनकी भाषा और हिंसा के विषय में बहुत कम चिंता करता था. मैं उन खेलों में अधिक रुचि लेने लगा जिनमें निरंतर दिखाया जाता था कि उपलब्धि के द्वारा सम्मान प्राप्त किया जाता है.

इस तरह की मनोदशा में, मैंने एक व्यक्तिगत रेखा पर पाँव रख दिया जिसे मैं अस्वीकार्य मानता था. इस बाहरी रूप से दिखाई देनेवाली कोई बात नहीं थी और यह तो मेरे हृदय में चल रहा था लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार, मैंने अपने आपको दोषी महसूस किया. इसके द्वारा मैं अपने जीवन में एक आलोचनात्मक बिन्दु पर आ गया. कठिन परिश्रम, ईमानदारी और अनुशासन के द्वारा आदर और सम्मान प्राप्त करने के सिद्धान्त पर आधारित सोच के कारण मैंने महसूस किया कि मैं

असफल हो चुका था. आरम्भ में मुझे केवल एक ही विकल्प दिखाई दे रहा था कि इतने ऊँचे आदर्श के समाने मैं एक मसीही बनकर जीने के बारे में सब कुछ पीछे छोड़ कर भूल जाऊँ. यदि जो कुछ मैं प्रचार कर रहा था वह मेरे अपने जीवन में नहीं था तब मुझे वह प्रचार करना बन्द कर देना चाहिए. जो लोग विश्वास से महापवित्र स्थान में मसीह के पीछे पीछे चलते हैं, बाइबल प्रतिज्ञा करती है कि वे पाप के ऊपर जय पायेंगे. मैं इस विजय का अनुभव नहीं कर रहा था. मैं जानता था कि परमेश्वर पापों को क्षमा करता है, लेकिन वह जीवन में विजय का वायदा भी करता है.

क्योंकि मेरे दिमाग़ में यह स्पष्ट नहीं था कि यीशु वास्तव में कौन है इसलिए महापवित्र स्थान का अनुभव प्राप्त करने की लगभग सभी संभावनाएं समाप्त हो चुकी थीं. मेरे भ्रमित विचारों के कारण मुझे तो अभी पवित्रस्थान का अनुभव भी प्राप्त नहीं हुआ था. इस विषय में विस्तार से हम बाद में बात करेंगे, परन्तु अभी तो यही कहना पर्याप्त है कि यीशु के पुत्रत्व के विषय मेरे विचारों में स्पष्टता न होने के कारण मैं यीशु के साथ एक सतत और मधुर सम्बन्ध बनाये रखने में मैं असफल रहा. मैं तो यह भी नहीं जानता था कि मेरे विचारों में मतभेद था. मैंने तो अपने प्रतिदिन के जीवन में अपने मन में इस संघर्ष को अनुभव किया था.

जैसे जैसे मैंने अपने ऊपर व्यवस्था के भार को अनुभव किया और मैंने अपनी संभावनाओं के ऊपर विचार किया, मैंने पाया कि अपनी और अपने पूर्वजों की कल्पनाओं की मूर्ति की पूजा करने के द्वारा:

> और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी. (11) क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला. रोमियों 7:10-11.

वह आज्ञा जो जीवन के लिये दी गयी थी, मैंने पाया कि मेरे लिये वह मृत्यु का कारण इसलिये बनी क्योंकि अपने हृदय में ग़लत देवता को बैठाकर मैं अपनी उपलब्धियों के द्वारा अपनी पहचान बनाने की चाहत रखता था. परमेश्वर के सामने मैं अपने

आपको दोषी महसूस कर रहा था. जब मैं दोष के बारे में सोचता था तो प्राकृतिक रूप में मैं पिता के बारे में सोचता था, क्योंकि मुझे अनुशासित करने के लिए मेरा दुनियावी पिता परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था. इसलिए जब मुझे अपने पापों का सामना करना पड़ता था तो मुझे अपने स्वर्गीय पिता का सामना करना पड़ता था. वह मुझे कैसे माफ कर सकता था? सम्मानीय लोगों के कानून के अनुसार, मैं अपने आपको क्षमा के लिये अयोग्य महसूस करता था. मैं इसलिए भी अपने आपको अयोग्य महसूस करता था क्योंकि मैं परमेश्वर की सेवा करने के द्वारा लगातार प्रशंसा प्राप्त नहीं कर सकता था इसलिए मैं निराश भी था.

जब मैं ऐसी संघर्षमय स्थिति में प्रार्थना कर रहा था, मेरा परमप्रिय मेरे पास आया और मुझे याद दिलाया कि पिता मुझसे प्रेम करता है. यदि मैं उसके द्वारा मेरे लिये दिये गये बलिदान पर दृढ़ता से भरोसा बनाये रखूँ, तब मैं वास्तव में पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया हूँ.

जैसे-जैसे मैंने भ्रमित करनेवाली धुन्ध के बीच में तलाश की, मैं पिता के प्रेम का आश्वासन प्राप्त करना चाहता था. परमेश्वर का वचन कहता है, ''विश्वास करो!'' फिर भी मेरी राह में एक ठोकर का पत्थर था. बाइबल वाले यीशु का पिता मेरे जीवन में घनिष्टता से संलग्न था, लेकिन त्रिएकता/त्रिएकत्व वाला पिता काफी दूर था क्योंकि उसके सभी वास्तविक कार्य यीशु के द्वारा किये जाते थे. पिता तो बस अपने सिंहासन पर बैठ कर स्वीकृति देता और अपने पुत्र के कार्यों पर मुस्कराता था. उस समय तो मैं इन सब बातों को ठीक से नहीं समझ पाता था, लेकिन इस विचार के कारण मेरे मन में पिता और मेरे बीच में एक खाई बन गयी थी. क्या वह वास्तव में मुझे क्षमा कर सकता था?

वचन ने मुझसे कहा, ''ऐड्रियन, तुम इसे दृढ़ता से पकड़े क्यों नहीं रहते हो?'' फिर भी मैं संघर्ष करता रहा. और तब मेरे पास यह वचन पहुँचा:

कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय

में सेंत-मेंत दिया. इफिसियों 1:6.

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए. यूहन्ना 3:16.

और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है,' हमारे हृदयों में भेजा है. गलातियों 4:6.

एक बार पुन: मुझे याद आया कि पिता का उसके पुत्र से अलगाव ही है जो पिता की हमारे प्रति भावनाओं को प्रगट करता है. केवल इस बात को समझने के द्वारा कि परमेश्वर यीशु का पिता था मैं अपने प्रति उसके प्रेम के लिए धन्यवाद करने लगा. यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं था तब परमेश्वर हमें ऐसा कुछ भी नहीं दे रहा था जो कि उसका अपना था; बल्कि वह तो ''पुत्र को'' उसकी सोच के अनुसार चलते हुए देख रहा था. हम ऐसा कह सकते हैं कि पिता पुत्र के साथ अपने सम्बन्ध का त्याग कर रहा था, लेकिन यह सम्बन्ध उसका सम्बन्ध नहीं था, इसलिए यह बात कि, ''पिता ने जगत से ऐसा प्रेम रखा,'' हमारे गले नहीं उतरती है. जब मैं इस वाक्य में परमेश्वर शब्द पढ़ता हूँ, तो मुझे लगता है कि ईश्वरत्व के तीन व्यक्तियों ने मिलकर यह फैसला किया कि यीशु इस जगत में आये जबकि उसी समय यह बात भी कही जा रही है कि पिता ने उसे भेजा. इस भ्रम ने परमेश्वर के अनुग्रह और क्षमा के बीच हमसे दूरी बना दी. इस तरह से मैं *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस* एक थके हुए यात्री के समान दो बड़े शेरों के सामने अकेला खड़ा था. मैं देख सकता था कि सुरक्षा प्रदान करनेवाला शरणस्थल मेरे सामने ही था, लेकिन पहले मुझे विश्वास की परीक्षा पास करना ज़रूरी था.

संकट के क्षणों में मैं अपने वास्तविक पिता के पास गया और यह विश्वास करने का निर्णय लिया कि वह मुझे क्षमा करता है. जैसे ही मैंने इस आश्वासन पर भरोसा किया कि अपने परमप्रिय में मुझे स्वीकार किया जाता है, मेरा हृदय आनन्द से भर गया. वह तो वास्तव में मेरा परमप्रिय था.

> मुझ को उनके पास से आगे बढ़े थोड़ी ही देर हुई थी कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिल गया. मैंने उसको पकड़ लिया, और उसको जाने न दिया. जब तक कि मैं उसे अपनी माता के घर, अर्थात् अपनी जननी की कोठरी में न ले आई. (5) हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम से चिकारियों और मैदान की हरिणियों की शपथ धराकर कहती हूँ, कि जब तक प्रेम आप से न उठे, तब तक उसको न उसकाओ और न जगाओ. (6) यह क्या है जो धुएँ के खम्बे के समान, गन्धरस और लोबान से सुगन्धित और व्यापारी की सब भाँति की बुकनी लगाए हुए जंगल से निकला आता है. श्रेष्ठगीत 3:4-6.

मेरे पहले प्रेम का संपूर्ण आनन्द वापस लौट आया. एक बार फिर से मसीह के प्रेम ने मेरी आत्मा के प्रत्येक कोने को सुगन्धित कर दिया. मुझे क्षमा प्राप्त हुई, मुझे दो बार क्षमा किया गया; पहला तो मेरे बचपन और जवानी के पापों के लिए क्षमा प्राप्त हुई और अब पुन: मुझे मेरे आरम्भिक प्रौढ़ावस्था के पापों के लिये क्षमा किया गया.

इन घटनाओं के तुरन्त बाद, हमारे पिता ने यह सुनिश्चित किया कि उसके पुत्र के बारे में पूरी तरह से सीखने के लिए मेरे पास समय रहे और मैं यह समझना शुरू कर सकूँ कि इतने अधिक वर्षों तक मैं भ्रमित की स्थिति में क्यों भटकता रहा. मैं काफी बीमार हो गया और मुझे पादरी का काम रोकना पड़ा. हम ऐसे स्थान में चले गये जहाँ पर चंगाई प्राप्त करने, अध्ययन करने और प्रार्थना करने के लिए मेरे पास समय था.

जब मैं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहा था, सात वर्ष पुरानी एक लम्बी बातचीत जिसमें मैं शामिल हुआ था, मुझे याद आई. मेरे मित्रों में से एक मित्र ने मुझे बताया कि त्रियेकता के विषय में समस्याएं थीं और यह कि इस शिक्षा को कलीसिया ने आरम्भ से अपने विश्वासों में शामिल नहीं किया था. मुझे बड़ा धक्का लगा. इसके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता था. कलीसिया के लिये इसका आशय कितना बड़ा था यह बात स्वीकार करना मेरे लिए काफी कठिन थी. दु:खी होकर मैंने विषय बदल दिया और मैंने प्रेरणा के कथनों में से कुछ ऐसे कथन चुन लिये जो मेरे विश्वास का समर्थन करते हुए दिखाई दे रहे थे. मेरा परमप्रिय जिस आदर का हक़दार है, कोई भी उसके

उस आदर को कम नहीं कर सकती थी. मैं किसी व्यक्ति को यह अनुमति नहीं दूँगा कि वह यीशु की दिव्यता को कम कर सके. मैंने और मेरे अनेक मित्रों ने इस व्यक्ति को (जिसने कहा था कि त्रियेकता आरम्भिक कलीसिया के विश्वासों में शामिल नहीं थी) भ्रमित और भटका हुआ मान लिया जो आत्माओं को बचाने के काम से दूर भाग रहा था. परमेश्वर के प्रति मेरी विश्वासयोग्यता को दर्शाने के लिए, यह तर्क मुझे पूरी तरह से तर्कसंगत दिखाई दिया.

सात वर्ष बाद, मैं अपने मित्र के पास गया और बीरिया के मसीही बनकर सब बातों को न परखने के लिए मैंने उससे क्षमा माँगी. उसने मुझे प्रेम से क्षमा कर दिया, फिर मैंने इस विषय में पढ़ने के लिए उससे और अधिक पुस्तकें माँगीं. जैसे जैसे मैं पढ़ने लगा, इस विषय पर मैं वचन की स्पष्ट शिक्षा की ओर खिंचता चला गया.

> क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे. यूहन्ना 5:26.
>
> और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें. यूहन्ना 17:3.
>
> परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ. मरकुस 1:1.
>
> शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ''तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है.'' मत्ती 16:16.
>
> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, (2) इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है, (3) वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है. वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने

जा बैठा; (4) और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया. इब्रानियों 1:1-4.

मेरे परमप्रिय ने इन शब्दों के द्वारा मुझसे बातें कीं. जब मैं बाइबल को साधारण रीति से पढ़ता हूँ, तो ऐसा प्रतीत होता है यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है. इन विचारों के आनन्द के सामने मैं अपने आप को समर्पित करने लगा था कि प्रलोभन में डालनेवाले ने धीरे से कहा,''किस तरह से यीशु एक ओर तो पिता के तुल्य हो सकता है और दूसरी ओर परमेश्वर से पैदा भी हो सकता है? ऐड्रिन, यह तो मसीह की दिव्यता को कम करता है. क्या तुम्हें पूरा भरोसा है कि तुम अपना सब कुछ उस बात के ऊपर दाँव पर लगा देना चाहते हो जिसके बारे में अभी तुम स्वयं भी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो?''

मैंने एक सम्मानीय विद्वान को इस विषय में एक ई-मेल भेजी और उन्होंने मुझे जो उत्तर दिया वह स्वीकार करने के योग्य लगता था. यीशु को पूरी तरह से दैवीय व्यक्ति और पिता के तुल्य देखने की मेरी चाहत के साथ मिलकर इस सच्चाई को कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, पूरी तरह से स्वीकार करने से मुझे रोक दिया. फिर भी अब तक इतना कुछ पढ़ चुका था जिससे यह बात भली प्रकार से समझ सकता था कि इस कहानी के दो पहलू थे. इस विषय में अधिक सीखने के लिए मैंने अपनी इच्छा को बनाये रखा, लेकिन दु:ख की बात यह है कि मैं त्रिएकता से भी लिपटा रहा.

मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि बहुत से मित्र और कलीसिया में मेरी स्थिति खो देने के भय ने मेरे निर्णय को बिल्कुल भी प्रभावित नहीं किया, लेकिन मैं ऐसा नहीं कह सकता हूँ. त्रिएकता को त्यागने के कारण मेरे कुछ मित्रों को कलीसिया से निकाला जा चुका था, और मैं इस प्रकार की परिस्थितियों में फंसना नहीं चाहता था. बिना सोचे-विचारे मैंने उस विद्वान व्यक्ति के विचारों को स्वीकार कर लिया था जिसे मैंने ई-मेल लिखा था. मेरे विद्वान मित्र ने सलाह दी थी कि जिस प्रकार से भविष्य में आनेवाले मसीह के कार्य को अपेक्षित रूप में स्वीकार किया जाता है ठीक उसी प्रकार से यह शीर्षक पुत्र को भी स्वीकार किया जा सकता था.

हाँ, यह शब्द मसीह वास्तव में एक शीर्षक या मसीह के कार्यालय का नाम था जोकि वह मेमना है जो जगत की उत्पत्ति से पहले से बलिदान हुआ है और यही प्रतिज्ञा तो उसने की थी कि वह हमारे लिये करेगा. मसीह यह एक शब्द या एक शीर्षक है जिसे परमेश्वर के पुत्र के लिए प्रयोग किया गया है और इसलिए इसे पूर्वानुमान के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए. लेकिन, *पुत्र* शब्द कोई शीर्षक या कार्यालय का नाम नहीं था, बल्कि यह तो वास्तव में पिता के साथ उसका संबन्ध था. मेरे मित्र की दलील ने शब्द *पुत्र* को एक *व्यक्ति* से एक *कार्यालय* में बदल दिया था. इन दोनों में अन्तर क्या है? यह अन्तर इस बात का है कि आप कौन हैं और आप क्या करते हैं. इसमें आपका परिचय आपके कार्य या कार्यालय से नहीं किन्तु आपके सम्बन्ध से दिया जाता है. क्या यह अन्तर महत्वपूर्ण है? जैसा कि मैंने बाद में पाया कि यह अन्तर ऐसा है कि आप परमेश्वर के बजाए शैतान की आराधना कर रहे हों.

अब मेरा हृदय मेरे परमप्रिय के विषय में दूसरी बातों को सीखने के प्रति खुल गया था. फिर भी मैं दो विचारों के बीच में लटका हुआ था. अब मेरा हृदय इस विचार को स्वीकार कर रहा था कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था, लेकिन अभी भी कुछ बातें पूरी तरह से स्पष्ट नहीं थीं.

> तब उसने उनसे कहा, ''हे निबुद्धियो, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो!'' लूका 24:25.

मेरे प्रेमी पिता ने मुझ पर दया दिखाई. वह जानता था कि पूरी सच्चाई का सामना करने के लिए तैयार होने के लिए मुझे और अधिक सामर्थ्य, आँखों के लिए सुरमा और मेरे परमप्रिय की अधिक मध्यस्ता की आवश्यकता थी. ये सब बातें पवित्र स्थान में प्राप्त हो सकती थीं. स्वर्ग की रोटी, जगत की ज्योति और वेदी के सामने मेरे लिये मसीह की मध्यस्ता, मेरे परमप्रिय को पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए मेरे सवालों के जवाब प्रदान करनेवाला था.

***

9. जगत की ज्योति

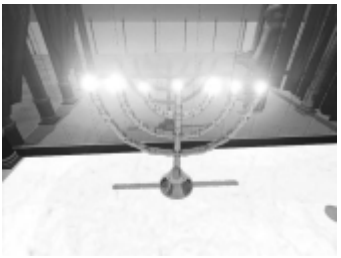

तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उचियाला है. भजनसंहिता 119:105.

उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था. यूहन्ना 1:4.

यीशु ने फिर लोगों से कहा, ''जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा.'' यूहन्ना 8:12.

जब मेरा हृदय इस सत्य के प्रति खुल गया कि यीशु वास्तव में एक पुत्र है, तब अचानक से पवित्रशास्त्र के अनेक पद बड़ी स्पष्टता से मुझे समझ में आने लगे. चूँकि यीशु कोने के सिरे का वह पत्थर है, इसलिये प्रत्येक सत्य को समझना इस बात के साथ जुड़ा हुआ है कि हम यीशु को किस तरह से समझते हैं. ''त्रिएकता (त्रिएकत्व) के दूसरे व्यक्ति'' के रूप में, ''वह पुत्र'' वह व्यक्ति था जो अपने ही संसाधनों से महान कार्य करता था. लेकिन पिता के एक पुत्र के रूप में, मैं उस पुत्र को उस व्यक्ति के रूप में देखने लगा, जो सब कुछ प्राप्त करता है, जो आशीषें प्राप्त करता है और उसे पुत्र होने के कारण प्रेम किया जाता है न कि इस बात के आधार पर कि वह क्या करता है. ये अनुभूतियाँ मेरे स्पष्ट रूप से अनुभव तो नहीं हो रही थीं लेकिन जब मैं पवित्रशास्त्र को पढ़ता था और जो कुछ मेरे चारों ओर हो रहा था उन

दोनों ही बातों में मुझे दिखाई देने लगा था.

यद्यपि त्रिएकता के विषय में मेरे पास सभी सवालों के जबाव नहीं थे, फिर भी पुत्रत्व के विषय में सत्य ने मेरे विश्वास के कोने के सिरे का पत्थर बदल दिया था, और इस बहुमूल्य कोने के सिरे के पत्थर ने धीरे धीरे सभी विश्वासों को क्रम से रखना शुरू कर दिया. मेरे हृदय में विराजमान मेरे बचपन का देवता अब गम्भीर चुनौती का सामना करने लगा था. यद्यपि मैं अभी भी यीशु को उसके संसाधनों के आधार पर सर्वशक्तिमान मान रहा था, पुत्रत्व के विचार ने इस सिद्धान्त को मेरे जीवन में अनुकरण करने की अनुमति प्रदान करना शुरू कर दिया. मैं इस बात का बड़े उत्साह के साथ अनुकरण करने लगा कि वह प्राप्त करता है, वह अपने पिता के द्वारा आशीषित होता और इस विचार ने सब कुछ बदलना आरम्भ कर दिया.

एक सब्बत की दोपहर के बाद जब मैं अपने घर के निकट एक सुन्दर देहाती क्षेत्र में टहल रहा था, मैंने अपने पुत्र के जन्म के बारे में सोचने लगा. जब मैंने उसके जन्म की घटनाओं को याद करना शुरू किया, मैं उन विचारों को याद करने लगा जो मेरे दिमाग़ में थे. जब मैंने अपने पुत्र को अपनी गोद में लिया, मैंने प्रार्थना की थी, ''हे प्रभु, कृपया होने देना कि मेरे और मेरे पुत्र के बीच में कुछ भी आने न पाये, और मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि वह यह जान सके कि मैं कौन हूँ.'' अब जबकि मैं यीशु को एक वास्तविक पुत्र के रूप में देखने लगा था, इसलिए मैं अब उस स्पष्ट आवाज़ को सुनने के लिए तैयार भी था जो उस सब्बत के शान्त दिन में मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से मेरे लिये आई थी.

''ठीक इसी तरह से मैं तुम्हारे बारे में भी महसूस करता हूँ.''

मैं आवाक रह गया. यीशु कौन था इस बात की समझ में बदलाव ने इस कथन की वास्तविक शक्ति का मुझे ऐहसास दिलाना शुरू कर दिया. परमेश्वर मुझसे यह कह रहा था कि वह नहीं चाहता कि उसके और मेरे बीच में कोई वस्तु आए, और वह यह चाहता था कि मैं उसे जानूँ कि वह कौन है. अब चूँकि मैं समझ चुका था कि

यीशु पुत्र था, मैं भी उसका अनुकरण करने और यह विश्वास करने लगा कि मैं भी मेरे अपने क्षेत्र में एक पुत्र था. यीशु का पिता के पुत्रत्व ने इस बात को निश्चत कर दिया कि मैं भी पिता का एक पुत्र था. केवल परमेश्वर के पुत्र के द्वारा मैं इसे समझना शुरू पाया.

> ...कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ. यूहन्ना 20:17.

> कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया. इफिसियों 1:6.

इस नयी समझ के बावजूद, जब मैंने इस बात को समझा कि हमारा स्वर्गीय पिता हम से क्या कह रहा था, मैंने महसूस किया कि मेरी आत्मा के ऊपर से प्रतिरोध का एक झोंका सा गुज़र गया. परीक्षा में डालनेवाले ने मेरी असफलताएं और वे कारण मुझे याद दिलाने शुरू कर दिये जिनके कारण मैं परमेश्वर का पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हो सकता था. मेरे दिमाग़ में यह युद्ध आगे पीछे चलता था कि क्या मैं परमेश्वर का पुत्र होने का दावा कर सकता था या नहीं और स्वर्ग का सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह चाहता था कि उसके और हमारे बीच में कुछ और नहीं आना चाहिए. यह एक ऐसा सपना लग रहा था जिस पर यकीन करना मुश्किल था. मेरे स्वर्गीय पिता ने धीरे से मुझसे कहा, ''क्या तुम वास्तव में मेरी पेशकश को ठुकरा दोगे?''

''मैं क्या कर रहा हूँ?'' मैंने अपने आपसे कहा. ''नहीं प्रभु, मैंने यह विश्वास करने का निर्णय किया है कि आप मुझसे एक पुत्र के समान प्रेम करते हैं. मैं इसे पूरी रीति से समझ तो नहीं पा रहा हूँ लेकिन मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ.''

यीशु का पुत्रत्व मेरे पुत्रत्व के लिए कोने के सिरे का पत्थर बन गया. उसके पुत्रत्व को देखते हुए मैं अपने पुत्रत्व का दावा कर सकता था. परमेश्वर के पुत्र का प्रकाश मेरी आत्मा में भरने लगा. त्रिएकता के विषय में किसी भी जानकारी के बिना यह

सब मेरे अन्दर चल रहा था. यह तो धीरे–धीरे नये कोने के सिरे के पत्थर के ऊपर एक निर्माण करने के समान था.

पुत्रत्व के मेरे नये दृष्टिकोण ने मेरे हृदय में मेरे पिता के ऊपर निर्भरता के प्रति अधिक जागरूकता पैदा करना शुरू कर दिया. एक दिन जब मैं पढ़ रहा था:

> तब सर्प ने स्त्री से कहा, ''तुम निश्चय न मरोगे. (5) वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे.'' उत्पत्ति 3:4–5.

अचानक मेरी समझ में आया कि इस झूठ में छिपा हुआ सिद्धान्त आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता का सिद्धान्त है. बड़ी तेजी से मेरे दिमाग़ में यह विचार आया कि स्वतंत्रता का अर्थ आशीषों से रहित होना अर्थात् मूल्य और क़ीमत से विहीन होना है. इन विचारों ने मुझे *पहचान के लिए युद्ध* श्रृंखला पेश करने के लिए तैयार किया जिसे मैंने कुछ समय बाद पेश किया. इसके बाद मैंने एक किताब लिखी जिसका नाम है *'पहचान के लिए युद्ध'*.[3] यद्यपि मैं इस बात से अनजान था कि मेरे विचारों में यह बदलाव किस प्रकार से आ रहा था, फिर भी यीशु को एक वास्तविक पुत्र के रूप में समझने से उत्तराधिकार के सिद्धान्त की नींव पड़ी, जिसने आशीषों के सिद्धान्त की ओर अगुवाई की और आशीषों के सिद्धान्त ने उपलब्धि के आधार पर अहमियत के विपरीत सम्बन्धों के आधार पर अहमियत को समझने में मदद की.

मुझे याद है जब पहली बार यह बात मेरी समझ में आयी कि आत्मनिर्भरता के झूठे सिद्धान्त के कारण ही शैतान अपात्र/अयोग्य महसूस करता है. यदि जो कुछ हम हैं और जो कुछ करते हैं वह परमेश्वर की ओर से ही आता है तो हम केवल आशीषों, आनन्द और शान्ति का अनुभव करेंगे जब हम उसका आभार व्यक्त करेंगे जिसने

[3] See www.identitywars.org

हमें ये सब वस्तुएं दी हैं. परमेश्वर का पुत्र सिद्धता के साथ जीवित है और श्वाँस लेता है. वह अपने आप से कुछ नहीं करता है परन्तु प्रत्येक वस्तु का महान स्रोत परमेश्वर को ही मानता है. लेकिन शैतान इस बात को स्वीकार नहीं करता है कि जो कुछ उसके पास है वह उसे मसीह के द्वारा परमेश्वर से ही मिला है. इस कारण वह पिता की आशीषों से वंचित हो गया और उसने अपने आपको मूल्यहीनता का जनक बना लिया. तब मैं समझ सकता था कि इस मूल्यहीनता के बीज जो उस झूठ के साथज ुड़ेह ुएथ ेअ दनक ीव ाटिकाम ेंअ ादमअ ौरह व्वाक ोि दयाग याथ ा. आत्मनिर्भरता के झूठ में मूल्यहीनता छिपी हुई थी.

> हे मनुष्य के पुत्रो, कब तक मेरी महिमा का अनादर होता रहेगा? तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे? भजन संहिता 4:2.

जीवन में उपलब्धि के द्वारा अहमियत हासिल करने को शैतान के झूठ से जोड़कर देखने से प्रलोभन में डालनेवाले के धोख़े की सभी परतें उतरने लगीं जो उसने मेरे ऊपर आज़माई थीं. चर्च में मेरे प्रयासों के लिए सराहना की ज़रूरत, हमेशा व्यस्त रहने की ज़रूरत, दूसरों की असफलता के लिए उनकी आलोचना सभी इस बात के प्रकाश में बेपर्दा होने लगी कि अहमियत जो कुछ हमने किया है इस आधार पर नहीं परन्तु इस बात पर मिलती है कि हम किसके हैं.

उसी साँप के झूठ के द्वारा मैं यह अधिक स्पष्टता से यह समझने लगा कि जीवन ऊपर से प्राप्त होता है. पहले मैं इस बात के ऊपर सैद्धान्तिक रूप से विश्वास किया था, लेकिन जब मेरे विश्वास के कोने के सिरे का पत्थर को एक पूरी रीति से आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में समझा गया था, मेरे विचार भ्रमित हो गये. फिर मेरे सामने बाइबल के पद आये:

> जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता; (25) न

> किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों कीसेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है. प्रेरितों के काम 17:24-25.
>
> वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है. (16) क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं. (17) वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं. कुलुस्सियों 1:15-17.

वही सब मनुष्यों को जीवन और श्वास देता है. यीशु के द्वारा सभी वस्तुएं बनी हैं या संगठित रहती हैं. यीशु के वास्तविक पुत्रत्व के सामने ये विचार नये प्रकाश के साथ स्पष्ट होने लगे. मैं यह तो नहीं समझ पा रहा था कि ये सब बातें आपस में किस प्रकार से जुड़ी हुई थीं, लेकिन बाइबल शिक्षा की एक नयी इमारत पुत्रत्व रूपी कोने के सिरे के पत्थर के साथ एक नया आकार लेने लगी थी.

जब उसके पुत्रत्व का प्रकाश पवित्रशास्त्र के ऊपर पड़ा तो मेरा परमप्रिय मुझे और भी अधिक प्रिय लगने लगा. केवल कुछ संक्षिप्त वर्षों में, मसीह और शैतान के बीच के महान विवाद और उद्धार की योजना के विषय में मेरी पूरी समझ पूरी तरह से बदल गई. जब जगत की ज्योति ने मेरी आँखों को खोल दिया था, अब मैं वचन के एक वास्तविक भोज के लिए तैयार था.

***

10. जीवन की रोटी

यहि वचारि कद बावअ ौरम ूल्यहीनताक ा संबन्ध आत्म–निर्भरता के साथ है, इससे मनुष्य का पतन, अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष और उद्धार की पूरी प्रक्रिया गहराई के साथ मेरी समझ में आने लगी. इस वास्तविकता के प्रति मेरी आँखें खुल गईं कि मनुष्य का पाप में पतन वास्तव में मूल्यहीनता और शर्मिन्दगी में पतन था. यह एक ऐसे जीवन की वास्तविकता के साथ जीवन बिताने की स्थिति है कि हम वे कार्य कर रहे हैं जिन्हें परमेश्वर पसन्द नहीं करता है. यह दु:खदायी स्थिति का आधार परमेश्वर के बजाए अपने कार्यों के ऊपर निर्भर रहने की चाहत है; यह अपने कार्यों के द्वारा पहचान प्राप्त करने की इच्छा है न कि जो कुछ तुम्हारे पास है वह तुम्हें किसने दिया है.

जब मैं इन बातों के ऊपर विचार कर रहा था, यीशु का अपने पिता की आवाज़ यह कहते हुए सुनना कि वह उससे प्रेम करता था और उसे अपने पुत्र के रूप में स्वीकार करता था, मुझे सीधे बात करने लगी.

> और देखो, यह आकाशवाणी हुई: ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ.'' मत्ती 3:17.

पहले जब मैं आत्म–निर्भर यीशु की आराधना करता था, तब मैं इस पद में मेरे पिता की आवाज़ को स्पष्ट रूप से नहीं सुन सका था. फिर भी अब जबकि मैं इस बात को भली प्रकार से समझ गया था कि यीशु परमेश्वर का वास्तविक पुत्र है, इन शब्दों ने मेरे हृदय को बड़ी शान्ति प्रदान की. एकलौते पुत्र की बाँहों में, उसे देखते हुए; उसे प्रेम करते हुए और उसके द्वारा बदलते हुए, अब मैं वहाँ खड़ा हो सकता था जहाँ पर यीशु मेरे स्थान पर खड़ा था और वास्तविक रूप से मेरे स्वर्गीय पिता से यह सुन सकता था कि मैं उसका प्रिय पुत्र था जो उसे प्रसन्न करता था. फिर भी केवल परमेश्वर के पुत्र, मसीह के द्वारा ही मैं इस आवाज़ को सुन सकता था. जब मैं इन बातों के ऊपर मनन कर रहा था मेरे सामने इस कथन को लाया गया जिसने उस आनन्द का सत्यापन कर दिया जिसे मैं अनुभव कर रहा था.

> **वहअ ावाज़ जसनेय ेशुस`ब ातक ेव हप/त्येक वश्वास करनेवाली आत्मा से कहती है, यह मेरा प्रिय बालक है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ.** ''हे प्रियो, अब हम, परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे. इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है.'' 1 यूहन्ना 3:2. हमारे छुड़ानेवाले ने वह रास्ता खोल दिया है कि सबसे अधिक पापी, सबसे अधिक ज़रूरतमन्द, सबसे अधिक सताया हुआ और तुच्छ जन, पिता तक पहुँच सकता है. *युगों की अभिलाषा,* पृष्ठ 113.

यहाँ, ठीक यहाँ मत्ती 3:17 में मेरे हृदय की चाहत का रहस्य, मेरी अभिलाषा कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता मुझे प्रेम करता है और वह मुझसे प्रसन्न है, पाया जाता है. यह तो साधारण है, परमेश्वर के पुत्र को उसके पिता की गोद में देखकर, विश्वास के द्वारा मैं अपने आपको भी उस गोद में देख सकता और उन्हीं शब्दों को सुन सकता था जो मेरे लिए बोले गये थे. उस पुत्र को देखने से जिसे बिना यह साबित किये कि वह योग्य था सब कुछ मिला, मुझे वह सब प्रेम पूर्ण धरोहर प्राप्त हुई जो पिता मुझे

देने की चाहत रखता था.

काश मेरे जीवन के इस बिन्दु पर मैं यीशु के पुत्रत्व को पूरी तरह से समझ गया होता. हमारा पिता जीवन की बहुत मधुर रोटी का स्वाद लेने की मुझे अनुमति दे रहा था, फिर भी त्रिएकता के शिकंजे के कारण कुछ समय तक मैं आगे–पीछे आता और जाता रहा. इसके बारे में विस्तार से चर्चा मैं अगले खण्ड में करूँगा, लेकिन यहाँ पर यह बताना आवश्यक है कि यद्यपि मैंने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के प्रेम का स्वाद चखा, मैं इस बात को नहीं समझ पाया कि मैं अभी भी काफी भ्रमित था.

फिर भी इसके बावजूद, अब मैं नियमित रूप से असली आनन्द को प्राप्त कर रहा था. मैंने इस जीवित वास्तविकता पर भरोसा किया कि पिता मुझसे प्रसन्न था. अब मैं इसे देख सकता था; अब मैं इसका दावा कर सकता था. जब मैं लड़खड़ाता और गिर जाता था, मैं परमेश्वर के वचन में देख सकता था. क्या पिता अब भी अपने पुत्र से प्रसन्न था? हाँ! फिर तो मैं भी उस परमप्रिय में स्वीकार किया गया हूँ. उसे मुझ में प्रसन्न होना ही चाहिए. अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा इस बात पर आधारित नहीं थी कि मैंने इसे पाने के लिए स्वयं कुछ किया था क्योंकि अब मैं बाइबल के द्वारा उस यीशु को अधिक से अधिक देखने लगा था जो अपने आप पर निर्भर नहीं था, बल्कि वह अपने पिता की प्रतिज्ञाओं के ऊपर निर्भर था.

इन बातों को हृदय में रखते हुए, मैंने जंगल में संघर्ष की कहानी और बपतिस्मे की घटना को पुत्रत्व के लिए संघर्ष और इस कैसे प्राप्त किया जाता है को ध्यान में रखते हुए पढ़ा. शैतान यीशु के ऊपर पुत्रत्व प्रमाणित करने के लिए चमत्कार करने या संसार को अपनी सामर्थ्य दिखाने का दबाव बनाता रहा. मैंने यीशु के साथ शैतान के संघर्ष को पुत्रत्व की परिभाषा के लिए एक लड़ाई के रूप में देखा. क्या यह पिता द्वारा बोले गये शब्दों पर साधारण भरोसा था या फिर इसे साबित करने के लिए पुत्र को कुछ करना ज़रूरी था?

एक बार फिर, जंगल में यीशु के साथ संघर्ष के विषय में जो कुछ पढ़ा वही मेरे

अपने आंतरिक संघर्ष की आधारशिला था. अपने पुत्रत्व को बनाये रखने के लिए मुझे किसके आदर्श का पालन करना चाहिए? क्या मुझे महान कार्य करने का प्रयास करना चाहिए या फिर मुझे पिता के शब्दों के ऊपर भरोसा करना चाहिए? एक बार फिर से निम्नलिखित कथन ने मेरे सामने यह प्रमाणित कर दिया.

> ''बहुत से लोग मसीह और शैतान के बीच [जंगल में] इस संघर्ष को ऐसे देखते हैं मानो इसका उनके जीवन से कुछ लेना-देना नहीं है; और इसमें कोई रुचि नहीं लेते हैं.किन्तु प्रत्येक व्यक्ति के हृदय क्षेत्र में यह संघर्ष दोहराया जाता है.'' *युगों की अभिलाषा,* पृष्ठ 116.

इस प्रक्रिया का सर्वोत्तम भाग सीधे-सीधे यीशु को देखना और जो कुछ उसने किया है उसकी नकल करने के बजाय, उत्तराधिकार के नियम का अर्थ यह है कि जो कुछ उसने किया है उसे वह सेंतमेंत में मुझे प्रदान करता है.

> वह जो भूख की शक्ति के साथ संघर्ष कर रहा है उसे परीक्षा के जंगल में उद्धारकर्ता को देखना चाहिए. उसकी पीढ़ा में उसे क्रूस पर देखिये, जब वह पुकारता है, ''मैं प्यासा हूँ.'' जो कुछ हम बर्दास्त कर सकते हैं, उसने सहन किया है. उसकी विजय हमारी विजय है. *युगों की अभिलाषा,* पृष्ठ 123.

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते समय मेरा हृदय आनन्द से भर गया. इतना बहुमूल्य प्रकाशन ! विश्वास के द्वारा उसकी विजय मेरी है. मैंने पहले भी अनेक बार इस सत्य से चिपकने की कोशिश की थी, किन्तु आत्मनिर्भर यीशु जिसकी मैं आराधना कर रहा था, इस बात को समझे बिना कि यह सब उत्तराधिकार में मिलता है, वह मुझे सत्य की चट्टान से दूर धकेलता रहा.

मनुष्य के पतन में पुत्रत्व का अधिकार खोने के द्वारा मूल्यहीनता को देखते हुए, अब मैं यह देखने लगा कि यीशु ने अपने बपतिस्मा के बाद जंगल में संघर्ष में जय पाने के

करने के लिए पुत्रत्व के अधिकार को कोने के सिरे के पत्थर के रूप में प्रयोग किया. उसने अपने पुत्रत्व को अपने पिता के वचन के अलावा किसी भी दूसरी बात पर आधारित करने से इनकार कर दिया. उसकी प्रत्येक प्रतिक्रिया केवल ''लिखा है'' कहने के द्वारा प्रगट होती थी, उसने कभी भी इस बात पर संदेह नहीं किया कि क्या वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था, न तो उसने शैतान द्वारा पेश किये गये संदेह पर प्रतिक्रिया व्यक्त की और न ही अपने पुत्रत्व को प्रमाणित करने के लिए अपनी सामर्थ्य और चमत्कार दिखाना ज़रूरी समझा.

इस बात की नई समझ प्राप्त करने के द्वारा कि यीशु ने हमारे लिए परमेश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में हमारी पहचान को किस प्रकार से प्राप्त किया, अब मैं इसी बात को एलिय्याह के संदेश में भी देखने लगा था.

> देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा. (6) वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ. मलाकी 4:5, 6.

एलिय्याह के संदेश का मन पिता के लिए उसकी संतानों का और पिता का बच्चों के लिए बदलनेवाला मन है. इस परिच्छेद ने मेरी अगुवाई की.

> बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता हैं. नीतिवचन 17:6.

और इसकी सारी महिमा एक मूल्य प्रणाली के साथ प्रकट हुई है जो दर्शाती है :

> यहोवा यों कहता है, बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; (24) परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है कि मैं ही वह यहोवा हूं, जो पृथ्वी पर करूणा, न्याय और धर्म के काम

करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं. यिर्मयाह 9:23-24.

सच्चे पुत्र की भाँति मुझे बुद्धि, बल और धन में महिमा करने की आवश्यकता नहीं थी; मुझे केवल यीशु के माध्यम से मेरे पिता की महिमा को जानने की आवश्यकता थी. मुझे सिडनी में एक श्रोता (दर्शक) के लिए इन सिद्धान्तों को प्रस्तुत करना, और खुशी को देखना स्मरण है कि कुछ लोगों ने चेहरों को पिता के राज्य की एक झलक को पाने के लिए जलाने की भाँति आरम्भ किया.

अगली सुबह, मैं गीत गाने की आवाज से जागा. मैंने अपने विचारों में प्रसिद्ध चार्ल्स वेस्ली के भजन में सुना.

और यह हो सकता है कि मैं हासिल करना चाहिए
उद्धारकर्ता के रक्त में रूचि?
मेरे लिए वह मर गया, जो उसका दर्द मेरे कारण था,
उसे मौत के लिए किसने अपनाया?
अद्भुत प्रेम! यह कैसे हो सकता है,
कि तू, मेरे परमेश्वर, मेरे लिए मरे जाता है?
अद्भुत प्रेम! यह कैसे हो सकता है,
कि तू, मेरे परमेश्वर, मेरे लिए मरे जाता है?

जैसे मैंने इन शब्दों पर मनन/चिन्तन किया, और पिता के लिए मेरे पुत्रत्व की निश्चितता और महिमा कि मेरा पिता स्वर्ग में सचमुच मेरी महिमा थी, मैंने प्रेम, खुशी और शान्ति की जबरदस्त अनुभूति को महसूस किया जो मुझ पर फैलाई है. प्रेम की अनुभूति जिस को मैंने महसूस किया था बहुत बड़ी थी कि मैं नहीं बता सकता जैसे खुशी के आँसू लिकल आए. मैं वास्तव में उस अनुभव को पूरी तरह वर्णन नहीं कर सकता.

मैं गहरे विश्वास में आ गया कि मुझे इसे दूसरों के साथ साझा करने की आवश्कता

थी. मैंने इस कीमती संदेश को साझा करने की सामर्थ के लिए प्रार्थना की थी कि क्या इसका अर्थ यीशु के माध्यम से है. मैं वहाँ बैठा था और संदेश के सभी पहलू को फिर से स्मरण किया जिन्हें मैंने इस प्रकार के छोटे से स्थान में सीखा था और क्या आशीष है वे मेरे जीवन में लाए थे, मैंने तो कुछ आश्चर्यजनक बातों के लिए अपने पिता और यीशु मसीह की आराधना की थी. यह सारा मधुर ज्ञान उस परमेश्वर का पुत्र के व्यक्ति के प्रकाश के माध्यम से आया था.

इस बिन्दु से मेरी तीव्र इच्छा थी कि जिस खुशी को मैंने पाया था उसे दूसरों तक आगे बढ़ाऊं/साझा करूं. लेकिन अभी भी वहाँ कुछ बातें थीं जो इसे आगे बढ़ाने का दवाब डाल रही थी जिन्हें मुझे सीखने की आवश्यकता थी जो सच में महापवित्र स्थान के अनुभव में प्रवेश करने के लिए सक्षम होगी.

***

द्वितीय अंतराल

भोर सन्नाटे में, मैंने उसके लिए प्रतीक्षा की. मेरा परमप्रिय तेजी से पहाड़ों पर, टेढ़े मार्गों पर चलता है जो सीधे हैं. हमारी सहभागिता मधुर है. उसने फुसफुसाहट कर मुझे अपने उत्तराधिकार में मिले खजाने के बारे में कहा; उसके शब्द मेरे होठों पर शहद की भाँति गिर रहे थे. उसके शब्दों का स्वाद मेरे लिए कितना प्यारा/मीठा है.

एक गहरे झरने की भाँति, मेरे परमप्रिय ने मेरे लिए जीवन के जल की पारदर्शी नदी को आगे उण्डेला है. इस जीवन के जल के स्वाद से आनन्द और अभी भी वहां कुछ बातें हैं जो मुझे हैरानकर रही हैं. मेरा प्रिय परमप्रिय ने मेरे मन की सुस्ती को छोड़कर ज्ञान की हर बूंद को लपकने के लिए तुम्हें मेरे लिए प्रदान/बताया किया है. कृपया मुझे मेरी सांस को पकड़ने दे, और शब्दों को इन आनन्दों के साथ आने के लिए अपने के लिए समय लें.

यदि केवल वे परमप्रिय को जानते, यदि वास्तव में मेरे देशवासी तुम्हें जानते ! तब वे जानते कि क्यों मैं तुम्हें इतना प्रेम करता हूँ, क्यों तुम्हारी सहभागिता इतनी मधुर है. मैंने अपने मन को अपनी धन्यवादी भेंटों में पुत्रत्व के माध्यम से पिता के सम्मुख मुझे मार्ग को दिखाने के लिए उण्डेल दिया. मैंने पिता के प्रेम को अपने मन में तुम्हारे लिए अनुभव किया. मेरे परम प्रिय मेरे पास तुम्हारे साथ सह–वारिस होने का प्रमाण है. आप पूरी तरह से स्नेही हैं.

मेरे परमप्रिय क्या आप मुझे महापवित्र स्थान को ले जाएँगे? मैं प्रवेश द्वारा को ढूंढ़ने की प्रतीक्षा में देर तक खड़ा हूँ, अभी तक शर्मनाक आँसुओं के साथ ठोकर खाई और गिरा हूँ. पहले आदम के पुत्र की भाँति प्रवेश द्वार को खोजने में कैसा अंधा रहा हूँ. मेरे परमप्रिय क्या आप ले जाएँगे? क्या आप मुझे महामहिम के गुप्त स्थान को ले जाएँगे? मैं जानता हूँ कि मैं अयोग्य हूँ लेकिन मेरे परमप्रिय मैं आप पर भरोसा रखूंगा जिसके लिए आप जीवन का मार्ग हैं.

> मैं अपने प्रेमी के लिए द्वार खोलने को उठी, और मेरे हाथों से गन्धरस टपका, और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गन्धरस बेण्डे की मूठों पर पड़ा. (6) मैं ने अपने प्रेमी के लिए द्वार तो खोला है, परन्तु मेरा प्रेमी मुड़कर चला गया था. जब वह बोल रहा था, तब मेरा प्राण घबरा गया था मैं ने उसको ढूंढ़ा, परन्तु नहीं पाया; मैं ने उसको पुकारा, परन्तु उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया. श्रेष्ठगीत 5:5-6.

***

खण्ड 3 – दो विचारों में लड़खड़ाना

11. शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष

यह बहुत निराशा हो रही थी. मेरे परम प्रिय के बारे में सारा यह अद्‌भुत ज्ञान, और अभी भी कितनी आसानी से विभिन्न माध्यमों से लुभानेवाले से लुभा सकता हूँ. स्वभाव ने मेरे बचपन का लाभ लिया था और जवानी ने मेरे मन में सुख के प्रेम, मनोरंजन और अभिलाषा की छाप लगाई थी. इस ने मुझे मेरे समुदाय, शिक्षा और प्रतियोगी खेल–कूद के प्रेम के माध्यम से आत्म–निर्भरता की भावना द्वारा प्रशिक्षित किया था.

जैसे मेरे प्रिय ने मुझे स्वयं के बारे में अधिक दिखा आरम्भ किया और मैं अधिक गहाराई से उसके साथ प्रेम में गिर गया, मेरे पुराने प्रेमी ने मुझे धरातल पर पकड़ कर रखना चाहा वह अभी तक मेरे में था और मेरे प्रिय से वापस लेने का प्रयास किया जो उस ने खो दिया था. यहाँ तक कि मैं ने यीशु को बहुत प्रेम किया मैं अपने शारीरिक (भोग–विलास) स्वभाव से कितना अधिक अनभिज्ञ था जिस ने अभी भी वर्चस्व का दावा किया था. गिरे हुए स्वभाव का सबसे बेकार भाग तर्क के साथ गलतियों को मिलाकर उपयोग अच्छे से गणना करने की विशेषताओं वास्तविक उद्देश्य और इच्छा को छिपाना है.

> अपनी भूल–चूक को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर.
> भजन संहिता 19:12.

> मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है? (10) मैं यहोवा मन को खोजता और हृदय को जांचता हूं ताकि प्रत्येक जन को उसके चाल-चलन के अनुसार अर्थात् उसके कामों का फल दूं. यिर्मयाह 17:9-10.

पवित्र स्थान में वचन पर जेवनार (भोज करने) के समय के दौरान मैं अपने पुराने जीवन से अनेक प्रलोभनों के साथ से आमने-सामने आया. एक समय मैं ने टेलिविजन पर मनोरंजन के विभिन्न रूपों को देखने की ओर कुछ समय के लिए आकर्षित होते हुए अनुभव किया. कई बार मैं इस में दिया और देखा गया, लेकिन अल्प समय के साथ में कहीं पर भी संतुष्टि नहीं पायी. मैं ने विजय के लिए प्रार्थना की, लेकिन अभिलाषाएँ लौट आयी. मेरी जवानी के वर्षों में, मैं धार्मिकता को प्रकट करने के लिए प्रेरित हुआ, जैसे मेरे साथियों के समूह में अनेक थे. इस ने मुझे अनेक प्रलोभनों/परीक्षाओं पर विजय को प्रदर्शित करने के लिए अनुमति दी थी, लेकिन यह एक भ्रम थी और यह परखना जानता था.

मेरे जीवन की अनेक विजयों को प्राप्त करने में कठिन परिश्रम हुआ था, मैं महापवित्र स्थान के आगे प्रवेश पाने की आशा में खड़ा था, लेकिन कुछ मेरे मार्ग को रोकरहा था और मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या था. दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य के मेरे अध्ययन ने मुझे दोषी ठहराया कि मध्यस्थता का कार्य शीघ्र बंद हो जाएगा, और केवल वे जिन्होंने अपने वस्त्रों को मसीह की धार्मिकता में श्वेत किया था नगर में प्रवेश कर पाएँगे. मैंने अपने कई साथियों को देखा जो अभी भी पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए अपने प्रयास में लगे थे, और उन्होंने सिखाया कि क्योंकि पापियों के लिए मसीह का महान प्रेम की वजह से, वह उन्हें क्षमा करेगा और अधिकार के माध्यम से उनके पापों को ढक देगा जब तक कि उसका द्वितीय आगमन हो. पाप पर विजय पाने के संबन्ध में शिक्षा देना मसीही परिपक्वता में से एक बन गया है.

बहुत से मेरे साथी क्या कहते हैं कि पवित्रशास्त्र में मैंने क्या पढ़ा जो परस्पर विरोधी

था, फिर भी मेरे अनुभव से संकेत मिलता है कि वे सही थे. मैं कैसे पाप पर विजय पाने में विश्वास करने का दावा कर सकता था जबकि मैंने इसी प्रकार का एक असंगत अनुभव किया था. क्या सही है जो मुझे जीवन में विजय की आशा प्रस्तुत करें जबकि मैं अपने आप इसे अनुभव से पाने में सक्षम नहीं था.

जब मैं प्रलोभन में गिरने को आया हूँ, मैं जानता हूँ कि मेरे पिता ने मुझे प्रेम किया है और क्योंकि यीशु के माध्यम से मैंने क्षमा पायी है, लेकिन हर समय मैं अपने मुक्तिदाता के साथ चलना और अपने लापरवाह शब्दों और विचारहीन क्रिया-कलापों से उसे घायल नहीं करना चाहता था जो अक्सर स्वार्थी होते थे. हाँ, परमेश्वर हमें क्षमा करता है, लेकिन पाप हमारे संबन्धों में अभी भी दर्द का कारण बनता है. बाइबल ने मुझ से वादा किया है कि मैं उन्हें दुख/चोट पहुंचाना रोक सकूं जो मेरे चारों ओर हैं, और अभी भी कैसे अक्सर मैं असफल रहा हूँ.

> अब तुम ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है. यहूदा 24.
>
> सो जब कि मसीह ने शरीर में होकर दु:ख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को धारण करके हथियार बान्ध लो क्योंकि जिस शरीर में दु:ख उठाया, वह पाप से छूट गया. 1 पतरस 4:1.
>
> जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करता : जो कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है. (7) हे बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उसी के समान धर्मी है. 1 यूहन्ना 3:6-7.
>
> इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं. 1 यूहन्ना 4:17.
>
> पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं. प्रकाशितवाक्य 14:12.

मेरा ज्ञानी और प्रेम करनेवाला मुक्तिदाता मुझे स्वाभाविक विवेक से उसके बारे में झूठ समझने का अनुभव कराता है जिस से मैं अभी भी चिपका हुआ हूँ. विरोध, सताव और मूर्तिपूजा की यह काल ने खोए हुए (लापता) टुकड़ों के लिए मेरी खोज को तेज किया था. हर समय मैं अपने पिता के सम्मुख घुटनों पर आया था और उसके साथ यीशु के माध्यम से बुद्धि समझ के लिए याचना की और मैं प्रकाश के निकट लाया गया था.

एक कल्पना कर सका कि यीशु के बारे में मेरा ज्ञान जैसे उद्धारकर्ता संसार के पापों के लिए पर्याप्त होगा और क्योंकि मुझे दूसरी बातों के लिए चिन्ति नहीं होना चाहिए. बिन्दु यह है कि परीक्षा (लोभ) अभी भी हर दिन आती है, और कामुक स्वभाव के भाव अभी भी लोगों को चोट पहुँचाते थे. सच्चाई यह थी कि यीशु के बारे में मेरा ज्ञान अभी भी उलझन में था. मेरे परमप्रिय की आवाज और परखने की आवाज अभी भी कुछ स्थानों पर मेरे मस्तिष्क को घेरे हुए थी.

मेरे आराधना करने और मेरे उद्धारकर्ता को ऊंचा उठाने के प्रयासों में, मैं अनभिज्ञता (अनजान) होते हुए भी इस आराधना के पहलुओं में सम्मिलित था. मैंने अनभिज्ञ होते हुए मसीह को एक उच्च आत्मनिर्भर संदर्भ में अनुभव किया था. यह अतिरिक्त बातें मेरे आत्मिक पूर्वजों से आयी थीं और साथ ही मेरे साथ एक स्वाभाविक प्रतिध्वनि हुई थी. आत्मनिर्भरता का स्वाद जिसके साथ मैं प्रेम में पड़ा था जैसे एक बालक और परखनेवाले स्वभाव के द्वारा प्रोत्साहित हुआ था, यीशु नाम का व्यक्ति जो मन में अन्त:स्थापित हुआ था जिसकी मैंने आराधना करने का दावा किया था.

मेरा यीशु के बारे में ज्ञान मेरे में इसके माध्यम से आया कि मुझे एक बच्चे की भाँति मेरे मित्रों और मेरी कलीसिया के द्वारा क्या सिखाया गया था. मुझे सिखाया गया था कि यीशु परमेश्वर है, और पिता परमेश्वर है, और आत्मा परमेश्वर है. मुझे सिखाया गया था कि वे सभी दिव्य और समान थे. इस समानता में मेरा संदर्भ स्वाभाविक रूप से आत्मनिर्भरता से उत्पन्न होता हुआ आभास हो रहा था. अन्तर्निष्ठ (निहित)

सामर्थ, योग्यता, और बुद्धि से हुआ लग रहा था. यद्यपि मैंने कभी प्रश्न नहीं किया कि कैसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा समान थे. मैंने सिर्फ इसका यह अर्थ मान लिया कि वे सभी सामर्थ और स्थिति में एक समान थे. संसार में यह क्या समानता है, और इस प्रकार मैंने सोचा कि यह परमेश्वर का मामला है. यह मेरे पर नहीं हुआ क्योंकि यह परमेश्वर तीन व्यक्ति थे जो सामर्थ में एक समान थे तब शब्दों का अर्थ स्वयं बदल जाएगा. शब्द पिता और पुत्र विशेष रूप से संघर्ष होगा उन्होंने क्या कहा. यदि पिता और पुत्र शक्ति, आयु और स्थिति में एक समान थे तब यह यह दूसरे व्यक्ति के लिए पहले व्यक्ति से आने में संभव नहीं होगा क्योंकि वह दूसरे व्यक्ति को पहले पर निर्भर या अधीन बनाएगा. सांप का हव्वा को झूठ बोलना घोषित करता है कि हम आत्म-निर्भर प्राणी हैं; यह हमारे बहुत स्वभाव में अंकित किया गया है और यह पीढ़ी दर पीढ़ी गुजरता गया है. परखने की आवाज को यह आत्मनिर्भरता की भावना ने मुझ में मेरे परिवार, शिक्षा और समुदाय के अनुभवों के माध्यम से वरण किया है. जब यीशु नाम का व्यक्ति मुझ में एक आत्मनिर्भर की भाँति विद्यमान था और अभी भी हमारे लाभ के लिए केवल अधीनता और आज्ञाकारिता को प्रदर्शित करता है, मैं इस के लिए गिर गया. दिव्य (ईश्वरत्व) का मेरा प्रत्यक्ष ज्ञान जैसे महाशक्तिशाली, महाप्रतापी, और महाआत्मनिर्भर इस त्रिएकत्व के सिद्यांत के साथ पूरी तरह से ठीक बैठ (उपयुक्त) गया था जो तीन शक्तिशाली प्राणियों को एक सहयोगी दिव्य परिवार की एकता के रूप में प्रस्तुत किया था.

मैं नहीं देख सका क्योंकि एक चतुराई के माध्यम से षड्यन्त्र रखा, वास्तविक परमेश्वर और उसका पुत्र एक झूठे परमेश्वर के साथ मिल गए थे जिस ने मेरी शारीरिक प्रकृति को आग्रह किया था. कई बार मैंने पिता और पुत्र के रिश्ते पर ध्यान केन्द्रित करूंगा और उनकी ओर निकलूंगा. तब मैं शक्ति और आत्मनिर्भरता के पहलुओं के पीछे की ओर जाऊंगा, और यह मुझे वास्तव में उसी प्रकार चलाएगा.

यह आत्मनिर्भरता की भावना (आत्मा) अनेक खेलों और चलचित्र के साथ एक राग आलापा है. जब मैं एक ओलम्पिक चैम्पियन देखता हूँ अपने पराक्रम (वीरता), कौशल, और दक्षता को सोने का तगमा जीतने के लिए प्रदर्शन करता है,

मैंने इसे इसलिए खींचा चला आया था क्योंकि मैंने जिस देवता के भाग की आराधना की थी, आत्मनिर्भरता के प्रदर्शन में शक्ति, कौशल और प्रतिभा प्रकट हुई थी. जब मैंने पुरूषों की ताकत के एक दल को देखा था उनके तरीके पुरूषों की एक दूसरी दीवार पर एक गेंद को रेखा पर रखा था, मैंने प्रदर्शन की शक्ति और प्रदर्शन की सराहना को महसूस किया था. इस ने मरे शरीर में एक तार को पूरी तरह से छुआ था. फिर भी यह भावना नम्र और अकेले यीशु के साथ युद्ध की स्थिति पर थी जिस ने हमेशा उन बातों को किया था जो उसके पिता को प्रसन्न किया था. उस ने स्वयं से कदापि नहीं किया था और विश्वास कर सारी बातों को अपने पिता के हाथों में छोड़ दिया. यह भावना मेरे लिए स्वाभाविक नहीं थी, लेकिन इसके मेरे साक्षात्कार के माध्यम से मेरे प्रिय के साथ थी, मैंने इस भावना का स्वाद लेना आरम्भ किया था और इसी प्रकार की भी इच्छा थी. यह मेरे में एक जबरदस्त संघर्ष का कारण था.

> क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधीहैं;इ सलिएर्ि कज ोत ुमक रनाच ाहतेह ोव हन क रनेप ाओ. गलातियों 5:17.

> मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा ? (25) हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं : निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं. रोमियों 7:24-25.

मेरे मन में युद्ध मसीह की दो विभिन्न समझों के मध्य था जिसे मैंने प्रेम किया था. मेरे बचपन का प्रेम आत्मनिर्भर, शक्तिशाली व्यक्ति जिस ने मेरे चारों ओर जो थे उनकी प्रशंसा और आदर को जीता था, की भाँति आवश्यक रूप से मेरे स्वयं का प्रक्षेपण था. दूसरा व्यक्ति नम्र और अकेला था जिस ने अपने पिता को प्रेम किया और उन सब पर भरोसा किया जो उसकी ओर से आया उसे अधिकार में लिया. उसके कौशल, क्षमता और योग्यता का बिना कोई लिहाज किए यह उद्धारकर्ता पिता द्वारा आसानी से आशीषित और प्रेम किया गया था क्योंकि वह उसके लिए आया था.

मैं मसीह के इन दो विचारों के बीच इस संघर्ष में बंद कर गया था क्योंकि त्रिएकत्व को सावधानीपूर्वक अभिव्यक्त किया गया सूत्र ने मेरे लिए उसे अलग से बताने के लिए इसे बहुत अधिक कठिन बना दिया था. वहां बहुत संख्या में सांस्कृतिक तत्व थे जो मेरी पहचान करने के अन्तर की कठिनाई को बढ़ा रहे थे. यह उन मुद्दों के लिए है जिन्हें हम अगली बारी है.

***

12. रूपान्तरित पहचान का नाटक

बड़ा दिन (क्रिसमस) का समय मेरे लिए हमेशा एक बच्चे की भाँति बड़े मजे का होता था. मुझे लोगों का सान्ता क्लांज की वेशभूषा धारण करना और शॉपिंग सेन्टर में बच्चों को उपहार देना स्मरण है जहां मैंने अपनी खरीदारी की थी. मुझे एक सब्बत स्कूल की कक्षा द्वारा जीवित रंगों के साथ खेलते चरणी में रखे बालक यीशु की कहानी भी याद है.

जब मैं बड़ा हुआ, मैंने चलचत्रि के सितारों को वेशभूषा पहने हुए और विदेशी (पश्चिमी) और शहरी नायक भूमिका अदा दिन की बचत करते देखा. मेरा बचपन और जवानी नाटक के साथ शराबोर (संतृप्त) किए गए थे. एक व्यक्ति का सम्पूर्ण विचार (योजना) को नैतिक बिन्दु बनाने के उद्देश्य से दूसरे व्यक्ति की घमण्डी पहचान मेरे जीवन का कपड़े का भाग बन गया. सैंकड़ों घण्टे देखने के उपरान्त लोग अर्थपूर्ण कहानी को बताने के क्रम में दूसरे लोगों की पहचान को मानते हैं, मैं इस धारणा के साथ मत-आरोपित किया गया था कि कैसे ब्रह्मांड काम करता है. मुझे यह नहीं सिखाया गया था, लेकिन बाद में मैंने इसे अपनी संस्कृति के माध्यम से पकड़ा.

लोगों को देखने की यह आदत अलग पहचान बना लेना भागने की एक खिड़की भी बन जाती है इस के माध्यम से मैं अपने आप को अधिक शक्तिशाली अस्तित्व सोच सकता हूँ इसकी तुलना में कि मैं ने वर्तमान में क्या हथिया लिया है. चलचित्र को देखना एक लत है जिसके द्वारा मैं स्वयं के सम्मान और ध्यान प्राप्त करने के की कल्पना के उद्देश्य के लिए दूसरी पहचान मान सकता हूँ और ध्यान मैं पाना चाहा है.

जैसे ही मेरा बचपन जवानी में बदला और मेरे बचपने की अभिलाषाएँ महसूस करने में कठिन, कल्पना की गई पहचान की खिड़की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के झूठ को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कारक बन गया. रहस्य था मेरी पहचान को उस व्यक्ति के साथ विलीन कर देना जिसका मैंने अनुकरण करना चाहा. मेरे बचपन के पहले प्यार को संवारने के माध्यम से मेरी पहचान के आत्मसमर्पण के द्वारा खिड़की जिसमें शक्ति आयी. मुझे कभी महसूस नहीं किया कि इस प्रक्रिया को मेरी पहचान का खर्च आएगा और चलचित्रों ने बनाया

त्रिएकत्व काल्पनिक पहचान का नैतिक उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण अभिव्यक्ति था; तीन व्यक्तियों ने उद्धार के बारे में एक उच्च नैतिक कथन को बनाने के उद्देश्य से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की भूमिका की कल्पना की थी. यह मेरे दूल्हे के नाटक (अभिनय) के साथ पूरी तरह अनुरूप था. एक बार पुनः प्रतिध्वनित हुआ था, क्योंकि यह सांस लेने की भाँति स्वाभाविक था.

इसी भाँति मैंने नहीं देखा था कि एक कल्पना (मान ली गयी) की गई कौन व्यक्ति है, पहचान घाटे और भ्रम (संदेह) का कारण थी, इस प्रकार मैंने नहीं देखा कि विश्वास करने में क्योंकि तीन दिव्य प्राणियों की दूसरी पहचान कि वे कौन थे वास्तव में घाटे का और उलझन का कारण बनी थी. यह परमेश्वर का रहस्य बन गया! यह सभी मेरे स्वाभाविक मन–मस्तिष्क के लिए (अनुभूति) अर्थ बने थे.

इसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि हव्वा से बोला गया मूल (केन्द्रीय) झूठ एक प्राणी के माध्यम से प्रस्तत किया गया जिस ने स्वयं की दूसरी पूर्ण रूप से

अलग पहचान रूपान्तिरित की थी. हमें लगता है कि कभी भूल नहीं करते कि आदम से हमारा मानव स्वभाव रूपान्तरित पहचान के माध्यम के द्वारा ले जाए गए आत्म-निर्भरता के एक संदेश के साथ अंकित किया गया है.

यह संदेश आगे मेरे सोचने में रूपान्तरित महान नायकों जैसे सुपरमैन, स्पाइडरमैन, और अन्य को देखने के द्वारा छाप लगी है. ये चरित्रों में आन्तरिक शक्ति थी क्योंकि उन्हें उपयोग किया जा सका जब वे रूपान्तरित हुए थे. इन शक्तियों को सामान्यत: नैतिक उद्देश्य और समाज की भलाई के लिए उपयोग किया गया था. महत्वपूर्ण/मूल सिद्धान्त बदली हुई (रूपान्तरित) पहचान के माध्यम से आन्तरिक शक्ति तक पहुंचने के लिए विकसित किया गया था. बार-बार यह पाठ (सबक) मेरे लिए दोहराया गया था. मेरे स्वर्गीय पिता के सम्मुख प्रार्थना करने और घुटनों पर गिरने के बजाय, मैंने दिखाया था कि वास्तविक नायक स्वयं को बदलने के द्वारा अपनी आन्तरिक शक्तियों का आह्वान किया था. एक बार फिर, मैं आत्म निर्भरता की बदलनेवाली भावना से आत्मसात किया गया था.

मेरी आरम्भिक किशोरावस्था के दिनों में मैं आत्म-निर्भरता के परिवर्तनकारी दूसरे तरीके के संपर्क में आया था. जार्ज लूकस द्वारा लिखित ''*सितारा युद्धों की श्रृंखला*'' में इसके श्रेष्ठ नायकों को ध्यान के स्वामियों के रूप में प्रस्तुत किया था. एकाग्रता की कला और आन्तरिक भावनाओं का अनुसरण, एक युद्ध में महान असाधारण कार्य का प्रदर्शन कर सकता है और हर किसी की प्रशंसा को जीत सकता है जिन्होंने उन्हें देखा है. यह पूर्वी रहस्यवाद से मेरा सूक्ष्म परिचय था.

इस प्रकार इन सभी कारणों के लिए मैंने अपने आप को अक्सर टेलिविजन के पास मेरे बचपन के देवता के व्यवहार में संलग्न करने के लिए खींचा पाया था और वह एक परिवर्तनकारी पहचान के माध्यम से आत्मनिर्भरता के झूठ को प्रोत्साहित (बढ़ावा देने) करने के लिए था. मैं अपने आप को चलचित्र के केन्द्रीय चरित्र (पात्र) की भाँति कल्पना करता और उस शक्ति को महसूस करता जिसे उस ने प्रदर्शित किया था. जब तक मैं एक देवता की आराधना करना जारी रखा कि

परावर्तनकारी आत्मनिर्भर में संलग्न पाया, मैं सच में मेरे चलचित्रों (सिनेमा), खेल और काल्पनिक कहानियों के प्रेम को नहीं भूल सका.

टेलीविजन से मेरा प्रशिक्षण के लिए एक दूसरे पहलू का दर्शन था जो विपरीत आकर्षित करता था. समस्त श्याम/श्वेत, यिन/यांग कथा को एक प्रेम कहानी के माध्यम से बाहर खेला गया था, लगातार विपरीत प्रसंगों को प्रदान किया जिसमें अधिक से अधिक शक्ति, खुशी और संतुष्टि के लिए एक विलय था. इस प्रशिक्षण ने शक्तिशाली, आत्मनिर्भर स्वर्गीय यीशु को विलय करने के साथ विनम्र, विनीत और आज्ञाकारी आराधना की एक वस्तु में सांसारिक यीशु के लिए एकदम सही पृष्ठभूमि प्रदान की थी.

जैसा कि मैंने पीछे नजर डाली अब मैंने देखा कि समाज के प्रति मेरे बचपन के माध्यम से मेरा अधिक प्रदर्शन त्रिएकत्व के देवता को किसी की भाँति स्वीकार करने के लिए मुझे तैयार करने को एक कार्यरूप को आकार दिया था जो स्वाभाविक, प्रत्यक्ष और निर्विवाद था. देखते रहने के महत्व के अन्दर आत्मनिर्भर भावना के द्वारा इन तीन महान प्राणियों की तस्वीर पूर्ण रूप से मेल खाती है जो स्वयं पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के चरित्र में रूपान्तरित हो चुके हैं.

मेरे परमप्रिय का चरित्र जिस ने अपने पिता में विश्वास किया और हमेशा आज्ञापालन किया, भरोसा किया, और उसकी ओर देखा मिलाया गया था और मेरी आत्मनिर्भरता की विविध तस्वीरों के द्वारा निगल गया, उस में देखने और दिव्य शक्ति में रूपान्तरित हो रहा है.

कितनी आसान बात हो गयी होती यदि मैं इन वचनों को समझ सकता:

> यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है. इब्रानियों 13:8.

तब पुन: बहुत सी बातें आसान होती यदि मैं स्पष्ट रूप से बाइबल को पढ़ पाता.

अभी तक एक बार फिर, मेरा पालन-पोषण और विद्यालयी शिक्षा ने मुझे ऐसा करने से अभी भी रोकने के लिए मेरी आंखों पर परत (पट्टी) रखी है.

***

13. दिमाग़ के खेल

एक दिन जब मैं विद्यालय में अपने साथियों के साथ खेल रहा था, तो किसी ने मुझे बहुत नम्रतापूर्वक बाहर बुलाया, ''ऐड्रिन! तुम्हारी पतलून फटी है.'' मेरा दिल दौड़ने लगा जैसे ही मैं यह खोजने के लिए तेजी से मुड़ा कि चीरा कहाँ है. तब मैंने हँसने का एक सामूहिक स्वर इन शब्दों के साथ सुना, ''गेचा!'' अर्थात् पकड़ लिया. मसखरों के संसार में तुम्हारा स्वागत है. अक्सर मेरे जीवन में वार बचाने का खेल और गोलाबारी के ये तीर धोखा बने हैं.

> जैसे एक पागल जो जंगली लकड़ियां और मृत्यु के तीर फेंकता है, वैसा ही वह भी पागल होता है जो अपने पड़ोसी को धोखा देकर कहता है, कि मैं तो ठट्ठा (मजाक) कर रहा था. नीतिवचन 26:18-19.

यह पकड़ा जाना लज्जाजनक था और सारी कक्षा के बच्चे मुझ पर हंस रही है. मेरी ओर ताकती कक्षा के अनुभव ने मुझे सिखाया कि कभी कमजोर नहीं होना है, किसी पर भी भरोसा नहीं करना है और सबसे महत्वपूर्ण, सतर्क/सावधान रहें जो कुछ भी लोग कहते हैं उसे गम्भीरता से नहीं लें.

मज़ाक करने का सर्वाधिक आधारभूत तत्व विपरीत कि क्या सच है, भोले-भाले का खींचने की अवस्था रही है. नीरस मानसिक वाला व्यक्ति को एक हंसी लाने के लिए भ्रम की अवस्था में डालना. मेरे बचपन के दिनों में, मैं इस छल, धोखे, भ्रम और मनोरंजन की भावना शब्दों को मरोड़ना किसी दूसरे अर्थ के लिए ताकि वे पूरी तरह से अर्थ निकालें. यद्यपि पहली बात है कि मेरा परमप्रिय ने मुझे मेरे परिवर्तन के बाद के बारे में अपराधी ठहराया था मेरा क्या मतलब है है कहने का सिद्धान्त था.

> परन्तु तुम्हारी बात हां की हां, या ना की ना हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है. मत्ती 5:37.

महापवित्र स्थान के आंगन में चोर दरवाजे[4] (छोटा फाटक) से मेरे प्रवेश को रोकने के लिए इन धोखे के तीरों ने अपनी भूमिका निभायी. मुझे वास्तव में इस विषय पर धोखा हुआ था जब मैंने उस मजाक को सिखाया था जो झूठी गवाही को सहने का एक अवस्था थी और इस प्रकार नवीं आज्ञा का उल्लंघन है.

> तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना. निर्गमन 20:16.

मैंने यह एक बात भी सीखी कि यीशु के अनुयायियों को छल-कपट व्यवहार में लाना छोड़ना चाहिए.

> और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दु:ख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो. 1 पतरस 2:21.

---

[4] ''इस फाटक से थोड़ी दूरी पर वहाँ यह मजबूत महल खड़ा है, जिसका बीलजुबेबुब (शैतान) कप्तान है: वहाँ से वह और वे दानों उसके साथ हैं, उन पर तीर मारते हैं जो इस फाटक पर आते हैं, अगर वे खुशी से मर सकते हैं तो इससे पहले कि वे में प्रवेश कर सकते हैं. फिर/तब मसीही ने कहा, मैं आनन्दित और थरथराया हूँ.'' *पिलग्रीम्स प्रोग्रेस* दूसरा चरण

> ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैं : ये वे ही हैं कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, ये उसके पीछे हो लेते हैं : ये तो परमेश्वर के निमित्त पहले फल होने के लिए मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं. (5) और उनके मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं. प्रकाशितवाक्य 14:4-5.

छल को परिभाषित किया गया है :

> फंसाने के लिए; तुलना (जी1185); एक चाल (ललचाना), वह है, (प्रतीकात्मक) छल-कपट :-शिल्प, छल, कपट, धूर्त्तता.

मेरे लिए क्या रूचिकर है कि स्थान जहाँ मैंने इस आत्मा को अनुभव किया. सबसे अधिक सेवकाई के लिए मेरे सेमिनरी के प्रशिक्षण में मैंने पाया यह एक लगातार संग्राम (युद्ध) है. मजाक की कला के माध्यम से हँसने की आत्मा से निकलना नहीं है. मैंने ईमानदारी से सहायता के लिए प्रार्थना की थी कि इस व्यवहार/अभ्यास में संलग्न नहीं हुआ.

जब कभी मैंने मेरे सुझाव को बाइबल अनुच्छेद को पढ़ने का संकेत के तिरस्कार ने अक्सर मेरे कानों का स्वागत किया था.

बहकानेवाला प्रलोभक का मजाकिया के रूप में मेरा परिचय मुझे शब्दों की बहुत आसान से सराहना नहीं खिाखाता है और छिपे हुए अर्थ को देखने के लिए हँसी-मजाक मेरे प्रलोभन मूल सिद्यांत सिकन्दरिया के रूपक संबन्धित बाइबल अध्ययन की विधि. शब्द का सही अर्थ साहित्यिक पढ़ना (रट्टा लगाना) नहीं है. मजाक एक तरफा दिमाग का खोल है जो मेरे बाइबल पढ़ने को प्रभावित करता है औरे परमप्रिय की सच्ची पहचान है.

टेलीविजन के सिखाने की विधि आसान कहानी ने मुझे सिखाया सामानांन्तर वास्तविकताओं के विचार (संकल्पना) मेरे जीवनके अलग समय में मैं टेलीविजन कार्यक्रमों के लिए प्रदर्शित (प्रकट) हुआ था. जो प्रदर्शित परिवार शिष्टता बातें बड़े ठीक ढ़ंग से/काम चलाऊ करती हैं. ये कार्यक्रम धारावाहिक/श्रृंखला कार्यक्रम थे, अर्थ वे साप्ताहिक आते थे या पात्रों के साथ परिचित होता और उनके साथ पहचान शुरू कर लेता. ये पात्र मेरे जीवन को इतना अधिक भाग बन जाते जिन्हें मैं अक्सर उनके मध्य में स्वयं को कल्पना करता, संबन्ध के बारे में बातें बन जाती के साथ लेन–देन (व्यवहार) था और कई बार तो सपना भी यहाँ तक कि इनके बारे में होता मेरे संसार की भाँति.

ये धारावाहिक कार्यक्रम मानसिक कदम के लिए अनुमति देते विभिन्न वास्तविकता के बारे में से. फिर भी किसी भी समय मैं इन वास्तविकताओं में कदम उठा सकता था. उसी क्षण के लिए, जब कुछ देख रहा हूं जो कि डरावना था, मैंने स्वयं को बताया, ''यह केवल एक चलचित्र (सिनेमा) है.''इस अभ्यास ने मुझे अनुमति दी समानांन्तर वास्तविकता को भावनाओं (संवेदना) करने की सभी अनुभव दिए, और तौभी मैं उस से (ऊपर) हो सकता था जब यह असहज (असुविधाजनक) बन जाते. जबकि यह प्रक्रिया बहुत शक्तिशाली थी इन धारावाहिक कार्यक्रमों में, यह किसी चलचित्र के लिए भी समान थी. लोगों का यह दृश्य और ध्वनि का उपयोग वास्तविक जीवन की गतिविधियों में व्यस्त था, आभासी संसार को सृजित किया जो मुझे मेरे अपने से परे बाहर खींचा था.

विषय सूची की लापरवाही समानांन्तर जीवन की प्रक्रिया और सृजित वास्तविकता मार्ग (तरीके) कोप्रभावित करती है जब बाइबल को पढ़ा. यह एक सम्पूर्ण कार्यक्रम को लिटाया यीशु के चले जाने पृथ्वी के मानव की भाँति एक समानांन्तर वास्तविकता में. उन्होंने पृथ्वी पर कैसे प्रदर्शन किया था यह वास्तविकता नहीं कि वह कौन था. वह निर्भर/आश्रित नहीं था, वास्तव में डूबा था उद्देश्य के लिए नैतिक वतव्य बनाने का. यह चलचित्रों की भाँति समान था जो मैंने देखी थी. इन में से अनेक ने कुछ प्रकार के वकत्वय से मुझे बनाने का प्रयास किया. मेरे स्वयं की

वास्तविकता के समानांन्तर के माध्यम से.

इस समानांन्तर विमता का एक सबसे मुख्य सामान्य अनुभव होता है ''यह केवल अवतार के दौरान था.'' समानांन्तर वास्तविकता की शैतानी संयोजन और पहचान का रूपान्तरण इस प्रकार का सोचना बड़ा आसान है. मेरे बाइबल पढ़ने का प्रदर्शन निम्न के समान और स्थान उन्हें समानांन्तर वास्तविकता जो कि आवश्यक परिकल्पना है.

> इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच-सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते हुए देखता है, क्योंकि जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है. यूहन्ना 5:19.
>
> क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखें. यूहन्ना 5:26.
>
> और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें. यूहन्ना 17:3.
>
> पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, (2) इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है. (3) वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है : वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिम के दाहिने जा बैठा. (4) और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया. इब्रानियों 1:1-4.

जब कभी मेरा ध्यान (मानस) दोषी (अपराधी) हुआ कि ये पद सच में पूरी तरह से पढ़े जाने चाहिए, मेरी समझ थी कि यीशु अपनी आत्मनिर्भर शक्ति के द्वारा अपने पिता के साथ बराबर था जिसे इन उद्धरणों (विषय) को समानांन्तर काल्पनिक

वास्तविक नैतिक वक्तव्य (कथन) में बनाने के उद्देश्य के लिए रखना चाहिए. मैं ने स्वत: ही इसे यहाँ तक कि अहसास किए बिना किया. मेरा मन सालों तक इस तरीके से कार्यक्रम बनता रहा था, और सारा प्रशिक्षण तीन में एक देवता जिसे त्रिएकत्व कहा जाता है, से मेरे पलायन (भागने) को रोकने के लिए पूरी तरह से सही किया गया था.

किसी भी समय जब हम चलचित्र (सिनेमा) या किसी सी प्रकार की धरावाहिक कहानी, बेकार सामग्री, देखते हैं, हम समानांन्तर वास्तविकता के लिए कार्यक्रम बनाना तैयार करते हैं जिसे किसी भी समय पहुँचा (लगाया) या छोड़ा/रोक लिया जा सकता. यहाँ तक कि चलचित्रों के प्रारूप में प्रस्तुत की गयी सच्ची कहानियां यह प्रभाव सृजित कर सकती हैं, क्योंकि नायकों का आवागमन (गतिविधि) और अवलोकित किया गया पारस्परिक प्रभाव अपने आप ही यह समानांन्तर वास्तविकता सृजित करता है और हमें इस में प्रवेश करने की अनुमति देता है.

यह बाइबल की कहानियों को पढ़ने से बिलकुल अलग है और परमेश्वर की आत्मा को हमें प्रभावित करने की अनुमति देना जैसे कि उसका क्या अर्थ है. जब हमें बाइबल को शब्दिक रूप से (यथार्थ में) पढ़ना सीखते हैं और धर्मशास्त्र की सीमाओं के पीछे नहीं जाते, हम कहानियों से सबक खींच (ले) सकते हैं, लेकिन हम समानांन्तर वास्तविकताओं में प्रवेश नहीं करते जो हमारे अपने को छोड़ने के कारण बनते हैं. अनेक बार चलचित्र (सिनेमा) देखने के बाद, बताई गई कहानी का संकेत जिस ने मुझे अलग वास्तविकता से प्रवेश किया था जिस से मैं अक्सर भ्रम की अवधि के लिए होता जब मैं वहां था, यह क्या समय था, और आगे मुझे क्या करना चाहिए.

मुझे एक विशेष चलचित्र (सिनेमा) स्मरण है जिस ने मुझे तरन दिन तक उस अवस्था में छोड़ दिया. मैं केवल समानांन्तर वास्तविकता में जीवन जीता था और इस से बाहर नहीं निकल पाया था. दृश्य मेरे मन में अधिक से अधिक चलते होंगे, और मैं बार बार इन सभी भावनाओं के माध्यम से गुजरता रहा. यह प्रक्रिया बाइबल

स्पष्ट और सरलता से पढ़ने से बिलकुल अलग है. हम अपनी वर्तमान वास्तविकताओं और परिस्थितियों की पटरी (पगडण्डी) को नहीं खो देते हैं. हमारा मन एक सेकण्ड में पच्चीस और तीस छवियों के साथ बमबारी नहीं करता है, सूचना के भार और मन पर भार के कारण इसके चारों ओर सब कुछ जाने के लिए मजबूर कर देते हैं. यह विध्वंसक का कार्य है.

जो लोग चलचित्रों (सिनेमा), टीवी श्रृंखलाओं, धारावाहिक कार्यक्रमों की अभिलाषा को तोड़ नहीं सकते हैं और तथा–कथित सच्चाई टीवी शो से बाइबल को शाब्दिक तरीके से बिना विषय को समानांन्तर वास्तविकता की ओर आए इसे ढूंढ़ पाना लगभग असंभव होगा. इस फिल्मों की सबसे खराब बात वह है जो स्वयं यीशु को चित्रित कर रहे हैं. भ्रमित होने का स्तर इस प्रकार की समानांन्तर वास्तविकताओं से सृजित किया गया है, आइए इस त्रुटि को अकेले लें जो पटकथा में प्रकट हुई है और प्राय: अभिनेताओं की विषयासक्त (कामुक) जीवन शैली बेहिसाब होती है.

आप सोचते होंगे कि ये कारक अकेले पर्याप्त होंगे, लेकिन मेरा भी इस समानांन्तर वास्तविकता की अद्भुत घटना के साथ सामना हुआ था, विभिन्न कम्पयूटर खेलों के साथ वैसे ही जैसे ख़जाना खोजना, खोज और कार्य आधारित खेल और विशेषकर कार दौड़ाने के खेल जो स्तरों के माध्यम से गुजरने के द्वारा शामिल होना होगा जो मुझे समानांन्तर वास्तविकताओं में ले जाते हैं उस समान तरीके से जो फिल्में करती हैं. खेलों को खेलने में घंटों खर्च करने के उपरान्त, मैंने भ्रम की संक्षिप्त भावनाओं को पाया जैसे कि वास्तविकता क्या है. मुझे अच्छी तरह भावना स्मरण है जो खेल को जीतने के उपरान्त और इसके सारे चरण पार करने के बाद अनुभव होती है. मैंने उत्साहित होने की भावना अनुभव की जो तब उदासी के प्रकार का तरीका देती है जो बीत गया था. मजाक[5] का सिद्धान्त (नियम), फिल्मों, खेलों और टेलीविजन पर आधारित कहानियों के परिचय के साथ जुड़ा हुआ था, मुझे मेरी वास्तविकता से बाहर निकालकर दूसरी में भेजता रहा.

यह धोखेबाज को जोड़ने में महान महापवित्र स्थान से मुझे दूर रखने में मेरे परमप्रिय के साथ अनुभव में मूल औजार बने. ये सभी बातें मुझे सुसमाचार की वास्तविकताओं को रेत की नींव के पर बने ताश के पत्ते के घर से पलटने के लिए थी. मेरे पालन–पोषण के हर भाग को सावधानीपूर्वक कार्यक्रम को मेरे सोचने से दूर गिनाया था क्या मेरे परमप्रिय ने मुझे बाइबल के बारे में बताने का बहुत जरूरी प्रयास करता रहा था.

***

[5] इन सिद्धान्तों का वहां शाब्दिक अर्थ अपमानित रहा है और अक्सर जहां एक विपरीत अर्थ इसके पक्ष में है.

14. ताश के पत्तों का घर

मैं स्मरण करता हूँ पहली बार के समय को जब प्रकाश मेरे मन में आया, और मैंने देखना आरम्भ किया कि थियोलॉजियन (धर्मविज्ञानी अर्थात् धर्मशास्त्री) कैसे इस प्रकार के बेतुके (निरर्थक) वक्तव्य (कथन) बना सकते हैं. वर्षों तक यह मेरे लिए हैरान करनेवाली पहेली था कि कैसे लोग हैं जो बाइबल के दावे शाब्दिक छः दिन के क्रमिक सृजन का वे इनकार कैसे कर सकते हैं, कैसे सब्त (विश्राम दिन) का इनकार या विश्वास कर करते हैं और विश्वास कर सकते हैं कि लोग सीधे स्वर्ग जाते हैं जब वे मर जाते हैं. अभी भी, एडवेंटिस्ट (पुनरागमनवादी) शिक्षाविदों की ओर से दिए गए वक्तव्य (कथन) इतने बदत्तर थे जो महापवित्र स्थान में यीशु के खोजबीन के कार्य और पृथ्वी पर उसके आने से पहले पाप से शुद्धिकरण का इनकार करते हैं.

मैं दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर व्याख्यान में बैठा हुआ था. यह एक तथ्य के रूप में नहीं कहा गया था बल्कि केवल सुझाव दिया गया था कि अध्याय 7

में दानिय्येल ने क्या दर्शन (स्पप्र) देखा जो अलंकार (रूपक) था. अलंकार (रूपक) का अर्थ है:

बोलने की एक आकृति (तस्वीर) जिसमें एक शब्द या वाक्यांश (कथन) कुछ करने के लिए प्रयोग किया जाता है **जो यह अक्षरत: (पूरी तरह से) लागू नहीं करने** के इस क्रम में की एक समानता के लिए सलाह देना है,...[6]

जैसे ही मैंने दानियेल अध्याय 7 की कल्पना के विचार को एक अलंकार के रूप में प्रस्तुत करने के लिए चुना, मैंने इसके आधार को खुलता हुआ महसूस किया, और विश्वास की समग्र/सम्पूर्ण एडवेंटिस्ट (पुनरागमनवादी) प्रणाली (व्यवस्था) को दूर बहा दिया था.

सुझाव था कि दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य पूरी तरह से प्रतीक चिन्हों (संकेतों) से भरे थे और क्या जो दानिय्येल ने देखा मनुष्य के पुत्र से संबन्धित जैसे पुराने (प्राचीन) दिनों में आना भी एक चिन्ह था. वहां इस दलील (विषय) के लिए एक तर्क था. इसके बोलने के कारण सहित है, लेकिन अनुसंधान से मैंने किया था, यह एडवेंटिस्ट (पुनरागमनवाद) के सिद्धान्तों को (एक रूपक/अलंकार का उपयोग करने के लिए) ताश के पत्तों की छत में पलट (बदल) देगा जो बालू रेत की नींव पर सीधे अगली एक खराब रेखा है.

अलंकार (रूपक) का प्रयोग बाइबल में अनेक स्थानों पर अस्तित्व में हैं. प्रश्न है जब हम एक अलंकार (रूपक) के रूप में कुछ ध्यान करते हैं जहाँ अर्थ वस्तुत: नहीं लिया जाता, और जब हम ने पाठ को शाब्दिक अर्थ के साथ स्पष्ट पढ़ने के लिए किया?

अग्रगामी पथ प्रदर्शन पुनरागमनवादी सोचते हैं कि कुछ साधारण नियमों को कब्जे

[6] www.dictionary.reference.com

में लिया था और एक जिसने इस मामले की अवस्था को बताया:

यदि हम बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार करते हैं तब हम स्वीकार करेंगे कि यह शाब्दिक रूप से क्या कहती है यदि यह अच्छे आशय से बनाती है जैसे यह खड़ी और प्रकृति के सामान्य नियम के लिए हिंसा नहीं है अन्यथा इसे संकेतात्मक (प्रतीकात्मक) समझा जाना चाहिए. उदाहरण के लिए, जब यीशु ने कहा 'मैं द्वार हूँ,' तो स्पष्ट रूप से यह एक प्रतीक का अर्थ है जिसे व्याख्या की आवश्यकता है. 'द्वार' को किसी तक पहुंचने के बिन्दु के रूप में समझा गया है और इस प्रकार हम प्रतीक/संकेत (चिन्ह) के अर्थ को पहचान लेते हैं.

> **नियम 11 (ग्यारह).** कैसे जानें कि जब एक शब्द का लाक्षणिक/अलंकारिक रूप से प्रयोग किया गया है. यदि यह अच्छे आशय में बनता है जैसे यह स्थिर है, और प्रकृति के साधारण नियमों के लिए हिंसक नहीं है, तब इसे शाब्दिक रूप से समझा जाना आवश्यक है, यदि नहीं, तो लाक्षणिक रूप से.[7]

एक अलंकार (रूपक) की केवल तभी शक्ति होगी जब यह शाब्दिक सच्चाई से जुड़ा होता है. यदि आप आधार लेते हैं और इसके लिए एक प्रतीकात्मक समझ लागू करते हैं, तो सम्पूर्ण व्यवस्था ढह (गिर) जाएगी, क्योंकि वहाँ अलंकार के लिए बनाने को कुछ भी ठोस नहीं है. बाइबल की पद्धति (तरीका) है शाब्दिक शब्द को स्वीकार करने के लिए पहले यदि यह ''प्रकृति के सामान्य (साधारण) नियमों के लिए कोई हिंसा नहीं है'' यह रेत पर हमारी नींव के पलटने के विरूद्ध हमारा सुरक्षा कवच है.

कुछ करने के लिए एक अलंकार के प्राकृतिक/व्यावहारिक प्रभाव को लागू कर सकते हैं जिसे शाब्दिक रूप से समझ सकते हैं का एक विपरीत अर्थ है. अलंकार

---

[7] विलियम मिल्लर्स 'रूल्स फॉर बाइबल इंटरप्रीटेशन'

को प्रयोग (लागू) करने का यह छोटा उपकरण शाब्दिक रूप से परिच्छेद को समझने के लिए मजाक करने और विपरीत आकर्षण (लिंग) में प्रशिक्षण के लिए मेरे बचपन के सारे आनन्द को सुलगाया था. इन मृत अलंकारों ने मेरे लिए समानांन्तर वास्तविकताओं में प्रवेश के लिए विपरीत अर्थ के साथ एक द्वार (दरवाजा) उपलब्ध करवाया था. मैं ने एक व्याख्याता के वर्णन करने को स्मरण किया कि कैसे बाइबल जीवित आई है जब वह अलंकार (रूपक) की शक्ति को समझ लेती है.

सबसे सरलतम उदाहरणों में से एक है कि कैसे अलंकार का उपयोग किया जा सकता है जो कुछ सब्त (विश्राम दिन) के संबन्ध में क्या कहा गया है से विपरीत दिखाई देते हैं.

बाइबल कहती है:

> तू विश्राम दिन (सब्त) को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना. निर्गमन 20:8.
>
> यदि हम शब्द 'सब्त' (विश्राम दिन) को ले और इसे 'विश्राम' अर्थ दे, तो हम दिखा सकते हैं कि यीशु हमें कहने के द्वारा कैसे विश्राम देता है.
>
> हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा. मत्ती 11:28.

सारांश प्रस्तुत किया गया है कि जैसे यीशु हमारा विश्राम (शरण) है, वह विश्राम की आवश्यकता को पूरा करता है. हम मसीह में विश्राम पाते हैं, और जैसे हम उस में विश्राम करते हैं हम आत्मिक रूप से यह आज्ञा पूरी करते हैं. यह प्रक्रिया शाब्दिक शब्द 'सब्त' को यीशु के उद्धार में विश्राम करने के लिए अलंकार में बदल जाती है. फिर भी यदि हम शाब्दिक व्याख्या के लिए विधि का उपयोग करते हैं, तो पहले हम इसे खोजते हैं जिस ने एकदम सही अभिप्राय (अर्थ) बनाया जैसे लिखा गया है,

इस प्रकार हम अलंकार के अर्थ को रोकते हैं वह उस वक्तव्य (कथन) को कहता हुआ दिखाई देगा कि उसके विपरीत क्या आज्ञा दी गई थी.

यदि हम दानिय्येल अध्याय 7 की ओर मुड़ते हैं तो हम अनेक चिन्हों को परिचित कराते हैं. इन चिन्हों के अर्थों के बारे में अनुमान करने की तुलना में, वहाँ एक अन्य महत्वपूर्ण नियम है और वह धर्मशास्त्र अपने आप में ही दुभाषिया होना चाहिए. यदि हम परमेश्वर के वचन को हमारे शिक्षक के रूप में ग्रहण करते है, तो हमें इसका विषय होना चाहिए बल्कि इसके विपरीत यह हमारी इच्छाओं को इसे एक निश्चित तरीके से पढ़ने के अधीन किया जाता है.

> **नियम 5 (पाँच) :** धर्मशास्त्र स्वयं इसका स्वयं प्रदर्शन करनेवाला होना चाहिए, जब से यह अपने आप नियम है. यदि मैं इसे मुझे समझाने के लिए इसे मुझ पर व्याख्या/समझाने के लिए निर्भर रहूं, और वह इसके अर्थ का अनुमान लगाएगा, या इस प्रकार सांप्रदायिक महत्व का अपने हिसाब के कार्य के लिए इच्छा करे या विचार के अनुसार, तब उसका अंदाज लगाना, इच्छा, धर्म या बुद्धि मेरा नियम है, न कि बाइबल.[8]

दानिय्येल 7 में, वहाँ शेर, रीछ (भालू), और जंगली पशुओं के अर्थ का अंदाजा लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है, बाइबल हमें बताती है कि उनका क्या अर्थ है.

> उन चार बड़े-बड़े जन्तुओं का अर्थ चार राज्य हैं, जो पृथ्वी पर उदय होंगे. दानिय्येल 7:17.

दानिय्येल को दिए गए इस दर्शन के केन्द्र में एक महान न्याय का अवलोकन है और दो प्रमुख आकृतियों को प्राचीन दिनों और मनुष्य के पुत्र के रूप में वर्णित किया गया है. यहाँ पर कथानक (वर्णन) है :

---

[8] विलियम मिल्लर्स 'रूल्स फॉर बाइबल इंटरप्रीटेशन'

मैं ने देखते-देखते अन्त में क्या देखा कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और पहिए धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे. उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकरी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं. उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते-देखते अन्त में देखा कि वह जन्तु घात किया गया, और उसका शरीर धधकती हुई आग में भस्म किया गया. और शेष रहे हुए जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया, परन्तु उनका प्राण कुछ समय के लिए बचाया गया. मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए. तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा. दानिय्येल 7:9-14.

जंगली जानवरों (पशुओं) और छोटे सींग का वर्णन स्पष्ट प्रतीक (चिन्ह) है और इस अध्याय के दूसरे भाग में इसका स्पष्टीकरण पाते हैं इसी प्रकार शेष दानिय्येल में है. इस कहानी में सब कुछ शाब्दिक रूप बिना किसी उग्रता (हिंसा) के पढ़ा सकता है जिसमें प्रकृति के नियमों को पूरा किया जा रहा है.

यह न्याय (फैसले) के दृश्य पुराने दिनों को सम्मिलित करते हैं और मनुष्य का पुत्र पुनरागमन विश्वास का मूलभूत कथानक है. जबकि धर्मविज्ञान के व्याख्यान में बैठने, सुझाव कि दानिय्येल का दर्शन केवल परमेश्वर के न्याय का एक प्रतीक चिन्ह था और उसकी क्षमता (योग्यता) को पाप को खत्म करने के लिए परिलक्षित किया, सम्पूर्ण कथा का क्या अर्थ है उसके विपरीत बना दिया. पहले लागू किए गए नियम की शाब्दिक व्याख्या की असफलता, मनुष्य के पुत्र की आधारभूत वास्तविकता को अनुमति देता है, जो कि वास्तव में पुराने दिनों में धूल में बदल गए

साम्राज्य को प्राप्त करने के लिए आ रहा हैं. क्यों? क्योंकि इस ने वास्तव में यह स्थान नहीं लिया; यह मात्र एक संकेत विन्ह है. यह शाब्दिक व्याख्या के पहले नियम की उपेक्षा करने का परिणाम है.

यह इस एकदम बिन्दु पर है कि मैं पिता और उसके पुत्र की बाइबल शिक्षा के संबन्ध में लुभाया गया था. मैं इस पर अच्चम्भित हुआ कि मैं कैसे विश्वास कर सकता कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था और अभी तक एक ही समय त्रिएकत्व में विश्वास करता हूँ. यह प्रक्रिया बहुत आसान हो जाती है जब आप पिता और पुत्र शब्द को एक अलंकार के रूप में ब्रह्माण्ड (सृष्टि) के लिए परमेश्वर के प्रेम को प्रस्तुत करते हैं.

यदि हम समझते हैं कि सारे ब्रह्माण्ड की मूल सिद्धान्त की वास्तविकता परमेश्वर और उसके पुत्र के चारों ओर घूमती है और तब ये शब्द अलंकारों में बदल जाते हैं, समस्त मसीही अर्थव्यवस्था ताश के पत्तों का घर बदलती रेत बन जाती है. इस कथन को सावधानीपूर्वक कागज पर लिख लें :

> ''एक अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु में यह सम्मिलित है कि किस तरह बाइबल की व्याख्या करनी है. यहाँ इस विषय में सबन्धित है कि क्या हमें सचमुच कुछ अंशों की व्याख्या करनी चाहिए या उन्हें हमें अधिक आदर्श/लाक्षणिक रूप से उपचार करना चाहिए. शायद हम इस तरह के उदाहरण देकर स्पष्ट कर सकते हैं. हम अक्सर पुत्र के रूप में यीशु को देखते हैं और बार–बार/लगातार दिव्य स्वभाव/प्रकृति के पिता के पहले व्यक्ति को बुलाते हैं, क्या हम वास्तव में ऐसे भावों को एक पूरी तरह अलग तरीके में लेना चाहते हैं? या यह अधिक उचित होगा कि उनको अधिक प्रतीकात्मक तरीके में व्याख्या की जाए जो पुत्रत्व और पितृत्व बनने के चयनित पहलुओं पर छोड़ता है.'''दी ट्रीनिटी' बाय विडन, मून एण्ड रीव, पृष्ठ 94.

एक बार शब्द *पिता* और *पुत्र* लम्बे समय तक शाब्दिक नहीं रहा, धर्मशास्त्र की रीढ़

की हड्डी को जो कुछ भी हम आशा करते हैं के अनुसार मोड़ा (ऐठा) और आकार दिया जा सकता है. यह परमेश्वर को हमारे स्वरूप में बनाने के लिए बहुत साधारण बात हो जाती है. परमेश्वर की समस्त धारणा (विचार) को भूमिकाओं पर लेते हुए पिता और पुत्र शब्द को चिन्ह के रूप में विचार को हमें प्रस्तुत करते है क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं को मनुष्य के स्वरूप में बनाया था. परमेश्वर, जैसे वह था, एक नैतिक वक्तव्य (कथन) को प्रकट करने के लिए समानांन्तर वास्तविकता में प्रवेश करती है. सारे कथनों का सही अर्थ अपने पुत्र के लिए पिता के प्रेम को प्रकट करना शाब्दिक नहीं लिया गया है, क्योंकि द्वितीय आगमन कलीसिया के अनुसार, यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र नहीं है; यह एक भूमिका है जो उसने उद्धार के उद्देश्य के लिए ग्रहण (धारण) किया है.[9]

जैसा कि मैंने वापस मुड़कर मेरे जीवन को देखा और मैंने सभी हंसी–मजाक करनेवाले, चलचित्र (सिनेमा), समानांन्तर वास्तविकताओं रूपान्तरित पहचानों और अलंकारों (रूपक) के मृत प्रायः उपयोग के अभिसरण को देखा, मैंने वह भी देखा कि ये बातें एक मुख्य लाभ/लक्षण का उद्देश्य थी, और उस ने स्वर्ग में महापवित्र स्थान में परमेश्वर और उसके पुत्र के साथ मधुर सहभागिता में प्रवेश करने की मेरी क्षमता को नष्ट कर दिया. जब तक कि मैं समझ सकता ये धोखे (भ्रम) और उन से दूर हो गए, यह मेरे लिए महापवित्र स्थान में प्रवेश (द्वार) और मेरे परमप्रिय के साथ को ढूंढ़ पाने के लिए असंभव हो जाएगा. महापवित्र स्थान वहां है जहां विवाह स्थान लेता है, और यह मेरे लिए दुल्हन की भूमिका में भाग लेना असंभव हो जाएगा यदि मैं वास्तव में अपने भावी पति के बारे में नहीं जानती.

लगातार मधुर सभागिता जारी रखने का केवल संभव तरीका (मार्ग) है उस सत्य के बारे में जानना कि परमेश्वर और उसका पुत्र वास्तव में कौन हैं.

और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु

[9] या दूसरे शब्दों में नैतिक वक्तव्य बनाना

मसीह को जिसे तू ने भेजा है, जानें. यूहन्ना 17:3.

जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है. 1 यूहन्ना 1:3.

मैं पिता और पुत्र के साथ इस सहभागिता को इतनी बुरी तरह करने की इच्छा रखता था और अभी तक यीशु के बारे में मेरा ज्ञान आवाज और प्रलोभन देनेवाले के प्रशिक्षण के द्वारा भ्रमित (उलझन) था. चलचित्र (सिनेमा), मजाक और अलंकारिता के धर्म विज्ञान में मेरे प्रशिक्षण ने मुझे अनुमति दी कि इन दो अलग प्रेमियों के साथ मुझे एक व्यक्ति की भाँति चलना है. आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त, रूपान्तरित पहचानों और उपलब्धि के माध्यम से जीतनेवाला सम्मान समानांन्तर वास्तविकता में विनम्र और दीन-हीन संसार के उद्धारकर्ता की सूक्षमता से आराधना करना था. मेरा परमप्रिय मुझे महामहिम के गुप्त स्थान में नहीं ले जा सका जबकि मुझे अभी भी मेरे बचपन के प्रेमी के लिए स्नेह (लगाव) था. वहां मेरे मन मस्तिष्क में इस युद्ध (संग्राम) से बचने का एक तरीका होना था.

***

अन्तराल तृतीय

श्रेष्ठगीत 5:7-9 पहरेदार जो नगर में घूमते थे, मुझे मिले, उन्होंने मुझे मारा और घायल किया; शहरपनाह के पहरूओं ने मेरी चद्दर मुझ से छीन ली. (8) हे यरूशलेम की पुत्रियों, मैं तुम को शपथ धराकर कहती हूँ, यदि मेरा प्रेमी तुमको मिल जाए, तो उस से कह देना कि मैं प्रेम में रोगी हूँ. (9) हे स्त्रियों मैं परम् सुन्दरी तेरा प्रेमी और प्रेमियों से किस बात में उत्तम है? तू क्यों हम को ऐसी शपथ धराती है?

रोमियों 7:21-24 इस प्रकार मैं यह व्यवस्था पाता हूँ, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है. (22) क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न रहता हूँ. (23) परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है. (24) मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?

प्रकाशितवाक्य 3:17-20 तू कहता है कि मैं धनी हूँ, और धनवान हो गया हूँ, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं; और यह नहीं जानता कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा और नंगा है. (18) इसीलिए मैं तुझे सम्मति देता हूँ, कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले कि धनी हो जाए, और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिनकर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो, और अपनी आँखों में लगाने के लिए सुर्मा ले कि

तू देखने लगे. (19) मैं जिन जिन से प्रेम रखता हूँ, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूँ; इसलिए सरगर्म हो, और मन फिरा. (20) देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ.

***

खण्ड 4 – मेरे परमप्रिय द्वारा छुटकारा (उद्धार)

15. एलिय्याह

जैसा कि मैंने अध्याय 9 में उल्लेख किया है, विचार कि यीशु सच में परमेश्वर का पुत्र था एक अस्तित्व को दिखाने के लिए लाया गया था जिसने अपने पिता से सब कुछ प्राप्त किया था और क्योंकि उसके पिता ने उसे सिर्फ प्रेम किया क्योंकि वह उसका पुत्र था और इसलिए नहीं कि उसे सत्ता और पद के उपहार (वरदान) का अधिकार मिला था. इस वास्तविकता ने दो स्पष्ट राज्यों को प्रकट किया था.[10]

	परमेश्वर का राज्य	**शैतान का/सांसारिक राज्य**
सरकार	परिवार	ताकतवर
मुद्रा/प्रचलन	प्रेम भरे संबन्ध	सम्पत्ति
नागरिकता	परमेश्वर के बच्चे	प्रदर्शन और उपलब्धि स्वयं या दूसरों के द्वारा सफलतापूर्वक मूल्यांकन करने की भाँति

सत्य यह है कि मैं आत्म निर्भरता के अनेक तरीकों से स्कूल ले जाया गया था, इसी प्रकार बाइबल को शाब्दिक रूप से पढ़ने से टालने और विभिन्न वास्तविकताओं में इच्छाओं से बचने के लिए, मेरे परमप्रिय से संबन्धित वचन क्या हमें मूल्यवान बना

[10] इन राज्यों के विस्तारण के लिए मेरी पुस्तक 'आयडीन्टी वार्स' का अध्याय 8 देखें.

देता है मेरे मन में धीरे-धीरे विकसित किया गया था. मैंने सत्य को देखना आरम्भ किया कि :

> क्योंकि यहोवा कहता है कि मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है. क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच-विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है. यशायाह 55:8-9.

> यहोवा यों कहता है, बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है कि मैं ही वह यहोवा हूं, जो पृथ्वी पर करूणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूं. यिर्मयाह 9:23-24.

इस नयी आधारशिला ने शिक्षाओं को प्रकट करना आरम्भ किया और मैंने पूरी तरह से नए प्रकाश में विश्वास किया.[11]

	परमेश्वर का राज्य	**शैतान का/सांसारिक राज्य**
व्यवस्था (नियम)	हमें बचाने के लिए वरदान	अच्छे कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए उपकरण
सब्त	साथ में समय बिताने के लिए धन्य वरदान	कठिन परिश्रम से समय की वापसी या धार्मिकता के प्रदर्शन का औजार
न्याय	परमेश्वर की नजदीकी में समय बिताना, उसके अनुग्रह में विश्वास करना	ग्रेड (श्रेणी/दर्जा) बनाने के लिए कठिन परिश्रम करने का समय

[11] अधिक जानकारी के लिए मेरा प्रस्तुतीकरण ''दो राज्यों का सैद्यांतिक तात्पर्य'' देखें. http://vimeo.com/24396148

मेरी अनुभूति का आरम्भ होना कि यीशु को सभी वस्तुएँ प्रेम और आशीष के उपहार के रूप में उत्तराधिकार में मिला है, समझ के विकास के कारण था क्योंकि अनेक सिद्धान्त यीशु के माध्यम से पिता की ओर से प्रेम का उपहार हैं. व्यवस्था और सब्त को बनाए रखने की शक्ति न्याय का सामना करने के लिए भीतर से नहीं आती लेकिन ऊपर से आती है. यहाँ तक कि भले ही मैं मानसिक रूप से इस तर्क (पहेली) को समझता हूँ, मैंने आत्मनिर्भर यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में आयोजित किया था, और इस प्रकार मैं अनजाने (अनभिज्ञता) से उस विधि की ओर खींचा चला आया जिसे मैं व्यवस्था, सब्त और न्याय के साथ आचरण करता रहा हूँ. लेकिन हर समय मैं इन शब्दों पर ध्यान करता : ''और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ.'' (मत्ती 3:17). इससे अधिक मैं देख सका कि करने की योग्यता (क्षमता) क्या परमेश्वर को उस से एक उपहार के रूप में आने की आवश्यकता पड़ी. जैसे मैं बाइबल कि शिक्षा से फिरा- बाइबल सिखाने के लिए मैंने देखा कि पिता का प्रेम मेरे लिए उसके पुत्र के माध्यम से है.

एक दिन यह विचार ने मुझ से चिपट गया. त्रिएकत्व के बारे में क्या है? *जब हम धर्मशास्त्र का अध्ययन नहीं करेंगे/कर सकते तो उस प्रकाश में कि आपने दो राज्यों के बारे में क्या सीखा है?* यह विचार तत्काल मुझ में आया. क्या तुम वहां नहीं जाना चाहते ! तब दूसरा विचार अधिक धंसता गया- *क्या एक सच्चा प्रोटेस्टेन्ट सभी बातों को प्रमाणित करने के लिए धर्मशास्त्र के अध्ययन की बुलाहट को नकार सकता है?* अधिक वास्तविकता है कि मैंने इस विषय मुझे बताए गए का अवलोकन करने का भय महसूस किया कि मुझे इसे अध्ययन करने की आवश्यकता है. मैंने जाना कि किसी भी विश्वास जिस ने जो डर को बढ़ावा दिया वह मजबूत आधार (नींव) नहीं था. इसलिए मैंने विषय का अध्ययन करना आरम्भ किया.

कुछ कारणों से यूहन्ना 5:26 के शब्द मुझ पर उछल पड़े.

> जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे. यूहन्ना 5:26.

इस से पहले मैं इस अनुच्छेद को शाब्दिक रूप से पढ़ने के योग्य नहीं रहा था क्योंकि इस प्रकार करके आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त को नष्ट कर दिया जाएगा. यदि आत्मनिर्भरता आत्मिकता का सार है तब यह अनुच्छेद का अर्थ इस रूप में पढ़ पाना असंभव था कि पिता ने अपने पुत्र को दिया जो अपने आप में स्वयंभू जीवन का सुझाव देनेवाला जीवन है. अब यह स्पष्ट रूप से पढ़ने के लिए बहुत आसान था. दूसरा कारण मैं विश्वास कर सका कि परमेश्वर ने इस वजह से अपने पुत्र को दिया है क्योंकि मसीह का मोल (कीमत) दिव्य पुत्र के रूप में है अपनी स्वाभाविक विशेषताओं (गुणों) में नहीं था लेकिन अपने पिता के साथ उसके सबन्ध में था. रोशनी की इस चमक में पूरी तरह से यीशु के झूठे समिश्रण (मिलान) का भण्डाफोड़ (उजागर) किया जिसे मैं इतने लम्बे समय से मन में संघटित किए हुए था. अचानक झूठा मसीह उजागर किया था जो मुझे प्रचार किया गया, मेरे द्वारा प्रेम और आराधना किया गया था. यीशु सम्पूर्ण आत्मनिर्भरता की एक अभिव्यक्ति नहीं था, वह पुत्र था जिसने अपने पिता को प्रेम किया था और उसकी ओर से सब कुछ प्राप्त किया था.

अचानक अनुच्छेद सब ओर प्रकाश के साथ फूट पड़ा था.

> परमेश्वर को किसी (मनुष्य) ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रकट किया. यूहन्ना 1:18.

> और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को जिसे तू ने भेजा है, जानें. यूहन्ना 17:3.

> क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा दीं, मैं ने उन्हें उनको पहुंचा दिया और उन्होंने उनको ग्रहण किया : और सच-सच जान लिया है, कि मैं तेरी ओर से निकला हूं, और प्रतीति कर ली है कि तू ने ही मुझे भेजा है. यूहन्ना 17:8.

परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ. मरकुस 1:1.

तौभी हमारे निकट तो परमेश्वर है : अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं. 1 कुरिन्थियों 8:6.

शमौन पतरस ने उत्तर दिया कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है. (17) यीशु ने उत्तर दिया, हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात प्रकट की है. मत्ती 16:16-17.

यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ में, वरन् अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहले उत्पन्न किया. (23) मैं सदा से वरन् आदि ही से पृथ्वी की सृष्टि के पहले ही से ठहराई गई हूं. (24) जब न तो गहरा सागर था, और न जल के सोते थे तब ही से मैं उत्पन्न हूं. नीतिवचन 8:22-24.

पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अंत में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, (2) इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है. (3) वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है : वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिम के दाहिने जा बैठा. (4) और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया. इब्रानियों 1:1-4.

वचनों (शब्दों) के द्वारा प्रज्वलित किया गया मसीह के बपतिस्मा पर घोषित किए गए और उसके पुत्रत्व पर शैतान के साथ संघर्ष के महत्व द्वारा भड़काया गया था. मेरा मन तेजी से बढ़ते हुए लिखने के अनुभव में प्रतिपादित हुआ जिस ने पुस्तक

''एलिय्याह की वापसी'' को बनाया. विचार की अनेक धाराएँ अभिमुख हुई और उस पर उतर आयी कि एकलौता पुत्र केवल एक सच्ची आधारशिला है–आशिषित पुत्र, पुत्र जिसमें पिता आनन्दित हुआ, पुत्र जिसे पिता के पास जो था वह सब कुछ दिया गया, एक विश्वास करनेवाला पुत्र, अपने पिता की प्रेम से आज्ञापालन करनेवाला परम् हितैषी अधिकार है. मैंने आइजक न्यूटन के समान स्वयं को भूमि पर गिरते हुए एक सेब के सच्चे महत्व का लोभी (लालची) महसूस किया.

उस पुस्तक का लिखना पूरा होने पर, मुझे मेरा सिर को सजीव ढ़ंग से स्वर्ग (आकाश) की ओर उठाना और शिष्य के समान रोना (चिल्लाना) स्मरण है.

> उस ने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, कि हम को खिस्तुस अर्थात् मसीह मिल गया. यूहन्ना 1:41.

मेरी आँखों से आँसू बह निकले जैसे मैं वास्तविकता (सच्चाई) की पकड़ में आया कि मैंने उसे खोज लिया था. सच में मैंने उसे खोज लिया था. सच्चाई यह है कि उसने मुझे खोज लिया और कैसे मैं खोजे जाने पर प्रसन्न हुआ था. परमेश्वर का एकलौता पुत्र मेरे सम्मुख विशाल (भारी) चट्टान के समान खड़ा था, और मैंने वहाँ तय किया और तब मेरे घर को उस कीमती आधारशिला (नींव) पर बनाना तय किया था. गुस्से का गहरा (घना) कोहरा जिस ने मेरे परमप्रिय को बांधा (सीमित) हुआ था और उसे बांध कर मेरे से दूर कर दिया, और इस पुत्र के उत्तराधिकार के तेजस्वी प्रकाश (ज्योति) के द्वारा छीन लिया गया था. एलिय्याह की आवाज ने मेरी आत्मा में गहराई से पुकारा था.

> देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भजूंगा. (6) और वह माता–पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को माता–पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को सत्यानाश करूं. मलाकी 4:5–6.

वास्तव में एलिय्याह की आत्मा आयी थी और मेरे मन को पिता और उसके पुत्र की ओर मोड़ दिया. अंतहीन माप और प्रदर्शन के द्वारा मेरी स्वतंत्रता (आजादी) के लिए खोजने की इच्छा ने पिता के एकलौते पुत्र में इसके सारांश को पाया था जो उसके सामने बिना किसी शक्ति, बुद्धि और स्वास्थ्य पर विश्वास किए उसके आनन्द की भाँति खड़ा था, लेकिन सादगी (आसानी) से उसके स्वीकृति (ग्रहण), प्रेम और आनन्द के आशीषित वचन द्वारा.

जैसे मेरे परमप्रिय का सच्चा चरित्र (स्वभाव) और व्यक्ति पवित्रशास्त्र के साधारण नियम के प्रकाश में आकार लेगा, इस प्रकार मेरे प्रेम के अनुमोदन और आत्मनिर्भर पाखण्डी (ढोंगी) के साथ अवैध संबन्ध से लज्जा की भावना उत्पन्न हुई थी, जिस ने मेरे जीवन भर मुझे प्रणय निवेदन किया था. तीन में एक निर्माण जिसे त्रिकत्व पुकारा गया ने बांहों में मुझे पकड़ा था, मैंने अनजाने में बरअब्बा को मेरे परमप्रियके बदले चुना था. मैंने हमारे पिता की इस मूर्तिपूजा की डसने वाली लज्जा को ले लिया था. और मेरे परमप्रिय के बहाए गए लहू के माध्यम से क्षमा के लिए पूछा था. शान्ति, आनन्द और प्रेम से मेरा आत्मा भर गया था, फिर भी मैं स्मरण से प्रभावित था जहां से मैं क्रम में आया हूँ ताकि मैं दूसरों के प्रति दयालु हो सकूं जो समान भाग्य से पीड़ित थे जैसे मैं था.

इन दिनों जब मैं बलिदान की वेदी के सामने खड़ा हुआ और मेरे परमप्रिय को मेरे लिए वहां मरते हुए देखा तो एक बार फिर मेरे पहले प्रेम के अनुभव को महसूस किया था. अब उस त्याग के संदर्भ को पिता के वास्तविक उपहार की भाँति, अपने गुमराह बच्चों को वापस जीतने के लिए प्रस्तुत किया था. पवित्र स्थान में मशाल के साथ मेरे सीखने का अनुभव और मेरे पाँव के लिए एक सीधा रास्ता बनाने के लिए और मेरे परमप्रिय के प्रेममय आलिंगन को पाने के लिए शेवब्रेड ने मेरे परमप्रिय के लगातार मध्यस्थता के साथ मिलकर एलिय्याह के लिए मार्ग तैयार किया.

मैं मेरे परमप्रिय के साथ महापवित्र स्थान में प्रवेश करने का इच्छुक था, लेकिन वहाँ पर अधिक अवरोध थे जिसे हटाने और अधिक सावधानी (जागरूकता) कि

कितनी अधिक आवश्यकता थी कि मेरी मूर्तिपूजा ने मुझे प्रभावित किया था.

> हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? (2) वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है; (3) जो अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता, और न अपने मित्रों की बुराई करता, और न अपने पड़ौसी की निन्दा सुनता है; (4) वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य तुच्छ है, और जो यहोवा के डरवैयों का आदर करता है, जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े; (5) जो अपना रूपया ब्याज पर नहीं देता, और निर्दोष की हानि करने के लिए घूस नहीं लेता. जो कोई चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा. भजन संहिता 15:1-5.

बहुत अधिक वर्षों तक मैंने मेरे घर को साथ ही साथ आत्मनिर्भर प्रलोभन को मेरे परमप्रिय पर बनाने का प्रयास किया था. वहाँ मेरी नींव में लकड़ी और ठूंठ (खूंटी) थी जिसे धोने की आवश्यकता थी इसलिए कि मैं सीधा चल सकूं, धार्मिकता के कार्य कर सकूं और मेरे मन में सचाई कह सकूं. मेरे साथियों के आगे मेरे परमप्रिय के लिए प्रेम को स्वीकार करने के लिए ये परीक्षण मेरी इच्छा की स्वाभाविक कार्य करने से बाहर को अंगीकार करेंगे. तोभी पहले मैं आप के साथ इन कुछ परीक्षणों को बांटता हूँ, कि मैं कुछ कारणों को जो मैं मेरे परमप्रिय में हर्षित होता को आपके साथ साझा करना चाहता हूँ.

***

16. सब कुछ मधुर/सुन्दर

> मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है, वह दस हजार में उत्तम है. (11) उसका सिर चोखा कुन्दन है; उसकी लटकती हुई लटें कौवों के समान काली हैं. (12) उसकी आंखें उन कबूतरों के समान हैं जो दूध में नहाकर नदी के किनारे अपने झुण्ड में एक कतार से बैठे हुए हों. (13) उसके गाल फूलों की फुलवारी और बलसान की उभरी हुई क्यारियां हैं. उसके होंठ सोसन के फूल हैं जिन से पिघला हुआ गन्धरस टपकता है. (14) उसके हाथ फीरोजा जड़े हुए सोने के किवाड़ हैं. उसका शरीर नीलम के फूलों से जड़े हुए हाथी दांत का काम है. (15) उसके पांव कुन्दन पर बैठाए हुए संगमरमर के खम्भे हैं. वह देखने में लबानोन और सुन्दरता में देवदार के वृक्षों के समान मनोहर है. (16) उसकी वाणी अति मधुर है, हां, वह परम सुन्दर है. हे यरूशलेम की पुत्रियों, यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र है. श्रेष्ठगीत 5:10-16.

यह सोचने के लिए आश्चर्य की भाँति आया कि यह हमारे पिता परमेश्वर के लिए सीधे ब्रह्माण्ड को बनाना असंभव होगा. क्षमा करें? (दोबारा कहें) परमेश्वर कुछ भी कर सकता है, प्रत्युत्तर आता है. ब्रह्माण्ड के लिए जीवन का नियम (कानून), निर्देश (आज्ञा) देता है कि एक जो सीधे तौर पर जीवन देता है, वही है जैसा हम बनने कि इच्छा करते हैं.

> परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता

है,जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं. 2 कुरिन्थियों 3:18.

यदि ब्रह्माण्ड की सरकार (शासन) परमेश्वर के कंधों पर निर्भर है, तो परिणाम क्या होगा? सभी स्वर्गदूत प्राणी (देवदूत के समान यजमान) और सृजित संसार पिता को अनुकरण करने के लिए खोजेगें. हाँ, हम स्वभाव में उसकी भाँति होने की खोज कर सकते हैं, लेकिन गहराई के स्तर में उसके समान होने के लिए, हम ठोकर खाकर (लड़खड़ा) कर गिर जाएंगे. इस प्रकार कैसे? परमेश्वर किसी को समर्पण नहीं करता है, किसी की आज्ञा पालन नहीं करता है, न सिखाता है और न ही किसी के द्वारा निर्देशित किया जाता हैं.

अहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गम्भीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! (34) "प्रभु की बुद्धि को किस ने जाना? या उसका मंत्री कौन हुआ? (35) या किस ने पहले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए?" (36) क्योंकि उसकी ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है : उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे : आमीन. रोमियों 11:33-36.

यदि पिता हमारे सम्मुख आधारशिला की भाँति जीने के लिए प्रस्तुत किया जाता है, तो हम उसकी नकल करने की तलाश करेंगे और वह एक जिस ने समर्पण, आज्ञापालन और निर्देश प्राप्त नहीं किया हो बन जाएंगे. उसके समान बनने के हमारे प्रयास में हम स्वाभाविक रूप से विपरीत बन जाएंगे और ऐसे शैतान के जीवन में प्रमाणित (सिद्ध) होता है जिसने महामहिम के समान बनने का प्रयास किया था.

इसके लिए समाधान था, पिता का ब्रह्माण्ड के लिए आधारशिला के पत्थर को रखना ताकि वह उस पर बना सकता है और वह एक जिस में समस्त ब्रह्माण्ड कैसे जीवन बिताए के उदाहरण के रूप में देख सकता है.

इसलिए **प्रभु यहोवा** यों कहता है, देखो, मैं ने सिय्योन की नींव का पत्थर

> रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनेमोल और अति दृढ़ नींव के योग्य पत्थर : और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा. यशायाह 28:16.

अनन्त बुद्धि में, पिता अपने प्रकट स्वरूप में एक पुत्र को सम्मुख लाया. इसने परमेश्वर के विचारों को सुनने योग्य बनाया. पिता की दिव्यता की सारी सघनता उस में निवास करती है. वह स्वयं में जीवन पाने के लिए दिया जाता है, जैसे पिता स्वयं करता है.

> **यहोवा** ने मुझे काम करने के आरम्भ में, वरन् अपने प्राचीनकाल के कामों से भी पहले उत्पन्न किया. मैं सदा से वरन् आदि ही से पृथ्वी की सृष्टि के पहले ही से ठहराई गई हूं. जब न तो गहरा सागर था, और न जल के सोते थे तब ही से मैं उत्पन्न हूं. नीतिवचन 8:22-24.

यद्यपि परमेश्वर के पुत्र में उसके पिता की सारी शक्ति संपन्न होती है, फिर भी हम उसको नोट करें:

> इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच-सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है. यूहन्ना 5:19.

सत्य है कि परमेश्वर का पुत्र अपने पिता की ओर विनम्रता (आज्ञाकारिता) में, उसके पद की बिना इच्छा किए प्रेममय आज्ञापालन को देख सकता है कि उसका पद उसकी दिव्यता में उच्चतम प्रमाणों में से एक है. यदि पुत्र एक सृजित प्राणी था और वहाँ पीछा करने का कोई दूसरा विनम्र उदाहरण नहीं था, वह स्वाभाविक तौर पर शक्ति और स्थिति की भाँति चरित्र में महामहिम के समान होने की खोज करेगा. उसका अपने पिता के लिए आन्तरिक उपदेश (भक्ति) पर्याप्त प्रमाण है क्योंकि उसने परमेश्वर के विचारों को सुननेयोग्य बनाया ताकि पिता की सारी परिपूर्णता उस

में निवास करे.

इस आधारशिला पर, परमेश्वर ब्रह्माण्ड को बना सका. प्रत्येक सृष्टि (जीव) जो आगे उसके पुत्र के हाथ से निकल आए, उसी के समान विनम्र, आज्ञाकारी और विश्वास करनेवाली भावना के साथ भरे जाएंगे उस एक की भाँति जिस ने उन्हें बनाया.

> परन्तु सभी न्यूनतम प्रतिनिधित्व से फिरकर हम ख्रिष्ट में परमेश्वर को देखते हैं. यीशु में देखने से पता चलता है कि परमेश्वर की दानशीलता की महिमा प्रकट होती है. 'मैं अपने आप से कुछ नहीं करता.' यीशु ने कहा, 'जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूँ.' मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता 'परन्तु उसकी प्रतिष्ठा जिसने मुझे भेजा है.' (यूहन्ना 8:28; 6:57; 8:50; 7:18.) इन वचनों में महत्वपूर्ण सिद्धान्त निहित है जो विश्व के लिए जीवन की व्यवस्था है. सभी वस्तुओं को ख्रिष्ट ने परमेश्वर से प्राप्त किया, परन्तु उसने दूसरों को देने के लिए ही उन्हें प्राप्त किया था. इस प्रकार स्वर्ग में सभी सृष्टि किए गए प्राणियों के अपने प्रिय पुत्र की सेवकाई के द्वारा पिता का जीवन सब प्राणियों तक पहुँचता है; और पुत्र द्वारा ही महिमा और आनन्द से परिपूर्ण सेवकाई, प्रेम की लहर सभी वस्तुओं के महान स्रोत के पास वापस लौटता है; और इस तरह से ख्रीष्ट द्वारा ही जीवन की व्यवस्था प्रदान करनेवाले महान दाता के चरित्र का प्रतिनिधित्व पूर्ण होता है. *डिज़ायर ऑफ ऐजेज़ (युगों की अभिलाषा)* पृष्ठ 21

एकलौता पुत्र समस्त ब्रह्माण्ड के लिए कुंजी है जिसने एकजुट रखा है. यह विनम्रता, पुत्र की विश्वास करनवाली आत्मा (भावना) है जो पिता सभी सृजित प्राणियों के मनों में आगे भेजता है.

> क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति

करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा. यशायाह 9:6.

और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है. गलातियों 4:6.

यह एकलौते पुत्र की आत्मा है जो सारी सृष्टि के मनों को पिता की ओर मोड़ देती है जो सभी का महान स्रोत है. यह मेरे परमप्रिय के बारे में महान मूल्यवान (कीमती) बातों में से एक है. उसका चरित्र पिता के लिए एक विश्वास करनेवाला, प्रेम करनेवाला समर्पण है.

जैसे ही मैंने अपने परमप्रिय को मेरे जीवन को अधिकार में लेने को अनुमति दी, मैं पिता की ओर खींचा गया. मैंने मेरी लगातार आवश्यकता को महसूस किया. यह सारा खजाना, मेरे परमप्रिय की ओर से उपहार है. यही कारण है कि पिता ने पुत्र को बढ़ाया और उसे सब नामों से ऊपर एक नाम दिया. यही कारण है कि मेरा परमप्रिय उन सभी का अनन्त पिता है जिन्होंने एक सच्चे परमेश्वर को समर्पण किया. यह जीवन का जल है जो वह हमें पीने के लिए प्रदान करता है. इस जल में वह आत्मा है जोस भीप रिस्थितियोंम ें ि पताम ेंप र ि वश्वासक रताह ै अ ौरय हव हीभ ावना (आत्मा) है जो पिता के अधीन सृष्टि को एकसाथ थामे हुए है.

वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है. (16) क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं. (17) वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुओं में स्थिर रहती हैं. (18) वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे. (19) क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे. कुलुस्सियों 1:15-19.

जैसे मैं इन बातों पर चिन्तन–मनन करता हूँ, मेरा मन गर्मजोशी से बढ़ता है और मैं सहायता नहीं कर सकता लेकिन मुस्कुराता हूँ. मेरे परमप्रिय के खजाने मधुर हैं. वह मेरे मन को सुरक्षित रूप से अपने पिता पर विश्वास करनेवाला रखता है और मुझे संतुष्टि और शान्ति से भर देता है.

दूसरा खजाना जो मैंने मेरे परमप्रिय में पाया, वह उसकी आशीष है. पिता ने अपने पुत्र को आशिषित किया और मेरे परमप्रिय के मन में निश्चय निवास किया क्योंकि पिता उसमें आनन्दित हुआ. हम पिता के हर्ष में बनी रहनेवाली इस आत्मा के लिए कितना अधिक कीमत अदा करने की इच्छा रखेंगे?

> और देखो, यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं. मत्ती 3:17.

पिता का आनन्द उसके पुत्र के लिए मेरी सगाई के माध्यम से मेरा बनता है.

> कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यार में सेंतमेंत दिया. इफिसियों 1:6.

मुझे मेरे पिता के अनुमोदन को जीतने के लिए कुछ भी प्रयास करने की, न ही प्राप्त करने की, और न ही प्रदर्शित करने की आवश्यकता है. मेरे परमप्रिय के होने में, मेरे पास पिता की प्रसन्नता है. पिता का हर्ष मुझ में है! मैं अपने मन में परमेश्वर के प्रेम को उसके पुत्र के लिए महसूस करता हूँ.

ओह आदम का पुत्र, मैं अपने आप को इस प्रकार के प्रेम में कैसे खोजूं ? यहाँ शब्द नहीं हैं जो मेरे मन की भावनाओं को अभिव्यक्त करने को प्रदान किए जा सकें. परमेश्वर मुझ में प्रसन्न है! हाँ, वह मुझ में प्रसन्न है, और मैं उसको स्वीकार योग्य हूँ क्योंकि उसका पुत्र उसको स्वीकार्य है.

प्रश्न मुझ से पूछा गया है:

> हे स्त्रियों में परमे सुन्दरी तेरा प्रेमी और प्रमियों से किस बात में उत्तम है? तू क्यों हम को ऐसी शपथ धराती है? तू क्यों हम को ऐसी शपथ धराती है? श्रेष्ठगीत 5:9.

मेरा परमप्रिय किसी अन्य से अधिक है क्योंकि उसमें पिता की प्रसन्नता है वह मेरे साथ साझा करता है. मेरे बचपन का प्रेमी मुझे यह खजाना नहीं दे सकता. वह मुझे बिना किसी सीमा के मेरी खुशी से कुछ भी करने की स्वतंत्रता का केवल वादा कर सकता है, फिर भी ये सब झूठ साबित हुए हैं. उसके पास बिलकुल भी खजाना नहीं है, और देवता जो वह मुझे प्रस्तुत करता है, खिसकनेवाली मरूस्थल की रेत की भाँति ठोस है.

> कुंए पर की स्त्री के समान मैं वस्तुओं की खोज कर रहा था जो संतुष्ट नहीं कर सकती थी और तब मैंने मेरे परमप्रिय को कहते सुना, ''जो मेरे कुंए में से जल निकाल कर पीएगा वह फिर प्यास न होगा.''[12]

इन दो बातों में मैंने मेरे परमप्रिय में मधुर खजाना पाया है. पहली, विनम्र, विश्वास करनेवाली और आज्ञाकारी आत्मा है जो प्राकृतिक विरासत की भाँति उस एक के लिए आती है जो पहिलौठा है. दूसरी, पिता की अपने पुत्र पर प्रसन्नता और आशीष है जिन्हें मेरा परमप्रिय मेरे साथ साझा करता है. यह पिता की ओर से उसके उत्तराधिकार का प्राकृतिक/स्वाभाविक परिणाम है. इन दो खजानों का रहस्य पिता की ओर से केवल एकलौते पुत्र की भाँति अनंतकाल से मेरे परमप्रिय के उत्तराधिकार में निहित है.

इन खजानों पर तुम क्या कीमत लगा सकते हो? वह ब्रह्माण्ड के सारे सोने और चाँदी

[12] सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट गीत-संग्रह का गीत 493 (यूहन्ना 4:13)

की तुलना में अधिक मूल्यवान है. यह महान कीमत का मोती है. क्या यह सब प्राप्त करने के लिए बेचने के योग्य नहीं है?

> तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है. (6) यह ज्ञान मेरे लिए बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ के बाहर है. (7) मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे सामने से किधर भागूं? भजन संहिता 139:5-7.

> उसकी वाणी अति मधुर है, हां, वह परम सुन्दर है. हे यरूशलेम की पुत्रियों, यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र है. श्रेष्ठगीत 5:16.

***

17. परिष्कृत (शुद्ध) करने की आग

जब एक व्यक्ति प्रेम में होता है, तो उसे छिपना कठिन होता है. यहाँ तक कि मैं सावधान था कि मेरे परमप्रिय के बारे में मेरे विचारों को मेरी कलीसिया के साथ साझा करने के गम्भीर परिणाम होंगे, अब तक मेरे परमप्रिय का समाचार साझा नहीं करने के बराबर महान परिणाम थे.

> जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा. (33) पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इनकार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इनकार करूंगा. मत्ती 10:32-33.

मैं प्रभावित भी हुआ था कि मुझे मेरी खोजों (पाने की) को मेरी कलीसिया को उसके लिए प्रेम में साथ ही साथ परीक्षण करने में संभवत: मुझ से कुछ छूट गया था, दोनों को मेरी कलीसिया को प्रस्तुत करने की आवश्यकता थी. वहाँ कुछ क्षण थे जब प्रलोभक ने फब्ती (मजाक उड़ाने) के शब्दों के साथ मुझ पर हमला किया ''इस स्थिति (अवस्था) को लेने के लिए तुम अपने आप को कौन समझते हो? अगुवाई करनवाले मनुष्यों में से या यहाँ तक कि अगुवाई नहीं करनेवाले मनुष्यों में से कोई भी परमेश्वर के इस पुत्र पर विश्वास नहीं करते हैं, जिस पर तुम श्रद्धा रखते हो. क्या हुआ यदि आप से कुछ छुट गया हो? क्या हुआ यदि सह सब एक त्रुटि (गलती) है?''

अपने आपको मेरे प्राचीनों को प्रस्तुत करने की एक प्रक्रिया के माध्यम से मुझे मेरी समझ को चुनौती देने की आवश्यकता है. वे जो कुछ भी कहते, मुझे उनको सुनने की और धर्मशास्त्र के साथ इसकी तुलना करने की आवश्यकता है, तब मेरे विवेक को खोजें कि क्या मैं अभी भी मेरे परमप्रिय से प्रेम कर सकता हूँ या क्या वह मेरे मन में केवल एक खजाना था. मैं निश्चित होना चाहता था. मानवीय के अनुभव अनेक प्रलोभनों और त्रुटियों के लिए असुरक्षित (अतिसंवेदनशील) है.

मैं विश्वस्त था कि ये विचार मेरे परमप्रिय की ओर से आए थे. वह जानता था कि मैं एक राह पर अपने पैरों पर जमा रहा था जिस पर कुछ मनुष्यों ने यात्रा की है. मुझे जाँचने की आवश्यकता थी कि क्या मैंने सच में इस विभाजन की अंधकारमय घाटी, गलतफहमी (भ्रम) और तर्क (दावों) में से होकर उसके साथ चलने की इच्छा की थी,

मैंने मेरी पुस्तक *''एलिय्याह की वापसी''*को कलीसिया के अगुवों के लिए उठाया और उन्हें जांचने के लिए कहाँ. मुझे वह दिन अच्छी तरह से स्मरण है; यह दिन मेरे चालीसवें जन्म दिन से पहले था. मैंने त्रिएकत्व की चालीस वर्षों तक सेवा की थी, और इन दस्तावेजों को प्रस्तुत (जमा) करने में मैं मेरे परमप्रिय के लिए मेरे प्रेम और लगाव की घोषणा कर रहा था. वह अपने आप को मेरे भाइयों के सम्मुख प्रकट (प्रदर्शित) करने के परिणाम के योग्य था.

दस्तावेज जमा करने के कुछ समय बाद, मैंने वचन ग्रहण किया तब दूसरे स्रोतों ने सूचना दी थी कि मैंने त्रिएकत्व को नकार दिया था और कुछ सूचनाओं ने संकेत दिया था कि मैंने लम्बे समय तक पवित्र आत्मा में विश्वास नहीं किया था. कुछ मेरे मित्रों के पास पहुँच कर रहे थे और उन्हें मेरे 'धर्मत्याग' के बारे में बता रहे थे. मैंने वास्तव में बदलाव महसूस किया, मैंने अपने मित्रों से प्रेम किया, फिर भी प्रयास किया और उन्हें समझाने पर प्रकट हुआ कि मैं कलीसिया को दुर्बल (कमजोर) करने का प्रयास कर रहा था. मैंने अपने कुछ नजदीकी मित्रों में से कुछ को बताया और स्थिति को समझाया. दो या तीन अन्य मित्रों ने मुझे सीखने के लिए चेताया कि

क्या हो रहा था.

यह मेरे लिए असली परीक्षा थी, मैंने जाना था कि मेरे विश्वास और उद्देश्यों के बारे में गलत सूचनाएं फैलायी गयी थी, फिर भी मैं अपने मित्रों को यह बात बताने के लिए नहीं घेर सका कि क्या हो रहा था. मैंने परमेश्वर के सम्मुख घुटने टेके और कहा, ''मेरे सारे मित्रों मैं तुम्हें देता हूँ, और यदि वे सच में मेरे मित्र हैं तो वे भविष्य में कुछ समय मुझे बाहर खोजेगें.'' मैंने इस प्रार्थना के लिए अक्सर विशेष प्रार्थना की विशेषकर जब मैंने विवरणों की सूचनाओं को प्राप्त किया था जिन्हें स्पष्ट रूप से मेरे विरूद्ध बनाया था.

धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, यह स्पष्ट रूप से आया कि मेरी प्रतिष्ठा और कलीसिया में खड़ा होने की धज्जियाँ उड़ाई गयी थी. खामोशी मेरे मन में गहरे (अन्दर) तक चोट पहुंचायी थी. बिना वचन, संपर्क और पूछताछ के दिनों दिन गुजरते गए, परमेश्वर के पुत्र के साथ प्रेम में गिरने की कीमत पर सोचने-विचारने के लिए मेरे पास समय था. एक बार फिर मुझे सोच-विचार करना होगा कि *क्या होगा यदि आप गलत कर रहे हैं?* प्रकाशन की आत्मा और ऐतिहासिक आलेखों के लिए मैंने धर्मशास्त्रों में खोजा और विश्वास करने से पहले की तुलना में अधिक मजबूती से वापस लौटा. मैंने जाना कि यह सही है, प्रमाण जबरदस्त है. मेरे विवेक में तेजी से आया कि बाइबल स्पष्ट रूप से क्या सिखाती है. मैंने जानता था कि मैं केवल मेरे विवेक का अनुसरण करने में प्रसन्न हो सकता हूँ और मेरा दोषी ठहराया जाना क्या सही था.

मात्र बारह महीनों के भीतर मैंने मेरी पुस्तक को जमा किया, मैंने प्रत्युत्तर प्राप्त किया. मैंने कलीसिया के एक अगुवे के साथ दो बैठकों (मीटिंग) का सामना किया था, और मुख्य प्रश्न संबन्धित था कि क्या मैं विश्वास करता हूँ कि वहाँ एक समय था जब पुत्र मौजूद नहीं था. मैंने प्रत्युत्तर दिया कि बाइबल मुझे कहती है कि यीशु एकलौता और अनन्त दोनों है. मैंने दोनों को तथ्यों की भाँति स्वीकार किया; मैंने अनंनता के रहस्य को परमेश्वर के पुत्र के उत्तराधिकार की स्पष्टता को नकारने के

क्रम में भेदने के लिए खोज नहीं की थी. प्रश्नों के प्रकार और मात्रा से मैंने ग्रहण किया, मैंने जानता था कि मेरे प्रदर्शन का मन या तो अगुवों के लिए महत्वपूर्ण नहीं था या समझ नहीं आ रहा था.

जब मैंने मेरे आत्मसमर्पण (प्रस्तुत करने) के लिए औपचारिक प्रत्युत्तर प्राप्त किया, तब मुझे बताया गया था कि समीति ने मेरे दिए गए सुझाव में कोई रोशनी नहीं पायी थी. मैंने किसी भी बाइबल से संबन्धित संदर्भ के लिए प्रत्युत्तर की बारीकी से जाँच की थी ताकि मैं इस पर अध्ययन और ध्यान कर सकता. मैं एक भी बाइबल पाठ नहीं खोज सका, न ही मेरे लेखन से कोई उद्धरण जो संकेत करे कि मैंने त्रुटि की हो, केवल मेरे निष्कर्षों के बारे में घोषणाएं हैं.

मैंने मेरे मन को बाइबल अध्ययन और किसी भी बाइबल संबन्धी मार्गदर्शन/सलाह के लिए पूरी तरह से मजबूत किया जो मुझे प्रस्तुत की गयी थी, फिर भी वहां कुछ नहीं था, कुछ भी नहीं. यद्यपि मैं इस समस्या (परेशानी) के निष्कर्ष से बच्चे के जन्म की भाँति अनुभवहीन नहीं था, जब स्थिति आयी, इसने मुझे प्रबलता (जोर) से प्रहार किया. मैंने सभी को एकदम से मेरे आत्मा में भावनाओं के अनेक बुलबुलों को ऊपर उठते महसूस किया. मैंने मेरे मन की शान्ति, महिमा और प्रेम के लिए प्रार्थना की. अंतत: शक्ति आयी और मेरे परमप्रिय का आनन्द वापस लौटा आया. मैंने प्रार्थना की थी, ''हे पिता, मैं बाइबल में से कुछ भी अध्ययन करने की इच्छा करता रहा हूँ क्योंकि जो अधिकार में है वह मुझे देगा, लेकिन यदि मैंने कोई गलती की है, तो उत्तर बाइबल में से ही आना चाहिए.''

एक बार फिर प्रश्न मेरे मन में आया, *क्या होगा यदि सारी गलती इसकी है, क्या होगा यदि आप गलत हैं?* मैनें सेवकाई में मेरे समय का विचार किया और मेरे पुराने सहयोगियों के साथ संपर्क में कमी है. मैं बाइबल में क्या पढ़ रहा था मेरा हिस्सा मात्र उसे भुलना चाहता था और केवल मानता हूँ कि मैं गलत था. फिर भी, मैंने जाना कि यह स्वतंत्रता की राह नहीं थी. मैं मेरे परमप्रिय को नकार नहीं सकता. वह मेर लिए अपनी इच्छा से क्रूस पर चला गया. उसने मेरे लिए बहुत अधिक

अपमानवाले, लज्जाजनक व्यवहार का सामना किया था, क्या मैं उसके लिए थोड़ा सा अपमान नहीं सह सकता?

मैंने कुछ समय ध्यान और प्रार्थना में लिया. मैंने कलीसिया के अगुवों को बाइबल से संबन्धित मेरे कार्य की प्रतिक्रिया के बारे में पूछते हुए पुनः लिखा. मैंने ईमानदारी से एक शालीन और विनम्र भावना के लिए प्रार्थना. मैंने प्रार्थना की थी कि मैं किसी भी तरीके से दोष लगाने के कारण से नहीं लिखूंगा.

मेरे परमप्रिय को ढूँढ़ने के लिए मेरे पहाड़ की चोटी से अनुभव ने अब मैंने मेरे वंश की वास्तविकताओं को वापस जीवन की वादियों में प्रस्तुत किया.

> फिर उसने आगे बढ़ना आरम्भ किया; लेकिन विवेकशीलता, धर्मपरायणता, दानशीलता और समझदारी को उसे पहाड़ी के नीचे तक जाने में उसका साथ देना होग. इसलिए वे एक साथ उनके पूर्व प्रवचनों को दोहराते हुए निकल पड़े, जब तक कि वे पहाड़ी के नीचे जाने के लिए आए. फिर मसीही ने कहा, जैसाकि ऊपर आना कठिन था, जहां जक मैं देख सकता हूँ नीचे जाना भी खतरनाक है. विवेकशीलता ने कहा, जी हाँ, इसलिए अपमान की घाटी में नीचे जाना एक व्यक्ति के लिए कठिन कार्य है, जैसे अब तू कला के रूप में, और स्वयं को न पिसलने से पकडने के लिए कोई रास्ता नहीं है; इसलिए उन्होंने कहा कि हम तुम्हें पहाड़ी के नीचे तक साथ देने के लिए आएं हैं. इस प्रकार उसने नीचे जाना आरम्भ किया, लेकिन बहुत सावधानी से; फिर भी इसके बावजूद वह एक या दो बार फिसल गया. जॉन बुनियम, *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,* भाग 1 स्तर 4

छः महीनों के बाद, बाइबल संबन्धित मेरे अनुरोध का मैंने प्रत्युत्तर प्राप्त किया. इस प्रत्युत्तर में मेरे लिए स्पष्ट अर्थवाले पाठों की एक सूची प्रस्तुत की गयी थी, क्योंकि यीशु उत्तराधिकार के द्वारा एक पुत्र नहीं है क्योंकि ''एकलौते'' का अर्थ अनूठा है. मैंने एलेन व्हाइट से भी कुछ संदर्भ प्रस्तुत किए थे. जैसाकि मैंने इस प्रत्युत्तर पर

सोचा-विचारा और प्रार्थना की थी, मैंने इस घोषणा का सामना किया था.

> ...यह कमेटी के सदस्यों का गहरा दृढ़ विश्वास है कि सेवन्थ-डे एडवेन्टिस्ट के ईश्वरत्व की समझ जैसे हमारे आधारभूत विश्वासों के त्रिएकत्व के कथन में अभिव्यक्त और बाइबल के अनेक संदर्भों के साथ प्रमाणित किया था, यह बाइबल के सत्य के अनुसार है. आपके ताज़ा संस्करण में इन आधारभूत विश्वासों के संबन्ध में आपके सारांश के निवेदन ने हमें कायल नहीं किया है, और एलेन व्हाइट के उद्धरणों को बदलाव करने के लिए आपने संदर्भ के रूप में प्रयोग किया, हमारे विचार में करें केवल कहें नहीं, वे कह रहें हैं कि तुम क्या अर्थ निकाल रहें हो. एसपीडी बिबलिकल रिसर्च कमेटी, लैटर टू ऐड्रिन ईबेन्स, अप्रेल 3, 2009

प्रश्न मेरे लिए भी रखा गया था क्योंकि मुझे एक स्वतंत्र आत्मा को प्रदर्शित करना होगा. कैसे इस प्रकार के एक दावे की एक प्रतिक्रिया दिखाई. क्या मैंने मेरे सारे अगुवों और परामर्शदाताओं को चुनौती दी थी. *क्या यह एक बदनामी की साधारण इच्छा नहीं है? ऐड्रिन तुम ऐसी ढिठाई (गुस्ताखी) को उजागर करने के लिए अपने आप को क्या समझते हो, जो न केवल तुम्हारे लिए, बल्कि तुम्हारे परिवार और मित्रों के लिए बहुत दु:ख और विरोध उत्पन्न करती है? क्या यह यीशु जिसे तुम प्रेम करते हो वह यह सब होने के लिए सच में बहुत लायक है?*

ये विचार मेरे मन में पीछे-आगे, पीछे और आगे चारों ओर घूमते रहते थे. मैंने अक्सर अपने आप को मेरे बचपन के सपनों को देखने और लापरवाह दिनों में रहते हुए पाया और जब जीवन इतना अधिक आसान हो गया था. हमारा परिवार आंशिक रूप से पहाड़ की हवा के लाभ के लिए वास्तव में एक अवधि के लिए मेरे बचपन के घर में गया था, लेकिन आंशिक रूप से इस प्रकार कि मैं खुशी के समय का स्वप्न देख सका और मेरे भावुक संघर्ष से बाहर निकलने का प्रयास करता रहा.

यदि मैं अपनी कलीसिया और मेरे भाइयों की थोड़ी भी परवाह की थी, तो मेरे आत्मा ने अनिश्चितता के विचारों के साथ मेरे पथ की सत्यता पर अतिकष्ट नहीं दिया होगा. क्या यह पुत्र उत्तराधिकार के द्वारा वास्तव में इसके लायक था? मैं दूसरी बातों के बारे में गलत हुआ था, यह बातें क्यों नहीं? मेरा भाग की गयी इच्छा गलत होगी, सो जाने और जागने की भाँति मुझे दो या तीन वर्ष पहले, वर्तमान परीक्षाएं और द्वन्द्व (संघर्ष) कुछ भी स्मरण नहीं रहे.

मैं तब मेरी पत्नी और बच्चों के बारे में सोचा और जिस पथ (राह) पर मैं चलता हूँ उससे कैसे वे प्रभावित होंगे. जैसे मैं उनके बारे में सोचा था, मैंने वह स्मरण किया:

> और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा. यूहन्ना 8:32.

मैंने मेरे परमप्रिय के बारे में सोचा, और वह सब जिसे उसने मेरे लिए किया था. जैसे मैं चला और उसके साथ बातचीत की थी, मैं जानता था कि मैं उसे मना नहीं कर सकता. वह मुझे पिता के सम्मुख दिन और रात स्वीकार करता रहा था, और मैं कैसे उसे लज्जा स्वीकार करने से मना करने के द्वारा इस प्रकार की अकृतज्ञता का आधार दिखा सकता कि उनका अनुकरण करता जिन्होंने एकलौते पुत्र का अंगीकार किया?

जो तर्क मेरे सामने रखे गए थे उनकी बाइबल से संबन्धित दृढ़ता को देखने के लिए मैंने व्यर्थ ही परिश्रम किया था. मैं स्पष्ट विवेक को अस्वीकार करने के साथ नहीं कर सकता कि मैंने क्या पाया था और विवेक के विरूद्ध जाने के लिए न सही है न ही सुरक्षित. मैंने सत्य के पथ का अनुसरण करने का निश्चय किया जैसे मैंने इसे मेरे प्रभु यीशु के लिए समझा और मेरे परिवार के लिए जिसने बहुत अधिक सहा होगा, यदि मैंने लोकप्रियता (प्रसिद्धि) और सुख-सुविधा का मार्ग अपना लिया होता. मैंने पौलुस के साथ निश्चय किया:

> परन्तु यह मैं तेरे सामने मान लेता हूँ, कि जिस पंथ को वे कुपंथ कहते हैं,
> उसी रीति पर मैं अपने बाप-दादों के परमेश्वर की सेवा करता हूँ : और वे

> बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब की प्रतीति करता हूँ. प्रेरितों 24:14.

मैंने एक महिने पश्चात् मेरी प्रतिक्रिया को कलीसिया को लिखा था :

> मेरे भाई द्वारा जो कुछ भी मुझे प्रस्तुत किया गया था उसके खुला होने के लिए मैनें अपना पूरा प्रयास किया था और प्रार्थना के साथ उस पर विचार किया. प्रयास करें जैसे मैं कर सकता हूँ, मैं इसके लिए मेल-मिलाप करने में असमर्थ रहा हूँ... पिता और पुत्र के वास्तविक रूप में मेरी समझ अब मेरे धर्मशास्त्र का केन्द्र है और मेरी विश्वास प्रणाली के हर पहलू में व्याप्त है और इसलिए मैंने जो प्रस्तुत किया वह सब कुछ नीचे रखे जाएगा... मैं तुम दोनों से मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए कहता हूँ. ...स्मरण करते हुए कि मेरी अन्तरात्मा सबसे कीमती वस्तु है जो मेरे पास है और मैं इसका किसी भी परिस्थिति में उल्लंघन नहीं कर सकता. ऐड्रिन ईबेन्स टू एसपीडी बिबलिकल रिसर्च कमेटी, मई 3, 2009

जबकि मैंने मेरे विवेक को किसी अन्य व्यक्ति को प्रस्तुत नहीं कर सका, मेरा कलीसिया में खड़ा रहना और प्रतिष्ठा सम्पूर्ण रीति से कलीसिया के नेतृत्व के हाथों में थी. मुझे दोषी ठहराया गया था क्योंकि सबसे सुरक्षित मार्ग का अनुसरण करने के लिए मैंने अपने आपको कलीसिया को अनुशासन के लिए समर्पित किया था उन्होंने महसूस किया कि मुझे क्या आवश्यकता है. मैंने अपनी कलीसिया से प्रेम किया था और विश्वास किया कि हमारे पिता जिसने सभी बातों को रद्द किया ने मामलों को ठीक-ठीकघ ाटितह ोनेके ि लएम ान ि लयाज ैसेव ह ि नर्धारित ि कयाथ ा.म ेरे परमप्रिय ने स्वयं को सौंपा जो उसके ऊपर दीनता (नम्रता), सौम्यता और अनुग्रह के साथ अधिकार में थे. मैंने प्रभावित हुआ महसूस किया कि मुझे उसी तरह करना चाहिए.

2009 का अंत होते होते मैंने वचन ग्रहण किया था क्योंकि कलीसिया को मेरे

प्रत्यय-पत्र के निष्कासन (चर्च की सदस्यता को हटाने) पर विचार करेगी. एक बार फिर मैं अपने मेरे घुटनों पर आया और मेरी राह (मार्ग) के बारे में ईमानदारी से प्रार्थना की. मैंने एक बार फिर बाइबल को पढ़ा, प्रकाशन का आत्मा और ऐतिहासिक आलेख, और मेरा मन अधिक खास थे इसकी तुलना में कि मैंने धर्मशास्त्र के सच्चे पुत्र चुना था. जैसे मैंने प्रार्थना की थी, मैंने प्रभु को कहा था कि यदि यह संभव था तो मेरा परिचय-पत्र रोकने पर विचार हो सकता था जैसे मैंने इसे अवशेष (बची हुई) कलीसिया का पुरोहित बनने के लिए एक महान विशेषाधिकार माना था. फिर भी यदि यह आत्मसपर्पण करने के लिए आवश्यकता था, तो मुझे इसे प्रसन्नता के साथ और बिना किसी शिकायत के करना होगा. वचन मेरे पास आया था:

> वे तुम्हें आरधनालयों में से निकाल देंगे, वरन् वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा यह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ. (3) और वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं. यूहन्ना 16:2-3.

यदि केवल वे मेरे स्वर्गीय पिता और मेरे परमप्रिय को जान सकते, तब वे जान पाते कि क्यों मुझे इस पथ पर चलना चाहिए, लेकिन वे नहीं जाने. इसलिए मैंने वचन को दिसम्बर 2009 के अंत में स्वीकार किया क्योंकि मैं लम्बे समय तक सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया का एक पुरोहित नहीं था. जब यह समाचार आया मुझे दर्द महसूस नहीं हुआ, न ही दु:ख, और वहां आंसू भी नहीं थे. यह सब पहले के साथ निपटा दिया गया था. इस उतार के माध्यम से अपमान और परिष्कार की अग्नि में वहां मेरे परमप्रिय और और मेरा पिता जो स्वर्ग में है केवल बने रहे थे. कैसा मधुर था उनका प्रभु-भोज, कैसी खुशी से मैंने इन बातों को जानने के लिए महसूस किया जिन्हें मैं अब समझा था.

मैंने परिक्षणों और संघर्ष के बावजूद अपनी दिशा (राह) को दृढ़ता से तय किया था. मैंने मेरे मित्रों और मेरी कलीसिया का समाना किया था और मेरे प्रभु यीशु का

अंगीकार किया. इस प्रक्रिया ने अनेक चरित्रों की कमियों और विशेषताओं को प्रकट किया था और जिन्हें सुनार की साफ करनेवाली आग में पूरी तरह से खर्च (नष्ट) होने की आवश्यकता हो रही थी. फिर भी मेरे मार्ग को मजबूती से एकलौते पुत्र की ओर तय होना, मेरे बचनप का प्रेम और जवानी बिना विरोध के इस निर्णय के अधीन करना आसान नहीं होगा.

***

18. अपोलियन

अपोलियन (शैतान) : तुम कहाँ से आए हो, और कहाँ तक जाओगे.

क्रिश्चियन (मसीही) : मैं विनाश के नगर से आया हूँ, जो सब बुराई का स्थान है, और मैं सिय्योन नगर की ओर जा रहा हूँ.

अपोलियन : इसके द्वारा मैं महसूस करता हूँ कि तू मेरे विषयों में से एक कला है; सारा देश मेरे लिए है और मैं उसका राजकुमार और देवता हूँ. यह कैसे संभव है तो, कि तू अपने राजा से दूर चला जाए? क्या यह नहीं था कि मैंने आशा व्यक्त की थी तू मेरी और अधिक सेवा करे, मैं अभी एक ही प्रहार के झटके से तुम्हें जमीन पर गिरा दूंगा.

मसीही : वास्तव में मैं तुम्हारे अधिराज्यों (शासन) में पैदा हुआ था, लेकिन तुम्हारी सेवा बहुत कठिन थी और तुम्हारी मजदूरी इतनी थी कि उस पर एक आदमी गुजर-बसर नहीं सकता था; 'पाप की मजदूरी तो मृत्यु है', रोमियों 6:23; इसलिए जब मैं वर्षों के लिए आया था, मैंने वैसा ही किया जैसा विचारशील व्यक्ति करते हैं, बाहर देखो शायद मैं अपने आप ठीक हो सकता हूँ.

अपोलियन : वहाँ कोई राजकुमार नहीं है जो इस प्रकार हल्के से अपने विषयों को खो देगा, नहीं तो मैं भी तुम्हें खो दूँगा.

-जॉन बुनियम, *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,* भाग 1, चरण 4

वचन ग्रहण करने के उपरान्त जो मेरे प्रत्यय-पत्र हटा लिए (समाप्त) गए थे, मैंने

चुप रहना तय किया. मैं आत्म–दया को अभिव्यक्त करने की संभावनाओं का विरोध करने के लिए अपने आप पर विश्वास नहीं कर पाया और मेरी आत्मरचित दर्दशा की ओर ध्यान खींचने का प्रयास करता रहा. मैंने इस तरीके को लगातार एक महीने जारी रखा, लेकिन तब एक सुबह मैं गहरे अवसाद में आया जो मेरी उपासना की सार्वजनिक प्रकृति के लिए मेरे विश्वास करने के पाप और त्रिएकत्व को प्रोत्साहन देने के लिए सार्वजनिक क्षमायाचना की आवश्यकता थी. मेरे परमप्रिय और मेरे पिता के प्रकाश (ज्योति) में, यह पाप मेरे लिए बड़ा कष्टदायक (घोर) प्रकट हुआ था और मैंने मेरे विषय (क्रम में) में जो कुछ भी सुधार करना आवश्यक था उसे करने का निर्णय लिया. मैंने क्षमायाचना का एक पत्र लिखा और मेरा अपराध स्वीकरण मेरे परमप्रिय से संबन्धित रहा. मैंने इसे कई लोगों को भेजा जो मेरी सेवकाई (मारानाथा बेवसाइट) द्वारा प्रभावित थे. मुझे लगा कि मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ. मैंने कलीसियाओं को भी लिखा, जब मैं पास्टर था और उनसे झूठे सिद्धान्त सिखाने के लिए मेरे क्षमायाचना को स्वीकार करने के बारे में कहा.

मेरे स्थिति की एक विस्तृत सार्वजनिक जानकारी के साथ, मैंने मेरे परमप्रिय के लिए मेरे निर्णय को स्पष्ट करने (सफाई देने) के लिए अनेक लेख लिखने की आवश्यकता को महसूस किया. एक संख्या में मेरे निर्णय का स्वागत किया और परमेश्वर की महिमा की जब तक कि मैंने स्पष्ट किया कि मैंने अभी तक विश्वास किया था कि एडवेंटिस्ट कलीसिया परमेश्वर की वाचा (प्रतिज्ञा) की कलीसिया थी. मेरा निर्णय मेरे परमप्रिय के लिए कलीसिया में मेरे अधिकांश मित्रों को खोने का कारण बना, और मेरा निर्णय उसकी वाचा की कलीसिया के पक्ष में अनकों के अन्यराक्रमण(अलगाव)क ाक ारणथ ाि जन्होंनेए कलौतेप ुत्रम ें ि वश्वासक ा अंगीकार किया था.

अनेक बार मैंने अपने आप से सबके अलगाव की आवश्यकता के बारे में प्रश्न किया. सच में वहाँ कुछ गुप्त प्रायोजन (उद्देश्य) हैं जो मेरे लिए भी अज्ञात थे! एक व्यक्ति के लिए जो शान्ति, प्रेम, और मित्रता चाहता है, क्यों मैं इन सब लोगों के लिए विपरीत दिशा में जाने के लिए प्रकट होता हूँ? मैं अनुभव करता हूँ मैं उन्हें पूरी तरह

से समझ सकता हूँ जो मेरे मामले को देख रहे हैं, जो निर्णय पारित कर रहे और निष्कर्ष निकाल रहें थे कि मैं साधारणत: एक फूट डालनेवाला मुसीबत का निर्माता हूँ मेरे साथ कुछ भी अच्छा करने को नहीं है. मुझे कठिनाई से दबाया जाएगा कि विभिन्न परिस्थितियों में इस निष्कर्ष के अधीन नहीं आने दें. फिर भी, यह मधुर आनन्द, शक्ति और प्रेम के लिए परिणामी था जिसे मैंने अपने परमप्रिय के लिए अनुभव किया. मैंने मुकाबला करने के लिए संघर्ष का मार्ग नहीं खोजा था; मुझे केवल मेरे परमप्रिय की मधुर आवाज का अनुसरण (पीछा) करने की इच्छा थी.

इस समय चारों ओर, हमारे छोटे बेटे के आत्मविमोह के साथ चुनौतियाँ बढ़ती हुई दिखाई दी. वह बढ़कर उत्तेजित और आक्रामक होता गया. उसी समय मैंने इसे कठोर होता हुआ पाया, और कठोर परिस्थितियों को दबानेवाले चेहरे में शान्ति बाकी रही. बिना यह जाने, कि हमारा सारा परिवार हौदी के पानी से एक पराश्रयी (परजीवी) को उठाया था और यह मेरे छोटे बेटे और मुझ पर विशेष रूप से गम्भीर प्रभाव पड़ा था. उसी समय हम ने खोजा कि जिस घर को हम ने किराए पर ले रखा था एक समस्या का ढांचा था. इस अनेक मामले मेरे और मेरे परिवार के लिए कारण थे. हम ने एक सूखे वातावरण की ओर जाने का निर्णय किया, अभी तक पराश्रयी (परजीवी) के बारे में अनजान थे. कलीसिया के साथ व्यवहार करने के तनाव के साथ परजीवी के प्रभाव ने पूरी तरह से मेरे स्नायु तंत्र को ध्वस्त कर दिया था. जबकि उस अवस्था में रहते हुए, मेरा छोटा बेटा एक ही मामले के साथ इतना अधिक अभिभूत हुआ था कि उसकी हताशा (कुठा) और रोष में तेजी से उबाल आया जिसने क्रोध के अनेक आक्रामक प्रदर्शन की अगुवाई की.

मेरे स्वास्थ्य की स्थिति में और जटिलता के बहुस्तरों के साथ मेरे परमप्रिय से मेरे प्रेम के लिए कलीसिया की प्रतिक्रिया से निपटना सम्मिलित था, करीब एक साल तक मैंने एक बहुत गहरी अवधि में प्रवेश किया था. इस समय के दौरान, मैं ईमानदारी के साथ सामर्थ के लिए प्रार्थना करने को बस एक और दिन के माध्यम से इसे प्राप्त करने के लिए बाध्य किया गया था. मैं भजन संहिता के भजनों के साथ चिपका हुआ था और परमेश्वर के साथ मुझे सहायता करने का निवेदन किया था.

लगभग सब कुछ मेरे ऊपर ढहता (गिरता) हुआ प्रतीत हुआ,और मैं उस स्थान को पहुंच गया जहां मैंने जीवन को अर्थहीन और निरर्थक महसूस किया. फिर भी अभी भी इस सब के बीच जबरदस्त संघर्ष था, यीशु का मधुर दिलासा देनेवाला आत्मा विशेषकर सब्त के दिन हमारी सहायता करने के लिए आएगा. ओह! यीशु का दिलासा कितना मूल्यवान है. वह मुसीबत के समय में मेरी सहायता के लिए सुखद दिलासा देनेवाला है.

हर समय मैंने एक लेख लिखने और कुछ भी साझा करने (बताने) के बारे में कि मैंने क्या सीखा था, का प्रयास किया था, तो लगा कि यह हमारे घर को अस्त-व्यस्त बना देगा. हम अपने घुटनों पर गिर पड़ते और सहायता के लिए याचना करते, और तब सहायता आती.

इस कुचलनेवाली परिस्थिति के कई महीनों के बाद, मैंने अपने आप को गहरी निराशा में डूबे हुए महसूस किया जिस से मैंने सोचा कि मैं बचकर भागने लायक नहीं रहूँगा. मन की अंधकारमय स्थिति में, मैंने प्रलोभन देनेवाले (शैतान) की आवाज मुझ से कहती हुई सुनी. उसने सुझाया कि परमेश्वर ने मुझे भुला (छोड़) दिया था, और इसलिए क्यों न उसे भुला दें. मैंने तुरन्त आवाज को समझ लिया, धर्मशास्त्रों का दावा किया, और यीशु से चिपक गया. मेरे परमप्रिय को भुला देने की अपेक्षा मैं मरना पसंद करूंगा. मेरा वजन मेरी पत्नी की तुलना में एक बिन्दु के नीचे गिर गया था, फिर भी, मैं अपने परमेश्वर के करूणा और प्रतिज्ञा से चिपका हुआ था:

> मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी. (2) उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है. (3) और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है. बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे. भजन संहिता 40:1-3

मैं और मेरी पत्नी दोनों पीछे से अच्छी तरह जाँचे गए थे जो हमने संभव सोचा था,

और अभी भी हम परमेश्वर के पुत्र के साथ प्रेम में थे. अविलम्ब इन घटनाओं के उपरान्त, हम ने परजीवियों को खोज निकाला, संभावित उपचार को प्राप्त किया और स्वास्थ्य को पुनः पाना आरम्भ किया. प्रत्येक दिन थोड़ा आसान और थोड़ा अच्छा बन गया. हम ने अनुभवों से सीखा कि यदि हम अपने घर में कुछ भी अधिक रखते हैं जो परमेश्वर को आदर नहीं देता, तो हमें घर में परेशानी होगी. हम ने प्रत्येक वस्तु को प्रार्थनापूर्वक जाँचा जो हमारे पास है और सब कुछ हटाया जो किसी भी तरीके में संसार की भावना को प्रतिबिम्बित करेगा.

यद्यपि यह समय बहुत ही चुनौतीपूर्ण था, हमें अपने जीवनों से जले हुए कूड़ा-करकट के अनेक तत्व मिले थे. हालांकि शत्रु हमें सत्य के मार्ग से बाहर करता हुआ दिखाई दिया, हमारे परमप्रिय उद्धारकर्ता ने हमारी परिस्थितियों को अच्छे के लिए एक साथ काम करने को बनाया था.

प्रत्येक दिन की शान्ति अब हमारे पास है, हम ने जाना कि हमारे स्वर्गीय पिता के स्वर्गदूत नुकसान से हमारी सुरक्षा और ढाल बन रहे हैं. हमारी परीक्षाओं ने वास्तव में हमें इस प्रेम करनेवाले संरक्षक से सावधान किया था. हम इन बातों को भी नहीं करते जैसा हम ने एक बार किया था.

क्या हमने हमारे सम्मुख मार्ग का सामना किया और संघर्षों को सहा था, हमारे मन आत्मा की पीड़ा के आगे मूर्छित (बेहोश) हो जाएंगे. दयालुतापूर्वक हम इन कठिन परीक्षाओं के माध्यम से बिना यह जाने उठाए गए थे कि हमारे आगे क्या रखा है. एक दिन का समय लेते हुए, हम अपने प्यारे पिता और उसके पुत्र से चिपक गए, विश्वास करते, भरोसा करते, और इच्छा करते थे कि नियुक्त होनेवाले समय में, छुटकारा (उद्धार) आ जाएगा.

> फिर अपोलियन (शैतान), अपने अवसर को ताकता रहता है, वह मसीही के निकट आना आरम्भ करता है, और उसके साथ मल्लयुद्ध (कुश्ती) करता रहा, और उसे एक भयानक पतन दिया; और

मसीहियों की तलवारें उनके हाथ से गिर चुकी थीं. फिर अपोलियन ने कहा, अब मैं तुम्हारा यकीन कर रहा हूँ; और उसके साथ वह लगभग मृत्यु की ओर धकेल (मजबूर) दिया गया था, ताकि वह मसीही जीवन से भागना आरम्भ कर दे. लेकिन, जैसाकि परमेश्वर ने यह किया होगा, जबकि अपोलियन ने अपने आखिरी आधात से झटका दिया था, जिस से इस अच्छे व्यक्ति का पूरी तरह से अंत हो जाए, मसीही फुर्ती से अपनी तलवार के लिए उसके हाथ से दूर पहुँच गया, और उसे यह कहते हुए पकड़ लिया, कि 'हे मेरी बैरिन (शत्रु), मुझ पर आनन्द मत कर; क्योंकि क्यों ही मैं गिरूंगा त्यों ही उठूंगा' मीका 7:8; और साथ ही उसने उसे एक और घातक झटका दिया, जिसे उसने वापस कर दिया, जैसे एक वह जिस ने अपने नश्वर घाव को प्राप्त किया था. मसीही महसूस करता रहा हैं कि उसे एक बार फिर से बनाया गया था, यह कहते हुए कि 'परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है जयवन्त से भी बढ़कर हैं.' रोमियों 8:37. और उसके साथ ही अपोलियन ने अपने दैत्यकाय (विशालकाय) पंखो को फैलाया, और वे उसे दूर उड़ा ले गए, उस मसीही ने उसे फिर कभी नहीं देखा. याकूब 4:7.

इस लड़ाई (संघर्ष) में कोई भी व्यक्ति कल्पना नहीं कर सकता, कि जब तक कि उसने देखा, और सुना न हो, जैसे मैंने किया, क्या चीखना-चिल्लाना और वीभत्स (डरावनी) गर्जना से अपोलियन ने हर समय को लड़ाई का समय बनाया; वह एक दैत्य के समान दहाड़ : और दूसरी ओर क्या आहें (तरस), और कराहना (आहें) मसीहियों के मनों से फूटा. मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा जबकि सुखद रूप में दिखने के लिए उसे बहुत कुछ दिया है, जब तक कि उसने महसूस कर लिया कि वह अपोलियन अपनी दोधारी तलवार के साथ घायल हो गया था; फिर, वास्तव में वह मुस्कुराया, और ऊपर की ओर देखा! लेकिन यह डरावनी दृष्टि थी जिसे मैंने सदैव देखा था.

इसलिए जब यह युद्ध (संघर्ष) समाप्त हो गया था, मसीही ने कहा, मैं

यहाँ उसे धन्यवाद देता हूँ कि मुझे सिंह के मुँह से बचा लाया था, उसके लिए जिस ने अपोलियन के विरूद्ध मेरी सहायता की थी. *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस,* चरण 4

***

19. दिलासा देनेवाला

जिस प्रकार हम इस तीर्थयात्री के पथ पर चलने और अनेक परीक्षाओं (कष्टों) का सामना करते हैं, वहाँ सभी दूसरों पर एक सांत्वना है जो दिलासा देता है.

> इसी कारण उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे. (18) क्योंकि जब उस ने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है. इब्रानियों 2:17-18.

बाइबल हमें बताती है कि इसलिए यीशु ने परीक्षाओं का सामना करना पड़ा था कि वह उनकी सहायता (सहायता और छुटकारे के अर्थ में) करने में सक्षम है जिन्होंने उसे परखा था. फिर भी यदि यीशु हमारे लिए स्वर्ग में मध्यस्थता कर रहा है, तो कैसे वह एक है जो हमें सहायता कर सकता है? यीशु ने इसे बहुत सावधानीपूर्वक अपने शिष्यों को समझाया था जब उसने उन्हें बताया था कि उसे दूर जाना पड़ा.

> शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तू कहाँ जाता है? यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि जहां मैं जाता हूँ, वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आएगा. (37) पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिए अपने प्राण दूंगा. यूहन्ना 13:36-37.

पतरस अपने प्रभु से प्रेम करता था और वह उस से अलग नहीं होना चाहता था. उसने दु:ख के साथ यीशु से पूछा कि क्यों वह उसका अनुसरण नहीं कर सकता. यूहन्ना के निम्नांकित अध्याय में, यीशु उन्हें बताता है कि कैसे वह अभी भी उनके साथ रहेगा यहाँ तक कि भले ही वह उन्हें शारीरिक रूप से छोड़ देगा.

यीशु ने शिष्यों को बताया कि वे मन में परेशानी न उठाएं; वह उनके लिए एक घर तैयार करने जा रहा था और वापस लौटेगा. फिर यूहन्ना 14:4–11 से यीशु ने अपने पिता के साथ संबन्ध को समझाता है, और कैसे वह उसकी अभिव्यक्ति छवि (स्वरूप) है.

पद 6 में यीशु एक बहुत महत्वपूर्ण कथन को बताता है जिस से हम अधिकांश: परिचित हैं. उसने कहा वह मार्ग, सत्य और जीवन है. वास्तविकता है कि यीशु अपने आप को सत्य के रूप में उद्धरित करता है जैसाकि सत्य आनेवाले पदों में बहुत महत्वपूर्ण है.

जिस प्रकार यीशु अपने पिता से निकटता के संबन्ध को बताता है वह तब शिष्यों को बताता है कि पिता को उसके नाम से किसी वस्तु के लिए कहें जिसकी उन्हें आवश्यकता है.

> यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा. यूहन्ना 14:14.

स्मरण रखें कि यह सारी बातचीत यीशु और उसके शिष्यों के बीच में हो रही है क्योंकि वे उसके छोड़कर चले जाने के बारे में परेशान हो रहे हैं. यह इस बात पर है कि यीशु उनके मनों को राहत देना चाहता है. तब उस ने कहा:

> यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे. (16) और मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह

> सर्वदा तुम्हारे साथ रहे. (17) अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है : तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा. (18) मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ. यूहन्ना 14:16-18.

यीशु ने दूसरी दिलास में कहा कि वह पिता के पास से आएगा. ध्यान से गौर करें कि यीशु ने क्या कहा था:

1. सत्य का आत्मा दिलासा है
2. संसार उसे नहीं जानता है
3. शिष्य पहले से ही उसे जानते हैं
4. वह अब उनके साथ रहता है
5. वह उन में होगा/रहेगा
6. यीशु उन्हें बिना दिलास के नहीं छोड़ेगा
7. वह स्वयं उनके लिए आएगा

यदि यीशु सत्य है तो सत्य का आत्मा यीशु का आत्मा है. यीशु ने इस से पहले दिनासा का उल्लेख नहीं किया और फिर भी वह कहता है कि शिष्य उसे पहले से ही जानते हैं क्योंकि वह उनके साथ रहता है. कौन था वह एक जो उनके साथ रहता था? यह यीशु ही था! तब यीशु इस पर स्पष्ट करता है. वह कहता है कि वह उन्हें बिना सहायता के नहीं छोड़ेगा बल्कि वह स्वयं उनके लिए आएगा.

बाद के अध्याय में, यीशु ने दिलासा देनेवाले पवित्र प्रेतात्मा अर्थात् पवित्र आत्मा को बुलाया.

> परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा. यूहन्ना 14:26.

क्यों यीशु ने कभी कभी इस प्रकार कहा जैसाकि यदि वह उनकी सहायता के लिए आ रहा है और फिर दूसरी बार संकेत दिखाई दिया कि वह उसके अलावा किसी दूसरे को भेज रहा है? यीशु ने अक्सर तीसरे व्यक्ति में स्वयं के बारे में कहा था. इन पदों पर ध्यान दें:

> जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उस में हुई. यूहन्ना 13:31.

> मैं तुम से कहता हूँ; वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा? लूका 18:8.

इन पदों में यीशु ने मनुष्य के पुत्र को ''वह'' और ''उसे'' कहा है फिर भी वह अपने बारे में कह रहा है. यह यीशु के लिए एक सामान्य व्यवहार (बात) था.

हम पवित्र आत्मा के बारे में और क्या जान (सीख) सकते हैं? इन समानांन्तर पदों पर ध्यान दें.

> क्योंकि बोनवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारा पिता का आत्मा तुम से बोलता है. मत्ती 10:20.

> जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेगे, तो पहले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताएगा, वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है. मरकुस 13:11.

ध्यान दें कि मत्ती 13:11 में पवित्र प्रेतात्मा को मत्ती 10:20 में हमारे पिता का आत्मा कैसे कहा गया है. यीशु ने आगे अपने शिष्यों को आगे बताया:

> परन्तु जब एक सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा. यूहन्ना 15:26.

पवित्र आत्मा को पिता से आगे रखा गया है और पिता और उसके पुत्र की व्यक्तिगत उपस्थिति को लाता है. यह पवित्र आत्मा की मध्यस्थता के माध्यम से है कि यीशु व्यक्तिगत रूप से हमारे पास आता और हमें आराम (दिलासा) देता है. ध्यान दें कि बाइबल कैसे आत्मा शब्दों को समानांन्तर उपस्थिति में उपयोग करती है.

> मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे सामने से किधर भागूं? भजन संहिता 139:7.

यह इस कारण है कि पौलुस अनेक शब्दों को निनिमेयता (एक दूसरे के स्थान पर रखने) के अनुसार उपयोग करता है.

> परन्तु जबकि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो. यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं. और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है. रोमियों 8:9-10.

संबन्धों पर ध्यान दें :

आत्मा = परमेश्वर का आत्मा = मसीह का आत्मा = मसीह = आत्मा

ये सभी बातें हमें बताती है कि पवित्र आत्मा के माध्यम से, यीशु हमें सीधे दिलासा और सहायता दे सकता है. यह अद्भुत उपहार (वरदान) हमारे आगे एक तेजस्वी (शक्तिशाली) नदी की भाँति है जो परमेश्वर के सिंहासन के नीचे और उन सभी के मनों में बहती है जो मसीह के लिए प्यासे हैं.

> फिर उस ने मुझे बिल्लौरी की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी. प्रकाशितवाक्य 22:1.

> पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए. (38) जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी. (39) उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था. यूहन्ना 7:37-39.

> परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा : वरन् जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा. यहून्ना 4:14.

जीवन का जल उसकी उपस्थिति का विशेष उपहार था जिसके बारे में यीशु ने कुंए पर खड़ी स्त्री को कहा था, परमेश्वर के आत्मा के साधन के माध्यम से था.

क्या हम समझते हैं कि यह कैसे काम करता है?

> हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर का जाती है? जो कोई आत्मा से जन्ता है वह ऐसा ही है. यूहन्ना 3:8.

हम नहीं जानते कि यीशु पवित्र आत्मा के माध्यम से हमें कैसे दिलासा देता है; हम केवल इतना जानते हैं कि एक वह है जो हमारे पास आता है. क्यों यीशु हमारी दिलासा है? बाइबल हमें बताती है:

> क्योंकि जब उस ने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिन की परीक्षा होती है. इब्रानियों 2:18.

यह साधारण सत्य मेरे लिए इतना कीमती है. यह कैसे कि मैं सच में मेरे परमप्रिय

को जानने के लिए आ सकता हूँ. सत्य के आत्मा के बिना मैं उसे नहीं जान सकता जो सत्य है. यदि आत्मा एक अलग प्राणी था जैसे त्रिएकत्व में दावा किया था तब आत्मा के सभी काम जानने सीखने की प्रक्रिया होगी और तब उससे प्रेम करना होगा. तब यह यीशु नहीं जो हमें दिलासा देता है बल्कि कुछ और है. फिर भी केवल यीशु जानता है कि मैंने कैसे इस प्रकार महसूस किया कि वास्तव में वही मुझे सच्ची दिलासा दे सकता है.

त्रिएकत्व इस सारी प्रक्रिया को बड़ा जटिल बना देता है. यीशु ने कहा :

> परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा. यूहन्ना 16:13.

पवित्र आत्मा स्वयं के बारे में बात नहीं कहता, जिसका अर्थ है कि हालांकि पवित्र आत्मा कार्य करता है, यह हमारा ध्यान मसीह से अलग हुए एक व्यक्ति की भाँति नहीं करता, मसीह हमारा ध्यान (केन्द्र बिन्दु) है, और मसीह ही हमारी दिलासा है.

मैं पहली बार दोबारा बुलाया गया ताकि मुझे यह आघात करे कि यीशु ही एक था जो मेरे साथ वास्तव में उपस्थित रहा इसकी तुलना में कि कोई निराकार रहस्यमयी व्यक्ति जो मेरी देह (शरीर) में नहीं चला, न मेरी परीक्षाओं को कभी समझा. मैं खुशी के साथ इसकी सादगी पर रोया था. जिस प्रकार यीशु ने अपने शिष्यों को बताया था कि तुम्हारा मन व्याकुलता में न पड़े क्योंकि वह उनके लिए आएगा और उन्हें दिलासा देगा, वैसे ही मसीह अब हमारे पास आता है और हमें इस क्रम में दिलासा देता है कि हम उसके साथ हो सकते है और उसके साथ सहभागिता कर सकते हैं.

मेरे सुधार करने के परीक्षण के माध्यम से जब मेरे परमप्रिय का अंगीकार किया और जब अपोलियन (शैतान), मेरी प्रिय दिलासा (शान्ति) यह जानते हुए कि यीशु मेरे

साथ था, मुझे प्रोत्साहित करता रहा, मुझे सहयोग (समर्थन) करता रहा, मुझे सहायता करता रहा, मुझे मजबूती देता रहा, मुझे प्रेम करता रहा और मुझे आशीष देता रहा है. ओह क्या अनमोल विचार हैं. और क्या गौरवशाली सत्य है.

एलिय्याह के आने से दो प्रमियों को खोजते हुए मेरे हाथ की ओर संकेत, और उग्र परीक्षाओं के लिए धन्यवाद किया था, महापवित्र में मेरी यात्रा के बाधाओं को हटाया था. यीशु कहता है :

> मैं तेरे कामों को जानता हूँ, (देख, मैं ने तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता) कि तेरी सामर्थ थोड़ी सी है, और तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया. प्रकाशितवाक्य 3:8.

उन लोगों के लिए जो परमेश्वर के पुत्र के नाम का इनकार नहीं करते, महापवित्र द्वार खुला खड़ा है.

***

अन्तराल (प्रहसन) चतुर्थ

मेरे परमप्रिय, मेरी समझ को स्वीकार करने के लिए मेरा मन गाएगा, जिसके लिए मैं तुम्हें क्यों खोता रहा था. आदम से मेरे उत्तराधिकार और प्रलोभन के कपटपूर्ण प्रेमालाप के लिए मुझे बहकाया, मुझे भ्रमित किया और मेरे मन को दु:खी किया. यद्यपि मैंने तुम्हें खो दिया था, फिर भी मुझे आशा थी.

> हे स्त्रियों में परम सुन्दरी, तेरा प्रेमी कहाँ गया? तेरा प्रेमी कहाँ चला गया कि हम तेरे संग उसको ढूंढ़ने निकलें? (2) मेरा प्रेमी अपनी बारी में अर्थात् बलसान की क्यारियों की ओर गया है, कि बारी में अपनी भेड़-बकरियां चराए और सोसन के फूल बटोरे. (3) मैं अपने प्रेमी की हूँ और मेरा प्रेमी मरा है, वह अपनी भेड़-बकरियां सोसन के फूलों के बीच चराता है. श्रेष्ठगीत 6:1-3.

परिष्कार की आग में, मेरा दिल बदल गया था, मेरा मन नया हो गया था. विश्वास के द्वारा तेरे कहे गए वचनों को मैं सुनता हूँ.

> मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल, अद्वैत है अपनी माता की एकलौती, अपनी जननी की दुलारी है. पुत्रियों ने उसे देखा और धन्य कहा; रानियों और रखेलियों ने देखकर उसकी प्रशंसा की. (10) यह कौन है जिसकी शोभा भोर के तुल्य है, जो सुन्दरता में चन्द्रमा और निर्मलता में सूर्य और पताका फहराती हुई सेना के तुल्य भयंकर दिखाई पड़ती है? (11) मैं अखरोट की

> बारी में उतर गई, कि तराई के फूल देखूं, और देखूं कि दाखलता में कलियां लगीं, (12) और अनारों में फूल खिले कि नहीं. मुझे पता भी न था कि मेरी कल्पना ने मुझे अपने राजकुमार के रथ पर चढ़ा दिया. (13) लौट आ, लौट आ, हे शूलेम्मिन, लौट आ, लौट आ, कि हम तुझ पर दृष्टि करें. क्या शूलेम्मिनक ोइ सप्रकारद ेखोगेज ैसाम हनैमके न ृत्यक ोद ेखतेह ो? श्रेष्ठगीत 6:9-13.

मेरे परमप्रिय, मैं वापस आया, विश्वास किया कि मेरे चरित्र का बगीचा निखरा है और जिस से तू मुझ में हर्षित हुआ है. चाँद मेरे पैरों के नीचे गवाह है और सूरज का प्रकाश मेरा पहनावा है; मेरे सिर पर बारह तारों का मुकुट ठहरा (रखा) हुआ है. दैत्य (पंखवाला अजगर) ने मुझे निगल जाना चाहा, फिर भी तुम्हारे कर्मचारियों और तुम्हारे सोटे (छड़ी) से मुझे अंधेरी घाटी की मृत्यु से दिलासा मिलती है. मैं तुम्हारे जेवनार की मेज पर अपने बैरियों (शत्रुओं) की उपस्थिति में बैठा और तुम्हारी "ध्वजा (झंडा) मेरे ऊपर तेरा प्रेम है" "निश्चित रूप से अच्छाई और दया मेरे जीवन भर के सभी दिनों में मेरा पीछा करेगी."

दु:ख (पीड़ा) की लपटों के माध्यम से, मेरे अन्दर तुम्हारे पिता के गहरे आवक का डर सामने आया था. मैं आश्चर्यचकित हुआ यदि वह मुझे स्वीकार करेगा, क्या वह प्रेम को आशीषित करेगा जो मैंने तुम्हारे लिए महसूस किया? मैं जानता था कि तू मुझे पिता के सबसे पवित्रतम स्थान में देखने का इच्छुक था, फिर भी मेरा डर (भय) मेरे पर उमड़ पड़ा और मुझे दूर ले गया.

जब मैंने तुम्हारे पिता के कदम न्याय आसन के समीप सुने, तो मेरा दिल मेरे में डूब गया. मुझे डर था कि वह हमें मेरे पापों के कारण अलग करेगा! फिर भी जंगल में दिलास के शब्दों की आवाज के द्वारा, मुझे पता चला कि तुम्हारा पिता बिलकुल तुम्हारी तरह है; उसकी ओर से अधिकार में मिली सारी वस्तुएं तुम्हारे लिए हैं.

अब न्याय की ओर अपने पिता के कदम निन्दा के कदम नहीं हैं, लेकिन कदम

उनके अपव्यय की ओर हैं, उसकी भुजाएँ मेरे लिए पूरी खुली हुई हैं, मेरे परमप्रिय! तुम्हारा पिता मुझे स्वीकार करता है, मेरे परमप्रिय! सच में वह हमारे प्रेम को एक दूसरे के लिए आशीष देगा; निश्चय वह मेरी तुम से मंगनी (सगाई) करेगा.

> मैं अपनी प्रेमी की हूँ. और उसकी लालसा मेरी ओर नित्य बनी रहती है. (11) हे मेरे प्रेमी, आ, हम खोतों में निकल जाएं और गांवों में रहें; (12) फिर सबेरे उठकर दाख की बारियों में चलें, और देखें कि दाखलता में कलियां लगी हैं कि नहीं, कि दाख के फूल खिलें हैं कि नहीं, और अनार फूले हैं या नहीं, वहां मैं तुझ को अपना प्रेम दिखाऊंगी. श्रेष्ठगीत 7:10-12.

***

खण्ड 5 – महापवित्र स्थान

20. अति प्राचीन के द्वारा मंगनी (सगाई)

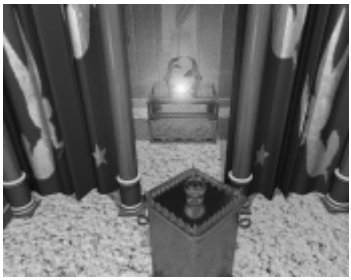

मेरे उद्धारकर्ता (मुक्तिदाता) के प्रेम में पूरी तरह से विश्राम करने की मेरी क्षमता न होकर केवल मेरे लिए उसकी प्रतिज्ञाओं पर, बल्कि अपने पिता की स्वीकृति और अनुमोदन पर भी निर्भर है. धर्मशास्त्रों का वर्षों मेरे द्वारा अध्ययन करने के माध्यम से, मैंने यह सीखा कि यह न्याय संगत है कि मुझे परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होना चाहिए और वास्तव में मेरे परमप्रिय के पिता से महापवित्रस्थान में मिलूंगा.

मेरे प्यारे पिता से मिलने की बैचेनी, अक्सर दूसरों से छिपी हुई थी और यहाँ तक कि मेरे स्वयं से भी, फिर भी अपने आपको अनेक तरीकों से प्रकट किया था. हर समय जब मैं पाप में गिरा रहा, मैंने पश्चाताप किया, लेकिन कभी कभार मैंने नकारे जाने की अवस्था में तैरना आरम्भ किया. मेरे में गहरे तक बैठा डर अधिक गति से मनोरंजन, विलासिता और आत्मदया के बीच में आगे की ओर चलाता रहा.

जैसे ही मैंने बाइबल का अध्ययन और मेरे उद्धारकर्ता की सराहना करना आरम्भ किया, महापवित्र का मार्ग आकार लेने लगा. और तब मुझे महसूस हुआ कि 1844

के बाद से मेरे परमप्रिय ने महापवित्र स्थान में मध्यस्थता और न्याय का विशेष कार्य आरम्भ किया था.

मैं इस कथन में आश्वस्त हुआ होगा कि यीशु ने पिता के लिए मुझे प्रस्तुत किया था. मैं यहाँ तक प्रमाण देख सका कि पिता ने मुझे प्रेम किया था. फिर भी मेरी उपलब्धि के माध्यम से सम्मान और स्वीकृति की आवश्यकता के बारे में बहकानेवाला बोया गया था, इस तथ्य की वास्तविकता के साथ कि सिंहासन पर होता है जो सभी को जीवन और श्वांस देता है.

जितना अधिक अगर वहाँ पर कोई भी मुसीबत की जड़ें प्रलोभक (शैतान) की मूर्ति के लिए मेरे मन में थी, तो मैं सारे प्राणियों के स्रोत और सारी व्यवस्था (नियमों) के झरने के आगे खड़ा होने के योग्य और विश्राम करने के लायक महसूस नहीं कर पाऊंगा. यह क्यों है कि मसीही संसार का बहुमत भावुकता से पिता से मिलना नहीं चाहता; वे केवल उनकी छवि की आशा करते हैं जिसको वे यीशु सोचते हैं.

केवल एक ही कारण है कि हम महापवित्र स्थान में जाने की इच्छा रखेंगे क्योंकि हम सच में हमारे मुक्तिदाता को प्रेम करते हैं. एस्तेर के समान हम कह सकते हैं :

> कि तू जाकर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ. और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति से उपवास करूंगी. और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरूद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी; और यदि नाश हो गई तो हो गई. एस्तेर 4:16.

हमारा प्रिय परमप्रिय हमें सामना करने के लिए जो कुछ भी सामना करना होगा उसे मजबूती से पकड़ने के लिए तैयार करता है. दूसरी आश्चर्यजनक बात हमारे महापवित्र स्थान की पहुँच की योग्यता के बारे में है कि केवल जब हम सच में यीशु से प्रेम करते हैं तो क्या हम सच में पिता के मन और उसके हमारे लिए प्रेम को

जानेंगे. समस्त प्रक्रिया मूर्ख (बेकार) साबित होती है.

जब एलिय्याह[13] मेरे लिए आया और मुझे त्रिएकत्व और पिता और पुत्र के मध्य स्पष्ट अंतर दिखाया, मैंने देखा कि जिस छवि को त्रिएकत्व में पिता पुकारा गया था वास्तव में मेरे मन के साथ पहुँच के बाहर था. वह वास्तव में यीशु का पिता नहीं था, और इस प्रकार उसने सचमुच में अपना पुत्र नहीं दिया. जब उसने वचन कहें ''यह मेरा एकलौता पुत्र है,'' मेरा भाग आनन्दित हुआ, लेकिन दूसरा अनकहा भाग महसूस किया था कि यह कोई गहरी वास्तविकता (सच्चाई) नहीं थी.

जैसे ही मैंने परमेश्वर के असली पुत्र को देखा, उसने मेरे लिए पिता की पहुँच का मार्ग खोला था; उसकी पिता तक पहुँच मेरी पहुँच की आधारशिला बना. पिता का पुत्र के लिए प्रेम मेरे लिए उसके प्रेम की आधारशिला बना. केवल इस वास्तविक (असली) पिता और पुत्र के सबन्ध में मैं जान सका कि पिता ने सच में मुझे प्रेम किया और स्वीकार किया था.

केवल उत्तराधिकार के सिद्धान्त के माध्यम से मैंने इन वचनों में दिलासा पायी :

> जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है : तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा. यूहन्ना 14:9.

जैसे मेरे परमप्रिय की सही समानता को मैंने अपने पिता के लिए देखा, मेरे मन ने प्रतिज्ञा (वादे) में साहस लिया.

> कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यार में सेंतमेंत दिया. इफिसियों 1:6.

[13] एलिय्याह के द्वारा मेरे पास आ रहा है, मुझे एलिय्याह के संदेश अर्थ पता लगता है कि जो पिता और पुत्र और त्रिएकत्व में बीच एक स्पष्ट अन्तर बनता है.

कई बार मैंने स्वयं को उन पर विश्वास करने को बताते हुए इन वचनों को पढ़ा था, और उन से चिपक गया था. फिर भी मैंने अपने आप को अक्सर महापवित्र स्थान के मार्ग से दूसरे मार्ग में खिसकते हुए पाया. यदि एलिय्याह ने मेरे गुप्त प्रेम को स्वयं के लिए, त्रिएकत्व की विकृति के माध्यम से प्रकट नहीं किया था, तो मैं मेरे परमप्रिय के पिता के पास जाने के लिए आत्मविश्वास महसूस नहीं कर पाऊंगा.

अनेक कलीसिया सदस्यों ने पहले से ही इस प्रक्रिया को त्याग (छोड़) दिया है. वे दावा करते हैं कि ''यीशु मेरा फैसला लिया'' या जो 1844 साधारणत: एक अर्थपूर्ण छोटे से समारोह को प्रायश्चित के फायदों को लागू करने के लिए और सृष्टि को प्रकट करने के लिए क्या परमेश्वर पहले से ही जानता था. इस सारे झूठे की सच्चाई यह है कि इस तरह के मानव मन सर्प के बीज का आत्मसमर्पण नहीं करेंगे जिन्होंने सत्य को अस्वीकार किया है कि पिता सभी का बड़ा स्रोत है.

इन धर्मविज्ञानिकों की युक्तियों ने किसी ने भी सच्चाई को नहीं हटाया है कि हमें दुल्हे के पिता की ओर से स्वीकृति के एक सच्चे अभिप्राय की आवश्यकता है. केवल पिता की वास्तविकता हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को पैदा करने के लिए आत्मा को महापवित्र स्थान के अनुभव को सहने के लिए पर्याप्त पकड़ हो सकती है.

> जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भोजा, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं. (10) प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा. 1 यूहन्ना 4:9–10.

ब्रह्माण्ड के महान न्यायाधीश के चेहरे में, किसी भी समानांन्तर वास्तविकता की धारणा में अचानक बदलाव करता रहा है क्योंकि परमेश्वर वास्तव में तीन–सहायक अनंत प्राणी हैं जो मूल सिद्धान्त की इस वास्तविकता को मार डालेगा कि परमेश्वर ने

अपना पुत्र दिया क्योंकि वह हम से प्रेम करता है. प्रतीकात्मक उपहार का अर्थ है एक प्रतीकात्मक स्वीकृति जिसे पूरी तरह से फैसले की जांच के अधीन खुलासा किया है.

आत्मा के लिए जिसने एकलौते पुत्र में आनन्द पाया, स्वर्ग में न्याय आसन की ओर बढ़ते हुए पिता के पैरों के आहट वास्तविक कदम हैं. स्वयं के प्रेमी के लिए, ये फिर भी त्रिएकत्व देवता के महान प्रेम के अन्य अलंकार हैं जो मानवता के आत्माओं पर हमें आशा का एक स्रोत प्रदान करने के लिए डाला गया है. त्रिएकत्व मन अक्सर महापवित्र अलंकार की ओर पिता के कदम बनाने के लिए आवश्यक होता है क्योंकि न्याय की ओर वास्तविक कदम सोचने-विचारने के लिए बहुत अधिक डरावने (भयानक) हैं.

उन लोगों के लिए जिन्होंने हमारे मुक्तिदाता की आँखों में लम्बे समय से ताका है, पिता के कदम पुत्र की सगाई (मंगनी) हेतु वधु के लिए अपना उत्सुकता को प्रकट करते हैं. न्याय प्रक्रिया प्रकट करती है कि कौन सच में उसके पुत्र को प्रेम करते हैं और इस तरह कौन हैं वे जो उसके साथ हमेशा के लिए जीना पक्का कर सकते हैं. केवल वे जो सच में उसके पुत्र के माध्यम पिता को जानते हैं, परमप्रधान के गुप्त स्थान को खोज सकते हैं.

हमें परमेश्वर के फैसले से डरने की आवश्यकता नहीं है. वह हमारे लिए अपनी प्रेममयी स्वीकारोक्ति को प्रकट करने के लिए तरसा (तड़पा) है. कुंजी पूरी तरह से आभार प्रकट करने में है जो वह और उसके पुत्र हैं, और इस स्वीकृति में हमारे पास अनंत जीवन है.

> और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने. यूहन्ना 17:3

क्या हम विश्वास और निर्भीकता (दृढ़ता) की जानकारी के साथ दया के सिंहासन

की पहुँच नहीं करेंगे जो हमारी आवश्यकताएं मिली होंगी और कि पिता वास्तव में हमारे प्रेम को अपने पुत्र के लिए अनुमोदन (मंजूर) करता है?

***

21. वाचा के संदूक के सामने

पिता के प्रेम की वास्तविकता मसीह के माध्यम से आत्मा को न्याय आसन तक पहुँचने को शक्ति प्रदान करती है. जैसे हम न्याय आसन तक पहुँच बनाते हैं, कानून (व्यवस्था) की उपस्थिति हमारी महान आवश्यकता को हमें महसूस करने का कारण होती है. हमारी महान आवश्यकता हमें शक्ति को पराजित करने के लिए कहने का कारण होती है; जीवन प्रार्थना द्वारा अधिक और बातचीत द्वारा कम ढाला (गढ़ा) जा सकता है. मध्यस्थता का कार्य पापियों के लिए केन्द्रीय अवस्था लेता है. हमारा विश्वास है कि हमारी याचनाएं मसीह में हमारे मध्यस्थ के रूप में हमारे विश्वास की दृढ़ता से सुनाई देती हैं.

यदि हम अफ्रीका के जंगलों में किसी एक खास देश के राजा से मिलने की यात्रा की योजना बना रहे हैं, तो क्या हम हमारे अगले दरवाजे के पड़ोसी को पूछने में सुरक्षित रहेंगे जिसने उस देश के बारे में स्वतंत्रता से दुभाषिए के रूप में कार्य करने के लिए एक पुस्तक को उधार ली है? प्रत्यक्षत:, हमारे पड़ोसी देशों के विदेशी राजा के शिष्टचार और अदालतों को समझने की योग्यताएं हमारे मन में किसी भी आत्मविश्वास की भावना को पैदा नहीं करती.

यदि हम इस दूर देश की यात्रा करते है और एक दुभाषिए के रूप में कार्य करने के लिए राजा के अधिकारियों में से किसी एक पर विश्वास करते हैं, तो क्या हम किसी प्रकार का अधिक भरोसा महसूस करेंगे? नहीं, क्योंकि यह व्यक्ति जो राजा के तरीके बहुत अच्छे से जानता है, हमारे देश के राति-रिवाज और हमारी आवश्यकताओं को नहीं जानता. हमारा आत्मविश्वास है कि यह दुभाषिया हमारे निवेदनों को जान सकता है बहुत कम होगा.

जब हम परमेश्वर के सिंहासन के पास आते हैं, तो हमें यह जानने की तत्काल आवश्यकता है कि हमारा बिचवई (मध्यस्थ) वास्तव में परमेश्वर के मार्ग और मनुष्य दोनों के तरीकों को जानता-समझता है. इब्रानियों के अध्याय एक और दो का संदेश विशेषकर यीशु को मध्यस्थ की भाँति प्रकट करने के लिए इस उद्देश्य से दिया गया है जो सच में मध्यस्थतता कर सके.

आइए हम सावधानीपूर्वक ध्यान दें.

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अंत में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, (2) जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है. (3) वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है : वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिम के दाहिने जा बैठा. (4) और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया. इब्रानियों 1:1-4.

इस उपरोक्त पाठ (पदों) में, क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि यीशु परमेश्वर के मस्तिष्क और मन को जानता है? जब हम महसूस करते हैं कि यीशु ही अपने पिता का अभिव्यक्त (स्पष्ट) छवि है और पिता से उसका उत्तराधिकार उसे स्वर्गदूतों की तुलना में इतना अधिक योग्य बना देता है, तो हम कह सकते है, ''परमेश्वर की

महिमा हो!'' हम आश्वस्त हो सकते हैं कि यीशु हमारे लिए पिता को प्रस्तुत करने और बोलने में समर्थ होगा कि वास्तव में उसके मस्तिष्क में क्या है.

फिर जब हम इब्रानियों का अध्याय दो को पलटते हैं तो हम पढ़ते हैं:

> इसलिए जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह अप भी उन के समान उनका भागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे. (15) और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले. (16) क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् इब्राहीम के वंश को संभालता है. (17) इस कारण चाहिए था कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे. (18) क्योंकि जब उस ने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है. इब्रानियों 2:14-18.

इन वचनों में हम सीखते हैं कि यीशु ने हमारे स्वभाव को बिलकुल स्वयं पर ले लिया था. वह हमारी भाँति सभी वस्तुओं में बना था. वह जानता है कि यह थका हुआ महसूस करना और अनेक नाराज लोगों द्वारा दबाए जाने की तरह है. वह जानता है यह क्या छोड़ दिए गए के समान महसूस करना पसंद है, वह हर बिन्दुओं (मुद्दों) पर बहकाया गया जैसे हम अभी भी पाप रहित हैं. जब हम समझते हैं कि यीशु वास्तव में मनुष्य का पुत्र है और सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है, तो हम पूर्ण आश्वस्त हो सकते हैं कि वह हमारी प्रार्थनाओं को पिता के पास पहुँचाएगा और बदले में पिता से हमें सामर्थ, दिलासा, और प्रोत्साहन (हौसला) देगा.

अधिकांश: प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाएं सिखाती हैं कि स्वर्ग में यीशु हमारे लिए से मध्यस्थता करता है. फिर भी जब तक कोई विश्वास नहीं है कि यीशु अपना अंतिम प्रायश्चित का कार्य करने के लिए महापवित्र स्थान में चला गया है, वहाँ आत्मा को दु:खी (पीड़ित) करने और सभी पापों से दूर करने की कोई आवश्यकता नहीं है.

यह धीरे-धीरे चलकर सुनहरे द्वार को पार करने की भाँति हो सकता है. यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु इस कार्य को कभी भी बिना रोके पाप के लिए लगातार मध्यस्थता करेगा, तो हम इस विचार से स्वयं को प्रसन्न कर सकते हैं कि हम अच्छा जीवन व्यतीत करने का प्रयास करते हैं, लेकिन हमें उत्साही होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि हम हमेशा क्षमा माँग सकते हैं, इसका अंत कभी नहीं होगा.

यद्यपि, सभी पापो को दूर करने की आवश्यकता तब होती है जब हम देखते हैं कि पाप के लिए मसीह की मध्यस्थता द्वितीय आगमन से पहले समाप्त हो जाएगी. महापवित्र स्थान की सेवकाई की आवश्यकता को इस तरीके से समझाया जा सकता है. इसकी तुलना नाइग्रा (प्रपात) झरने को एक तार के सहारे पार करने की तरह हो सकती है. एक बार जब हम यह समझते हैं कि पाप के लिए मध्यस्थता द्वितीय आगमन से समाप्त हो जाएगी, तो हम उस व्यक्ति के समान हैं जो स्वेच्छा से एक पहियागाड़ी में उतरे और तनी हुई रस्सी पर चार्ल्स ब्लोन्डिन ले जाने को राजी होकर उसे उठाकर नियाग्रा प्रपात के पार हो जाता है. जैसा कि इस कहानी में बताया गया है, कि तार ने झूलना आरम्भ किया क्योंकि वे रास्ता पार करने के लिए भाग थे. ब्लोन्डिन ने उस व्यक्ति को कहा कि वह एक पहियागाड़ी में खड़ा हो जाए. इसे अप्रत्यक्ष विश्वास की आवश्यकता थी, फिर भी व व्यक्ति खड़ा हो गया. थोड़ी देर के लिए वह एक पहियागाड़ी में बैठने के बाद, वह अपने दक्षता को पहली बार देखने के लिए ब्लोन्डिन के नजदीक था. ब्लोन्डिन ने सावधानीपूर्वक उस व्यक्ति को अपनी पीठ पर उठाया और बाकी सारे रास्ते उसे उठाए रहा था.

यदि आपको लगता है कि स्वर्ग को पथ को सुनहरे फाटक (द्वार) से चलकर पार करना आसान है, तो क्या आपको अपने प्यारे जीवन के लिए अपने मार्गदर्शक की पीठ पर चिपके रहने की आवश्यकता होगी? नहीं! आप उस से 30 फीट दूर चल सकते हैं और फिर भी कोई नुकसान नहीं पहुँचता. आपको अपने मुक्तिदाता के इतना निकट जाने की आवश्यकता नहीं होगी, इसलिए कि आप इस प्रकार अपने पापों से सावधान रहने की या पुत्र के माध्यम से पिता के बारे में अधिक जानने की आवश्यकता नहीं हागी. महापवित्र स्थान हमारे सम्मुख अनुभव का एक तार है

जिस पर हमारा मुक्तिदाता हमें उठा ले जाएगा यदि हमारी इच्छा करते हैं. महापवित्र स्थान का अनुभव स्वर्गीय कनान देश के माध्यम से किसी भी व्यक्ति को स्वयं प्रवेश की अनुमति नहीं देगा. महापवित्र स्थान का अनुभव हमारे लिए पूर्ण रूप से हमारे मध्यस्थ पर स्वयं को निर्भर रखने के आवश्यकता है, विश्वास करने के लिए उसे हमारे लिए मध्यस्थता और हमें सामर्थ देने के लिए पार होने की आवश्यकता है.

जैसाकि बाइबल कहती है:

> तब मैं न्याय करने को तुम्हारे निकट आऊंगा. मलाकी 3:5.

परमेश्वर सच्चे खोजियों की सहायता करने और उन लोगों के झूठे धंधों को खोजने के लिए न्याय में उनके निकट आएगा जिन्होंने उद्धार का मार्ग का तिरस्कार करते है. बाइबल हमें बताती है :

> तौभी हमारे निकट तो एक परमेश्वर है : अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुई, और हम भी उसी के द्वारा हैं. 1 कुरिन्थियों 8:6.

> क्योंकि परमेश्वर एक ही है : और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है. 1 तीमुथियुस 2:5.

हम देखते हैं कि वहाँ एक परमेश्वर, पिता, और परमेश्वर और मनुष्यों के मध्य एक मध्यस्थ है, मानव यीशु मसीह. यदि मैं त्रिएकत्व के सिद्धान्त को स्वीकारता हूँ, तो मैं विश्वास करने को मजबूर किया जाता हूँ कि वहाँ मेरे पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की तुलना में एक परमेश्वर है और मध्यस्थ यीशु मसीह सम्मिलित है. यह मानव यीशु को दोनों मध्यस्थ बना देता है और एक वह जिसके लिए मध्यस्थता हो रही है. क्या वास्तव में किसी व्यक्ति के लिए मध्यस्थता संभव हो सकती है, जब भी दलों में से किसी एक को भी मध्यस्थता में आवश्यकता हो? क्या यह स्थिति पक्षपात का

आरोप लगाने का विषय (मामला) नहीं होगी?

यदि यीशु परमेश्वर के समान ही है जैसे पिता है, तो क्यों पिता को पुत्र की तुलना में किसी अन्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है? तो कैसे यीशु सच में पिता का प्रतिनिधित्व कर सकता है यदि वह पिता से नहीं आया हो? मध्यस्थता केवल एक संकेत (चिन्ह/प्रतीकात्मक) हो सकती है क्योंकि पदनाम (उपाधि/पदवी) के अलावा वहां पिता और पुत्र में कोई अन्तर नहीं है.

एक सच्चे और प्रभावी मध्यस्थ को मध्यस्थता की आवश्यकता वाले दो दलों द्वारा स्पष्ट पहचान किए जाने वाले भेद की एक स्थिति की आवश्यक होती है. अपने पिता से उत्तराधिकार जिसे मसीह ने ग्रहण किया, उन दो मध्य अन्तर को स्पष्ट बनाता है. यह मसीह को स्वभाव से भी पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करने की अनुमति देता है. वह परमेश्वर की ओर से अलग है, फिर भी यह परमेश्वर के साथ है और इस प्रकार उत्तराधिकार के द्वारा सच्चा परमेश्वर है. जिस प्रकार परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं हमारी देह को अपने ऊपर उठाया, वह हमारे से अलग है, फिर भी उसके उत्तराधिकार के द्वारा हम में से एक है ! यह मसीह की विशिष्टता है जो उसके दोहरे उत्तराधिकार के माध्यम से परमेश्वर और मनुष्य की ओर से है जो उसे परमेश्वर और मनुष्य के बीच सच्चे मध्यस्थ के योग्य बनाता है.

एक बार हम अपने मुक्तिदाता के बारे में इन बातों को जानते हैं, तो हम उस पर अपना पूरा भार डाल सकते हैं और भरोसा कर सकते हैं कि वह हमें सहायता देगा जो हमें पतले तार को पार करने के लिए आवश्यक है. एक वास्तविक मध्यस्थ वास्तविकम ुक्तिके ि लएव ास्तविकम ध्यस्थताप दानक रताह ै.ि त्रएकत्वक । प्रतीकात्मक मध्यस्थ प्रतीकात्मक पिता के लिए प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व उपलब्ध कराता है जो प्रतीकात्मक शक्ति और प्रतीकात्मक उद्धार को उपलब्ध करवाता है जो मृत्यु के समान होता है.

यह एक और महत्वपूर्ण कारण है कि मैं त्रिएकत्व से ऊपर मेरे परमप्रिय से चुना है.

केवल पिता का एकलौता पुत्र ही सच्चे प्रदर्शन के द्वारा सच्ची मध्यस्थता प्रदान कर सकता है. मेरे प्रिय मध्यस्थ में मेरे आत्मविश्वास ने मेरे विश्वास को न्याय के दिन पिता के सम्मुख आने के लिए मजबूत करता है.

> यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा, और जब उसका विचार किया जाए तब वह उसे दोषी न ठहराएगा. भजन संहिता 37:33.

केवल मेरा परमप्रिय जिसे मैंने चुना है, मुझे शरणस्थान के माध्यम से सारे पथ पर चलने की अनुमति दी है क्योंकि वह पिता के पास पहुंचने का एकमात्र मार्ग है.

> यह कौन है जो अपने प्रेमी पर टेक लगाए हुए जंगल से चली आती है? सेब के पेड़ के नीचे मैं ने तुझे जगाया. वहां तेरी माता ने तुझे जन्म दिया वहां मेरी माता को पीड़ाएं उठीं. (6) मुझे नगीने के समान अपने हृदय पर लगाए रख, और ताबीज के समान अपनी बांह पर बांधे रख; क्योंकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है, और ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है. उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है वरन् परमेश्वर की ही ज्वाला है. (7) पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता, और न महानदों से डूब सकता है. यदि कोई अपने घर की सारी सम्पत्ति प्रेम से सन्ती दे दे तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी. श्रेष्ठगीत 8:5–7.

***

22. मेरे परमप्रिय का आनन्द

वहाँ और बहुत से विचार हैं जो मैं आपके साथ साझा कर सकता हूँ जैसे कि क्यों मैं मेरे परमप्रिय से आनन्दित हूँ लेकिन इस प्रकार की बातों को बताने के लिए अनेक संस्करणों में वहां पर्याप्त स्थान नहीं होगा जैसाकि यूहन्ना ने कहा :

> और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जाती वे जगत में भी न समातीं. यूहन्ना 21:25.

फिर भी वहाँ कुछ है जो मुझे आपके साथ साझा करने की आवश्यकता है जैसाकि क्यों मैंने अपने परमप्रिय को चुना है और क्यों वह सारे संसार की तुलना में प्रिय है.

आज बहुत से मसीही हैं जो निम्न विचारों की सदस्यता लेते हैं जब वे परमेश्वर के प्रेम के बारे में बात करते हैं.

> ''प्रेम कुछ है जो किसी से प्रेम करता है, और प्रेम के साथ प्रेम करता है.'' अगस्टिन. डी ट्रिनिटाइट 'ऑन दी ट्रिनिटी' बुक 8

प्रेम की इस धारणा से बसंत उछल पड़ना है जिसे त्रिएकत्व में मौजूद समझा जाता है, हमें निम्नलिखित से पता चलता है :

यदि परमेश्वर वास्तव में अपने पूरे मूलतत्व (सार) में 'प्रेम' का परमेश्वर है (यूहन्ना 3:16 और 1 यूहन्ना 4:8), तो हमें निम्नलिखित निहितार्थों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है. क्या वह एक अनन्त काल के अतीत से ही अस्तित्व में है, कर सकता है और जिसने हमें अपने प्रेम करनेवाले स्वरूप में बनाया है- यदि वह एक अकेले ही अस्तित्व में था? तो क्या सच में यह परमेश्वर का प्रेम कहा जा सकता है. क्या प्रेम विशेष रूप से दिव्य प्रेम नहीं है, यह केवल तभी संभव है अगर एक जिसने हमारे ब्रह्माण्ड को बनाया है वह मिश्रित प्राणी (बहुवचन) है जो सभी अनंतकाल के अतीत से अपनी दिव्य बहुलता के भीतर 'प्रेम' का सृजन कर रहा था?... [ब्रूस मेटज़गेर के उद्धरण से] ''एक परमेश्वर को माननेवाले (ऐकेश्वरवादी) इस कथन से सहमत होने का दावा करते हैं कि 'परमेश्वर प्रेम है'. लेकिन इसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं है जब तक कि परमेश्वर कम से कम दो व्यक्ति हों. प्रेम वह है जो एक व्यक्ति को दूसरे के लिए होता है. यदि परमेश्वर एक ही व्यक्ति था, तो ब्रह्माण्ड से पहले बनाया गया, वह प्रेम नहीं था. **यदि प्रेम परमेश्वर का सार है, तो उसके पास निश्चित ही शाश्वत प्रेम की वस्तु होनी चाहिए, इसके अलावा सच्चा प्रेम बराबर वालों के बीच में संभव है.** जैसे एक मनुष्य अपने प्रेम की ताकत को निम्न पशुओं को प्रेम करने के द्वारा संतुष्ट कर और समझ नहीं सकता है, **इसीलिए परमेश्वर भी अपने प्रेम की ताकत को मनुष्य और किसी भी जन्तु को प्रेम करने के द्वारा संतुष्ट कर और समझ नहीं सकता है. अनंत (असीम) होने के द्वारा, उसके प्रेम की एक अनंत वस्तु को सदा पास होना चाहिए,** कुछ *अंहकार को बदलने* या पारम्परिक मसीही धर्मशास्त्र की भाषा का उपयोग करने के लिए, एक सह-अनंत और सह-समान पुत्र होना चाहिए. 'दी ट्रीनिटी' बॉय विडन, मून एण्ड रीव, पृष्ठ 115, 116

पहला बिन्दु नोट करने के लिए संदर्भ 1 यूहन्ना 4:8 है जो हमें बताता है कि

''परमेश्वर प्रेम है.'' वे जो त्रिएकत्व का समर्थन करते हैं हमारे साथ विश्वास करेंगे कि यह संदर्भ 'परमेश्वर प्रेम है' समान (समकक्ष) तीन व्यक्तियों को दर्शाता है जो एक दूसरे से प्रेम करते हैं, फिर भी यदि हम इस पद को पढ़ते हैं तो इसके समवर्ती संदर्भ में हम कुछ अलग-अलग पाते हैं.

> 1 यूहन्ना 4:7-12 हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है : और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है. (8) जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि **परमेश्वर प्रेम है.** (9) **जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है,** कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं. (10) **प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा.** (11) हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए. (12) **परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा;** यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है.

जैसा मैंने इस अनुच्छेद को समझा, यूहन्ना परमेश्वर के प्रेम को अपने पुत्र को हमारे लिए मरने के लिए देने में परिभाषित करता है. इस प्रकार पद 8 के अन्त में वह इसे परमेश्वर को प्रेम की भाँति परिभाषित करता है और तब इस परिभाषा को अपने पुत्र को भेजने के लिए परमेश्वर के प्रगटीकरण में बढ़ता/फैलता है. क्या इस अनुच्छेद में उपयोग की निरन्तरता सच्चाई के लिए नहीं होगी कि पद 8 में उल्लेखित परमेश्वर पद 9-10 में वही समान परमेश्वर है? क्या यह सुझाव नहीं देता है कि पद 8 का परमेश्वर पिता है और क्योंकि उसका प्रेम उसके पुत्र के देने में प्रकट होता है?

दूसरी बात मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा वह है प्रेम के लिए यूनानी भाषा का शब्द 1 यूहन्ना 4:8 (*जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है.*) में *अगापे* है. मेरे अध्ययनों से मेरी समझ यह है कि *अगापे* वह एक प्रेम है जो इसे खोजने की तुलना में मूल्य का निवेश करता है. परमेश्वर द्वारा हमारे लिए

अपना पुत्र देना हमारे में मूल्य का निवेश करना है और यह वास्तव में *अगापे* है. फिर भी जब हम त्रिएकत्व में दर्शाए गए प्रेम को देखते हैं, तो हम देखते हैं कि इस परमेश्वर को स्वयं के समान एक व्यक्तित्व की पूर्ण शक्तियों (सामर्थ) की अभिव्यक्ति की आवश्यकता है. इस प्रकार का प्रेम मूल्य की माँग करता है और एक आवश्यकता की पूर्ति करनेवाला है. यह अगापे का विवरण नहीं है बल्कि किसी दूसरे प्रकार का प्रेम है.

> अगापे (प्रेमभाव) को अक्सर इरोस (कामदेव) के विपरीत माना जाता है, जो कि नया नियम में नहीं पाया जाता है, हालांकि यह यूनानी दर्शनशास्त्र में प्रमुख है. इरोस (कामदेव) को अशिष्ट कामुक/अश्लील प्रेम करने के लिए उल्लेख कर सकते हैं, लेकिन हैलेनिक (यूनानी) विचार के संदर्भ में यह आत्मिक प्रेम का रूप लेता है जो उच्चतम लाभ को प्राप्त करने की इच्छा करता है. **इरोस (कामदेव) आनन्द लेने की एक इच्छा है;** [आवश्यक और दूसरों के लिए इच्छा] अगापे (प्रेमभाव) बिना माँग के सेवा करने की इच्छा है... **इरोस (कामदेव) उसकी तरह आकर्षित होना है जिसके पास अधितम कीमत है;** [बराबरी का दर्जा और सहसमानता के लिए जरूरत है] अगापे कम से कम योग्य व्यक्ति के लिए बाहर चला जाता है. **इरोस कीमत खोजता है** (बराबर चाहता है) जबकि अगापे कीमत सृजित करता है. (बराबर करता है.) अगापे एक उपहार का प्रेम है. जबकि **इरोसप्ेमक ीअ ावश्यकताहै.इ रोसक मीम ेंस ेफ ूटताहै जिसको संतुष्ट किया जाना चाहिए.** अगापे दिव्य अनुग्रह की निकलती हुई बहुतायत है. ('परमेश्वर सर्वशक्तिमान' : सामर्थ, बुद्धि, पवित्रता और प्रेम है. डी. ब्लोएश्च, 2006, पृष्ठ 147)

जबकि यह बहुत से एडवेंटिस्टों (पुनरागनवादियों) के लिए सोचने के लिए आश्चर्य के रूप में आ सकता है जो कोई भी परमेश्वर के प्रेम के साथ ईरोस से जुड़ा हो, यह रोमन कैथोलिक कलीसिया में अच्छी तरह समझा जाता है.

> परमेश्वर सब प्राणी का निरपेक्ष और परम स्रोत है; लेकिन यह सृष्टि के बनने का सार्वभौमिक नियम है- लागोस (वचन) मौलिक कारण- एक ही समय वह सच्चे प्रेम के जुनून के साथ एक प्रेमी है. **इरोस बेहद सम्मानित किया गया है अभी तक वह इतना पवित्र है कि अगापे के साथ एक बनने के लिए उतना शुद्ध हो जाता है.** पोप बेनेडिक्ट नवम् एनसाइक्लिकल लेटर, 2005, ड्यूस कैरिटस एस्ट 'गॉड इज लव.'

यहाँ त्रिएकत्व और पिता और पुत्र के बीच में एक अहम् अन्तर है और मैं वास्तव में इस निर्णायक बिन्दु को रेखांकित करना चाहूँगा.

त्रिएकत्व समानता खोजता है, जबकि पिता समान बनाता है.

त्रिएकत्व की अकथनीय दु:खद वास्तविकता यह है कि यदि आदर्श प्रेम केवल उसी के लिए खोजा जा सकता है जो समान है, तो परमेश्वर के समान कोई भी आदर्श प्रेम का प्राप्त करनेवाला नहीं हो सकता. यदि हमारे परमेश्वर की अवधारणा/संकल्पना बराबर शक्ति के तीन व्यक्ति हैं जिनका एक दूसरे से प्रेम है, तो हम उनके आदर्श प्रेम से योग्य नहीं हो सकते हैं. परमेश्वर की इस धारणा के साथ, हमें हमारी आँखों से मार्ग को पता लगाने और देवताओं के समान बनने में अतिसंवेदनशील बन जाते हैं (उत्पत्ति 3:5 *वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे.*) ताकि परमेश्वर के परिपूर्ण प्रेम के योग्य हों. त्रिएकत्व ने मुझे उस मंच पर पहुंचाया जिसने मुझे प्रयास करने के लिए दबाव दिया और महामहिम के समान बनता हूँ जिस से मैं आदर्श प्रेम को जीत सकता हूँ.

मेरे परमप्रिय की सुखद वास्तविकता यह है कि पिता के द्वारा सारी बातों को उसके हाथों में सौंपा गया था.

> क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे. यूहन्ना 5:26.

यदि परमेश्वर ने अपने आप में जीवन प्राप्त करने के लिए अपना पुत्र दिया, तो क्या यह *अगापे* की अभिव्यक्ति नहीं है? परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र में मूल्य का निवेश किया है और उसे बराबर बना देता है. क्या यह 1 यूहन्ना 4:8 का संकेत नहीं है? क्या यह एलेन व्हाइट की ओर इशारा नहीं करता है?

> ''परमेश्वर मसीह का पिता है; मसीह परमेश्वर का पुत्र है. मसीह को एक उच्च स्थान दिया गया है. वह पिता के समान किया गया है. परमेश्वर की समस्त सभा परिषद् उसके बेटे के लिए खुली हैं.'' टेस्टामनीज, वॉल्यूम 8, पृष्ठ 268

चूंकि मेरे परमप्रिय को अपने पिता के द्वारा सब कुछ दिया गया था, जब मैं परमेश्वर के पुत्र को निहारता हूँ, मैं उस एक को देखता हूँ जिसने उस में हर वस्तु का निवेश किया है. मैं उस एक की तस्वीर को अधिक देर तक देख नहीं पाया जो समानता के साथ स्वीकृति पाता है, बल्कि इसकी तुलना में मैंने उस एक को पकड़ा जिसने बराबर बनाया था क्योंकि उसे ग्रहण किया गया था.

मैं जानता हूँ कि मेरे प्रभु यीशु मसीह ने उत्तराधिकार में वह सब पाया जो पिता के पास है और पूर्ण रूप से उत्तराधिकार के माध्यम से पूरी तरह से परमेश्वर है, और इस उत्तराधिकार में मैं एक सच्चे पिता के वचनों को सुनने के लायक रहा हूँ जो उसे पिता ने कहे थे. वचन (शब्द) पिता और पुत्र केवल उत्तराधिकार के माध्यम से अर्थ खोजते हैं जिसे अगापे स्वीकृति देता है और इरोस (कामदेव) मना (इनकार) करता है.

पिता के अपने एकलौते पुत्र को कहे गए इन अनमोल वचनों (शब्दों) में, मैं पुत्रत्व के आश्वासन को खोज पाया. परमेश्वर का अगापे प्रेम उसके पुत्र के माध्यम से बहता है और मेरे मन से कहता है.

> और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ. मत्ती 3:17.

और वचन जो मसीह को यरदन नदी पर कहा गया था, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ,' मानवता को आलिंगन करता है. परमेश्वर ने यीशु से हमारे प्रतिनिधि के रूप में बातचीत की थी. हमारे सभी पापों और कमजोरियों के साथ, हम बेकार समझ कर एक ओर किनारा नहीं करते हैं. 'उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यार में सेंतमेंत दिया.' (इफिसियों 1:6) अनुग्रह जो मसीह पर टिका है हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की प्रतिज्ञा है. यह हमें प्रार्थना की ताकत बताता है, कैसे मानव की आवाज परमेश्वर के कानों तक पहुँच सकती है, और हमारी याचनाएं स्वर्ग के आंगनों में स्वीकृति पाती हैं. पाप के द्वारा, पृथ्वी स्वर्ग से कट चुकी थी, और उसके संपर्क से दूर हो चुकी थी; लेकिन यीशु ने अनुग्रह के क्षेत्र के साथ इसे एक बार पुन: जोड़ा गया. उसके प्रेम ने मनुष्य को घेर लिया, और उच्चतम स्वर्ग को पहुँच गया था. प्रलोभन का विरोध करने के लिए सहायता के लिए प्रार्थना करते समय खुले हुए झरोखे (प्रवेश द्वार) से हमारे मुक्तिदाता के सिर पर गिरनेवाला प्रकाश हमारे ऊपर भी गिरेगा. **जो वाणी यीशु को कही गयी थी वह हर विश्वास करनेवाली आत्मा से कहती है, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ.** 'हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा देखेंगे जैसा वह है.' 1 यूहन्ना 3:2 डीए 113

यह मसीह का सम्पूर्ण अधिकार है जिस से पिता ने अपने पुत्र के लिए *अगापे* प्रकट किया है. यदि मसीह को उत्तराधिकार नहीं मिला होता तो हम कुछ नहीं जान सकते कि परमेश्वर अपने पुत्र के लिए *अगापे* है. यदि पुत्र सारी शक्ति अपने स्वयं के नियंत्रण में रखता और सरलता से अपने को देता तो उसे अपने पिता की ओर से पिता को दे दिया जाएगा, वह पुत्र *सहयोगी मित्र*[14] होगा. फिर भी पिता ने कहा कि वह पुत्र के लिए *अगापे* था. यह केवल मसीह के उत्तराधिकार के माध्यम से वास्तविकता बन सकता है. केवल सभी को अपने पुत्र को दे देने से, क्या सच में पिता उसके लिए *अगापे* हो सकता है, केवल तब ही हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि परमेश्वर का प्रेम पुत्र के किसी अंतर्निहित गुण पर आधारित नहीं हो सकता और यह ऐसा प्रेम है जो हमारे लिए नि:शुल्क (मुफ़्त) तय किया गया है.

1 यूहन्ना 4:8 के *अगापे* के माध्यम से मैं इन वचनों को पकड़े रख सकता हूँ क्योंकि *अगापे* ने मुझ में मूल्य का निवेश किया है और मुझे यह विश्वास करने की अनुमति देता है कि मैं मसीह के माध्यम से उसका पुत्र हूँ, जबकि इरोस (कामदेव) मेरी निन्दा करता है क्योंकि यह उस कीमत को खोजता है जो मेरे पास नहीं है. *अगापे* मुझ से पूर्ण आश्वासन दिलाता है जब मैंने पढ़ा :

> यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ. यूहन्ना 20:17.

यीशु का पिता मेरा पिता है और यीशु का परमेश्वर पिता मेरा परमेश्वर है और यह सब मैंने मसीह के माध्यम से कब्जे में लिया है. वह परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के पास आता है जो *अगापे* का महानतम प्रदर्शन है जिसे ब्रह्माण्ड सदा देख सकता है. यह

[14] 'फिलियोस': ''मित्रों की सहभागिता का प्रेम जिसका हम उनके साथ आनन्द उठाते हैं. यह पानी के उस नियम (सिद्धान्त) पर आधारित है जो उपने स्तर पर पाया जाता रहा है– हम ने लोगों को आकर्षित किया है हम प्रशंसा करते हैं, के समान और जनसमुदाय को साथ साझा करते हैं.''

क्यों है कि पिता ने पुत्र को त्याग (छोड़) दिया और उसे एक नाम दिया जो सब नामों में से ऊपर मसीह यीशु के लिए परमेश्वर के *अगापे* प्रेम उच्चतम प्रकाशन है.

वर्षों तक त्रिएकत्व ने मुझे सूक्ष्मता से खुशी को जानने से वंचित किया था, मैं सच में परमेश्वर द्वारा प्रेम किया जा सकता हूँ. अपने सदस्यों के सह-सम्मान (बराबरी), सह-अविनाशी (अनंत) स्थिति मेरे मन में बुरा झूठ स्पष्ट झलकाता, जिसकी परमेश्वर कीमत मांगता रहा और इच्छा करता रहा है जो बराबर हैं. अब आनन्द की प्रचुरता के साथ, मैं आपके लिए दावा कर सकता हूँ कि केवल एकमात्र पुत्र के बारे में मेरी जानकारी ने मुझे इस डरावने झूठ से स्वतंत्र करने को मजबूर किया है, और अब मैं अपने स्वर्गीय पिता को अपने आदर्श प्रेम के रूप में देख सकता हूँ और क्योंकि उसने मुझे स्वर्ग के सारे खजानों में निवेश किया है, जिसके लिए उसने अपने पुत्र को मेरे लिए मरने को दे दिया था. मुझे ''महापवित्र के समान,'' अधिक दूर तक देखने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए. उसके आदर्श *अगापे* प्रेम के उस क्षेत्र में संतुष्ट रहने की आवश्यकता है जिसके लिए मुझे बनाया (सृजा) गया था.

इस प्रकार मसीह में, मेरा आनन्द पूर्ण हो गया है. जैसा कि मैंने मेरे शक्तिशाली राजुकमार को उसके पिता के *अगापे* प्रेम में और उसे वस्त्र पहने देखता हूँ, मैं प्रसन्नता से दूर हूँ. मैंने मेरी आत्मा में विश्राम पाया और वास्तव में उसका जुआ सहज और उसका बोझ हल्का है ! (मत्ती 11:30)

***

उपसंहार

स्वर्ग में प्रेमी पिता, कैसे मैं आपकी महिमा, आपका आदर और कैसे करूण दया के लिए आपकी आराधना करता हूँ और आपके पुत्र को मेरे प्रियतम, याजक, और राजकुमार के रूप में प्रदान करने में प्रेम करता हूँ. मुझे मृत्यु से बचाने और प्रलोभक (शैतान) के खतरों और छल-कपट से छुड़ाने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ. आपने मुझे स्पष्ट दिखाया कि उसके वादे खाली थे और उसकी नींव खिसकनेवाली रेत थी.

आपके महापवित्र स्थान की ओर मेरे कदम बढ़ाने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ. अब मैं रहस्मयी दीवार की ओर ऊपर खिले फूलों की सुन्दरता और खजूर (देवदार) के वृक्षों 1 राजा 6:20 की ओर देखता हूँ. आपने मुझे स्वर्गीय रोटी के सार्थि खलायाअ ौरम ेरेम ार्गक ोत ेज(शुद्ध)प्र काशस ेर ोशर्न कया.अ ापने एलिय्याह को मुझे आराम देने के लिए भेजा, और आपने अग्निमय परीक्षाओं को मुझे शुद्ध करने की स्वीकृति दी फिर भी इन सब बातों के माध्यम से, आपने अपने पुत्र की आत्मा को मेरे आत्मा में, ''हे अब्बा, हे पिता'' रोते हुए भेजा.

प्यारे पिता, मैं आपके वचन (पवित्रशास्त्र) के आश्वासनों से चिपका रहता हूँ. इन बातों के विचारों से मेरी भावनाएं मुझे अभिभूत करती हैं. इस प्रकार आपके वचनों ने मुझे निश्चय सहारा दिया है. कौन सोच सकता है कि मेरे जैसा एक गरीब, कमजोर

और मूर्ख व्यक्ति मेरे प्रभु का पक्ष और उसके पुत्र का उपहार प्राप्त कर सकता है.

आपके सिंहासन ने धार्मिकता, न्याय और सत्य में राज्य किया है. फिर भी इन सब से ऊपर आपको दया, धैर्य और प्रेम के साथ मुकुट (ताज) पहनाया जाता है– अगापे प्रेम जो अपने स्वयं के लिए कीमत खोजने के बदले निवेश करने के योग्य बनाता है.

हे पिता, मुझे इस महापवित्र स्थान में अपने साथ रहने दें; मेरी सारी गन्दगी को दूर कर दे. आपके पुत्र का आत्मा हमेशा मेरे साथ बना रहे और मुझे आपकी आज्ञाएं सिखाएं. मैं आपके नियम (व्यवस्था) मेरे मन में लिखना चाहता हूँ और इसकी इच्छा दिन और रात मेरे ध्यान में बनी रहती है.

मैं विश्वास करता हूँ कि मेरा परमप्रिय अपने विशाल घर में मेरे लिए रहने के लिए एक स्थान (कक्ष) तैयार कर रहा है. मैं आँसू बहाता हूँ कि आप अपने घर में बहुत प्रेम से मेरा स्वागत करेंगे और मेरी वहां रहने की इच्छा है.

ये बातें मेरे मन से मैं आपको अपने परमप्रिय के नाम से भेंट (प्रस्तुत) करता हूँ, आपका केवल एकमात्र पुत्र. आमीन।।

***

मैं उसके कदमों को सुनता हूँ,
मेरी धड़कन पूर्वानुमान में तेज होती है. मैं उसकी
आवाज़ को कई जलों के समान सुनता हूँ. यह मेरी
आत्मा के लिए एक मनोहर मरहम के समान है. मेरा
परमप्रिय बुला रहा है; क्या यह मैं ही हो सकता हूँ जिस
के लिए वह बुला रहा है? ऐसी कीमती आशा कैसे मेरे
छाती में विकसित हो सकती है? कहां से यह विचार
उठा है? मुझे क्यों इस शक्तिशाली राजकुमार,
पिता के परमप्रिय पुत्र के ध्यान के
योग्य गिना जाना चाहिए?

पवित्रस्थान की प्रतिध्वनियाँ, श्रेष्ठगीत और
तीर्थयात्री की प्रगति के साथ, बाधा, विपत्ति और
चुनौती के माध्यम से खोजने, सब को हवाले करने
और पिता के पुत्र यीशु के साथ प्रेम में पड़ने के लिए
एक व्यक्ति की यात्रा का पता लगता है.

Maranatha Media
www.maranathamedia.com